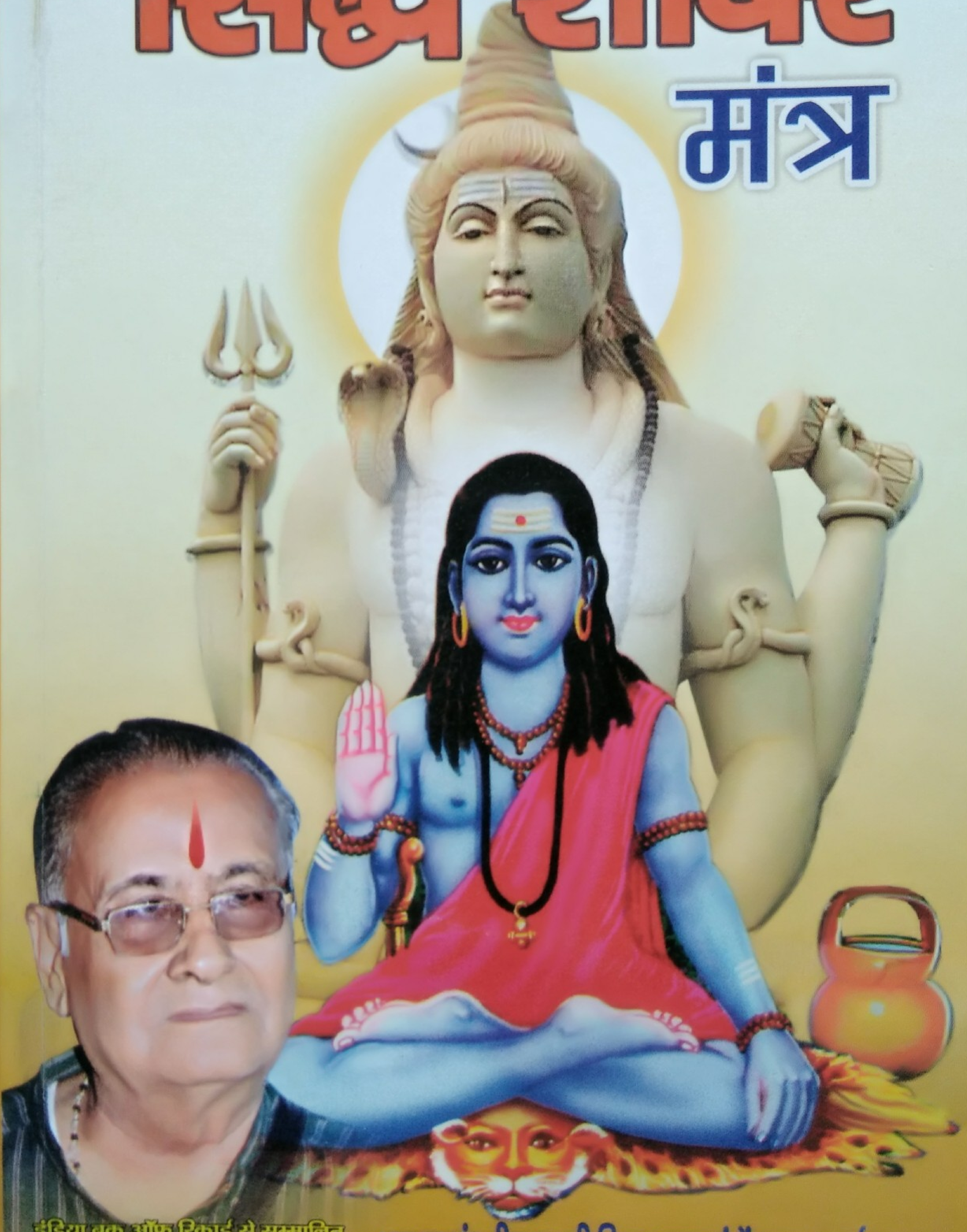
गुरू गोरखनाथ

विरचित

सिद्ध शाबर मंत्र



इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड से सम्मानित

तंत्र गुरु तांत्रिक बहल

अद्भुत एंव शीघ्र प्रभावी सिद्ध शाबर मंत्रों का एक दुर्लभ ग्रन्थ।

गुरु गोरखनाथ
विरचित
सिद्ध शाबर मन्त्र

अनुभूत एवम् शीघ्र प्रभावी सिद्ध शाबर मन्त्र द्वारा प्रत्येक जटिल से जटिल समस्या के समाधान का ज्ञान प्रदान करने वाली अत्यन्त उपयोगी पुस्तक।

प्रस्तुति :
तंत्र गुरु तांत्रिक बहल
(जिनका आज नाम ही काफी है)

विशेष सहयोग

जयेश भाई गायवाला (सूरत-गुजरात) मो.-09825574899
तांत्रिक सूरज (देवधर, झारखण्ड राज्य) मो.-09801629563
स्वामी जी मनोज (पटना, बिहार) मो.-09334332546

—प्रकाशक—
दुर्गा पॉकेट बुक्स
428/24 B, ईश्वरपुरी, नियर ओडियन सिनेमा,
जैन मंदिर वाली गली मेरठ।
मो. : 09412205160

आवरण, साज-सज्जा : तंत्र विद्यार्थी आशीश कुमार

पुस्तक : सिद्ध शाबर मन्त्र

प्रस्तुति : तंत्र गुरु तांत्रिक बहल

"तंत्र सबके लिए मिशन"™

डी-4 राधापुरी, कृष्णानगर

(जमुनापार) देहली-110051

Web site- : www.tantrasabkeliyemission.org

email : aacharybahl1941@gmail.com

प्रकाशक : **दुर्गा पॉकेट बुक्स**

428/24 B, ईश्वरपुरी, नियर ओडियन सिनेमा,

जैन मंदिर वाली गली मेरठ-250002

मो. : 09412205160

मूल्य : 110/- (एक सौ दस रुपये मात्र)

प्रिन्टर्स : पावन प्रिन्टर्स, मेरठ

ISBN No : 81-8428-004-1

दो शब्द

जब भारत में संस्कृत भाषा दुर्बल पड़ने लगी और क्षेत्रीय भाषायें विकसित होने लगीं, साथ ही अशिक्षा का बोलबाला हो गया, तो वैदिक एवं शाक्तमत का ज्ञान, जो संस्कृत एवं तमिल मूल भाषा में था, पुस्तकों में ही रह गया। यह ज्ञान जन साधारण से कट गया। फलस्वरूप प्राकृत, पाली, उड़िया, कन्नड़ आदि भाषायें अस्तित्व में आयीं और ग्रन्थ रचनायें उन्हीं में होने लगीं। नाथ एवं सिद्धों की भाषा अस्तित्व में आयी। इनमें देवी-देवताओं के नाम, ॐ, ओम, राम, हनुमान एवं बिस्मिल्लाह, अर्रहमान, निर्रहमान जैसे उर्दू के शब्द भी भाषा में सम्मिलित हो गये।

फल यह हुआ कि मंत्र का शास्त्रीय शब्द विन्यास लुप्त हो गया, परन्तु इनमें जो मूल बीज शब्द (शक्तिशब्द) थे, जैसे ॐ, पीर, हनुमान, बजरंग, राम, गुरु, बिस्मिल्लाह, अर्रहमान, नमः, नमो आदि बने रहे। सिद्धों एवं नाथों ने इन्हीं शब्दों से पिरोकर क्षेत्रीय भाषाओं में मंत्रों की रचना की। यदि ध्यान देंगे, तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि ओंकार, आकार, ङकार, ईकार जैसे कम्पनयुक्त दीर्घ स्वर का प्रयोग इनमें बहुतायत से किया गया है। इन मंत्रों का रूप एक-सा नहीं है, तथापि इनमें यह समानता प्रत्येक स्थान पर समान रूप से है। विशेष कम्पन की विद्युतीय शक्ति का प्रयोग इनमें प्रचुर हुआ है। साथ ही ध्यान एवं जप की एकाग्रता एवं हव्य सामग्रियों का उपयोग भी इनमें होता है। अतः इनमें शक्ति बनी रही, और ये मंत्र लोकप्रिय हुए। इनकी सिद्धि विधि भी सरल रखी गयी, जिसमें ध्यानशक्ति, जपशक्ति और वास्तुशक्ति (हव्य पदार्थ के गुणों) का मुख्य स्थान है, नियम एवं विधि-विधानों का नहीं। इन्हें ही शाबर मंत्र कहा जाता है, क्योंकि मन्त्र के इस स्वरूप के आविष्कारकर्त्ता गुरु गोरखानाथ के शिष्य शाबरनाथ थे। वैसे भी शाबर का अर्थ शाबरी अथवा ग्रामीण से है। इसलिए इन्हें

शाबर मंत्र कहा जाता है। ये भी शक्ति के मामले में शास्त्रीय मंत्रों से कम नहीं हैं, इनके शब्द बड़े ऊटपटांग हैं, किन्तु मंत्रों में शब्दों के अर्थ का नहीं, उसके कम्पन का महत्व होता है, इसलिए इनकी शक्ति भी वैज्ञानिक ही है।

शाबरी मंत्रों की सिद्धि में वास्तु के विद्युतीय एवं रासायनिक गुणों एवं वनस्पतियों के औषधीय गुणों के ज्ञान का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। इससे इन मंत्रों की शक्ति कई गुणा बढ़ जाती है। विस्मय की बात यह है कि अनपढ़ ग्रामीण ओझाओं एवं तांत्रिकों में गुरु परम्परा के कारण मानव शरीर की नसों, ऊर्जाचक्रों एवं ऊर्जा केन्द्रों का भी ज्ञान पाया जाता है। इनमें से अनेक विभिन्न जीवों के एवं उनके अंगों के भी विद्युतीय प्रभाव के ज्ञाता हैं। भले ही इन्हें नहीं मालूम कि इनके मूल में शक्ति या सिद्धान्त क्या है। हम यहां शाबर मंत्रों की सिद्धियों के बारे में बता रहे हैं। इनमें से अनेक मंत्रों को सिद्ध करने के पश्चात मैंने पाया है कि ये भी महामाया प्रकृति की शक्तियों के विभिन्न सूत्रों एवं रूपों को प्राप्त करने में सहायक हैं व इनकी अद्भुत शक्ति का प्रभाव अति शीघ्र महसूस होने लगता है। पाठकों से निवेदन है कि पुस्तक में वर्णित मन्त्रों का प्रयोग मानव कल्याण के उद्देश्य से ही करें। उच्चाटन, विद्वेषण एवम् मारण प्रयोग अन्य कोई विकल्प न मिलने पर अत्यन्त मजबूरी में ही करें।

आशा है यह पुस्तक समस्याग्रस्त प्रत्येक मनुष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित

मंत्र गुरु तांत्रिक बहल

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय (1)

शान्ति मंत्र प्रयोग

इस अध्याय में रक्षा-मंत्र, झाड़े के मंत्र तथा अन्य किये-कराये के दोष समाप्त करने के मंत्र विधिपूर्वक प्रस्तुत किये गए हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 1

(नजर उतारना)

मंत्र–

ॐ नमो नजर जहां पद पीर न जानो।
बोले छल सों अमृत बानी।
कहो नजर कहां ते आई।
यहां की ठौर तोहित कौन बताई।
कौन जात तेरी, कहां ठाम।
किसकी बेटी क्या तेरो नाम।
कहां से उड़ी, कहां की जाया।
अब ही बस कर ले तेरी माया।
तेरी बात सुनो चितलाय।
जैसे होय, सुनाऊं आय।
तेलन, तमोलन, चुहड़ी, चमारी।
कायथनी, खतरानी, कुम्हारी।
महतरानी, राजा की रानी।
जाको दोष ताहि सिर पड़े।

जाहर पीर नजर से रक्षा करे।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पढ़ते हुए रोगी को सिर से पैर की तरफ झाड़ा करें तो दृष्टि का दोष (नजर लगना) समाप्त हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 2

(चुड़ैल का झाड़ा)

मंत्र–

ॐ पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण।
चारि का स्वर्ग पाताल।
आंगन द्वार घर मंझार।
खाट बिछौना गड़ई सोवनार।
सागलन औ जेववार।
विरासो धावै फुलैल।
लवंग सोपारीजे मुंह तेल।
अबटन उबटन औ अवनहान परिहरण।
लहंगा सारी जान।
डोरा चोलिया चादर झीन।
मोट रुई ओढ़न झीन।
शंकर गौरा क्षेत्रपाला।
पहिले झारो बारम्बार।
काजल तिलक लिलाट।
आंखि नाक कान कपार।
मुंह चोटी कण्ठ अवकंश।
कांध बांह हाथ गोड़।
अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल।
नाभी पेटी के नीचे जोनि चरणि।
कत भेटी पेठी करि दाव।
जांघ पेडुरी धूठी पावतर ऊसर अंगुरा चाम।
रक्त मांस डांड गुदी धातु।

जो नहीं धड़ु अन्तरी कोठरी।
करेज पित्त ही पित्त। जिय प्राण सब वित्त।
बात अंकमने जागु बड़े।
नरसिंह की आनु कबहुं न लाग फांस।
पित्तर रांग कांच।
लोहरूप सोन साच पाट पट वशन।
रोग जोग कारण।
दीशन डीठि मूठि टोना।
थापक, नवनाथ चौरासी सिद्ध के सराय।
डाइन योगिन चुरइन भूत व्याधि।
परि अरि जेजुत मनै गौरख नैन।
साथ प्रगटरे विलाउ।
काली औ भैरव की हांक।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी एकान्त में रोगिणी को निर्वस्त्र करके नमक तथा पानी के साथ उपरोक्त मंत्र से झाड़ा करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 3

(डाकिनी–दोष)

मंत्र–

ॐ नमो नारसिंह पार्ईहार भस्मना।
योगिनी बन्ध।
डाकिनी बन्ध।
चौरासी दोष बन्ध।
अष्टोत्तर शत व्याधि बन्ध।
खेदी खेदी, भेदी भेदी, मारे मारे,
सोखे सोखे, ज्वल ज्वल,
प्रज्वल प्रज्वल।
नारसिंह वीर की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगिणी को सिर से पांव तक 108 बार झाड़ा करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 4

(बालक दोष नूिवारण)

मंत्र–

ॐ सतनाम आदेश गुरु का।
आदेश पवन पानी का।
नाद अनाहद दुन्दुभी बाजै।
जहां बैठी जोगमाया साजै।
चौंसठ योगिन बावन वीर।
बालक की हरै सब पीर।
आठों जात शीतल जानिये।
बन्ध-बन्ध, बारे जात मसान।
भूत बन्ध, प्रेत बन्ध, छल बन्ध।
छलिद्र बन्ध सबको मारकर भस्मन्त।
सतनाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र के द्वारा रोगी बालक को मोर पंख से झाड़ा करने पर बालक के सभी दोष समाप्त होकर बालक स्वस्थ हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 5

(बाल-रोग निवारण)

मंत्र–

पानी तीनि पानी।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी।
शिव शक्ति आदि कुमारी।
अब छार मार सब तोही।
की ताइ कहहुं कतहुं का होउ धैले आउ।
बालक के तोके मोके पुण्य जब होय।
महादेव के जटा परे पार्वती के आंचर।
जो यह बालक दुःख पावै।

एक कांसे की कटोरी में शुद्ध जल लेकर इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करके रोगी बालक को पिलाने से बालक स्वस्थ हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 6

(हवा आदि का दोष)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
काली चिड़ी चिग चिग करे।
धौला आवे वाते आवे हरे।
यती हनुमान हांक मारे।
मथवाई और बाई जाये भगाई।
हवा हरे।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र को पढ़ते हुए पृथ्वी पर रेखा खींचें। यह क्रिया 21 बार करें, फिर रोगी को घुटनों के बल बैठाकर इन रेखाओं के ऊपर उसके दोनों हाथ रखवा लें और पुनः 6 बार इस मंत्र से उसका झाड़ा करें। इस क्रिया को करते समय रोगी यदि वास्तव में मथवाई, बाई, हवा आदि से पीड़ित होगा तो अनजाने में ही आगे की तरफ खिसक पड़ेगा तथा वह स्वस्थ हो जाएगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 7

(हजरत पैगम्बर अली की चौकी)

मंत्र–

यही सार सार सार।
जिन्न देव पारी नव स्कंफार
एक खाये दूसरे को फार।
चहुं ओर अमिया पसार।
मलायक अस चार।
दुहाई दस्तखे जिब्राइल।
बाईं वे खौभि काइल।
दाईं दस्न दस्न।

हुसैन पीठ खदे खेई।
आमिल कलेजे राखे इज्राइल।
दुहाई मुहम्मद अलीलाह इलाह की।
कंगूर लिल्लाह की खाई।
हजरत पैगम्बर अली की चौकी।
नख्त मुहम्मद रसुलिल्लाह की दुहाई।

यह सर्वश्रेष्ठ इस्लामी रक्षा मंत्र है। जब भी कहीं कोई करतब प्रारम्भ करें तो इसे सात बार पढ़ करके ताली बजायें। श्मशान साधना या अन्य प्रयोग में अपने चारों तरफ रेखा भी खींची जा सकती है। रोगी को झाड़ने हेतु भी सात बार पढ़कर झाड़ा करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 8

(गृह-सुरक्षा)

मंत्र–

हाट चलते बाट बांधूं।
बाट चलते घाट बांधूं।
स्वर्ग में राजा इन्द्र बांधूं।
पाताल में वासुकी नाग बांधूं।
शिकाली बाणन तोड़के मछली मारूं।
टेंगरामाछी मारूं।
गाछ फूटे।
डाल कारूं फूल उठे तार।
खाई बन किये उजार।
आगे आये बांधूं।
पाछू आये बांधूं।
बाएं दाएं बांधूं।
यह बन्धन को बांधत ईश्वर महादेव।
बांधूं देव।
हम घर में सहदेव।
हम सोय रहेऊं अकेल।
लोहे के दो कड़ा।

मांस कर पत्थर होवे।
काटे कूट।
बड़े पिता की धर्म दुहाई।

दाहिने हाथ में मिट्टी लेकर सात बार यह मंत्र पढ़ें और अपने घर के चारों तरफ बिखरा दें। इसके प्रभाव से सभी प्रकार के खतरों से बचे रहेंगे।

सिद्ध शाबर मंत्र : 9

(मसान–दोष)

मंत्र–

सपेदा मसान, गुरु गोरख की आन।
मयदण्ड मसान, काल भैरों की आन।
सुकिया मसान, नोना चमारी की आन।
फुलिया मसान, गौरे भैरों की आन।
हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन।
पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन।
कमेदिया मसान, कालिका की आन।
कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन।
सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मदा पीर की आन।

यह दोष बालकों को बहुधा हो जाता है। इस मंत्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा करने से बालक का मसान–दोष समाप्त हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 10

(रक्षा–मंत्र)

मंत्र–

बाघ बिजुली सर्प चोर।
चारिउ बांधौ एक ठौर।
धरती माता।
आकाश पिता।
रक्ष रक्ष श्री परमेश्वरी कालिका की वाचा।
दुहाई महादेव की।

कहीं पर भी निवास करते समय या सोते समय इस मंत्र को पढ़ करके

तीन बार ताली बजाने से बाघ, बिजली, सांप तथा चोर से रक्षा हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 11

(रक्षा-मंत्र)

मंत्र-

ॐ नमः वज्र का कोठा।
जिसमें पिंड हमारा पेठा।
ईश्वर कुञ्जी।
ब्रह्म का ताला।
मेरे आठों याम का यती हनुमन्त रखवाला।

यह मंत्र अभी तक तांत्रिकों में पूर्ण सम्मान के साथ प्रयोग किया जा रहा है। इसे तीन बार पढ़ने से पूर्ण सुरक्षा होती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 12

(ऊपरी कष्ट का झाड़ा)

मंत्र-

ॐ नमो आदेश गुरु को।
मंत्र सांचा।
कण्ठ सांचा।
दुहाई हनुमान वीर की।
जो जावे लंका जारी।
लंका मझारी।
आन लक्ष्मण वीर की।
आन माने जाके तीर की।
दुहाई मेमना पीर की।
बादशाह जादा।
काम में रहे आमादा।
दुहाई कालिका माई की।
धौलागिरि वारी।
चढ़ै सिंह की सवारी।

जाके लंगूर है अगारी।
प्याला पिये रक्त का चंडिका भवानी।
वेदवाणी में बखानी।
भूत नाचे।
बेताल नाचे।
राखे अपने भक्त की लाली।
मैहर वाली।
काली कलकत्ते वाली।
हाथ कंचन की थाली।
लिए ठाड़ी।
भक्त बालिका दुष्टन प्रहारी।
सदा सन्तन हितकारी।
उतर भूतराज जल्दी कर।
नहीं तो खाय तोको कालिका माई।
उन्हीं की दुहाई।
भक्त की सहाई।
सारे संसार में माई।
तेरी ज्योति रहि जाग।
पकड़ के।
पछाड़ के।
मात, मत अबार कर।
तेरे हाथ में कृपाण।
भक्षण कर ले जल्दी आइके।
जाये नाहीं भूत।
पकड़ मात।
जाये भूत उतर उतर उतर।
न उतरे तो राम की दुहाई।
गुरु गोरखनाथ का फन्दा।
करेगा तोय अन्धा।
फुरो मंत्र हुं फट् स्वाहा।

यह मंत्र ओझाओं का परमप्रिय मंत्र है। इस मंत्र को पढ़ते हुए यदि ओपरे

से ग्रसित रोगी को नीम की पत्तों वाली टहनी से सात बार झाड़ा करें तो रोगी स्वस्थ हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 13

(टोने-टोटके का दोष)

मंत्र–

लोना सलोना।
योगिनी बांधे टोना।
आवहु सखि मिलि जादू कवनु।
कवनु देश कवनु फिर आदि।
अफूल फुलवाई।
ज्यों ज्यों आवै बास।
त्यों त्यों अमुक आवै हमारे पास।
कवरू देवी की शक्ति।
मेरी भक्ति।
फुरो मोहिनी ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पढ़ते हुए यदि झाड़ा करें यां सरसों मारें तो टोने-टोटके की व्याधि समाप्त हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 14

(बंदी मोचन)

मंत्र–

ॐ नमोस्तुऽते भगवते पार्श्वचन्द्राधरेन्द्र पद्मावती सहिताय मेऽभीष्ट सिद्धि दुष्ट-ग्रह भस्म भक्ष्यं स्वाहा। स्वामी प्रसादे कुरू कुरू स्वाहा। हिलहिलि मातंगनि स्वाहा। स्वामी प्रसादे कुरू कुरू स्वाहा।

इस मंत्र के प्रयोग से बन्धन योग समाप्त हो जाता है। जब कोई दुष्टग्रह पीछे पड़ जाए या कोई तांत्रिक बन्धन कर दे तो इस मंत्र का नवरात्र में प्रतिदिन 21 बार जप करें। इस मंत्र के प्रभाव से बन्धन योग समाप्त हो जाता है और सुख-शांति की प्राप्ति होती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 15

(रक्षा-मंत्र)

मंत्र-

राम कुण्डली, ब्रह्मचाक।
तेतीस कोटि देवा देवा अमुक की बेड़ियां।
अमुकेर अंकेर बाण काटम्।
शर काटम्।
संधान काटम्।
कुज्ञान काटम्।
कारवणे काटे।
राजा रामचन्द्रेर आज्ञा।
राजा रामचन्द्रे
ऐई झण्डी अमुकेर अंगे शीघ्र लागूगे।

इस मंत्र का उच्चारण करके अपने चारों तरफ रेखा खींचने से सदैव सुरक्षा होती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 16

(रक्षा-मंत्र)

मंत्र-

झाड़ि झाड़ि कापड़ पिन्दि।
वीर मुष्टे बांधि बाल।
बुले एलाम मशान भूम होते भैरव।
कटार हाते।
लोहार बाड़ी।
बाम हाते चामदड़ि।
आज्ञा दिल राजा चुडं हाते।
लोहार किला।
मुद्गर धिनि।
विगलि घुंडिकार आज्ञे।

राजा चुडंगर आज्ञे।
विगलि घुंडि।

इस मंत्र के प्रभाव से शरीर की समस्त प्रकार की व्याधियों से रक्षा होती है। ओझाओं के द्वारा मारण कर्म, हांडी, मूठ आदि से पूरी तरह सुरक्षा प्राप्त करने हेतु इस मंत्र का सात बार उच्चारण करके अपने चारों तरफ रेखा खींच लें। लाभ अवश्य मिलेगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 17

(समस्त दोष निवारण)

मंत्र–

ॐ आं क्रीं हुं मार हस्तं ह्रीं ह्रीं।
करे समस्त दोषान् हर हर।
विसर विसर।
हुं फट् स्वाहा।

यद्यपि यह शाबर मंत्र नहीं है परन्तु सिद्ध होने के कारण इसे यहां पर प्रस्तुत किया है।

कांसे की एक कटोरी में शुद्ध जल लेकर मंत्र से अभिमंत्रित करें और रोगी को पिलायें तथा कुछ जल मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी पर छिड़कें। यदि सम्भव हो सके तो काली नीम के हरे पत्ते, जलते हुए उपले पर डालकर रोगी को धूनि दें। इस प्रकार करने से रोगी समस्त दोष से मुक्ति पा जाएगा तथा स्वास्थ्य लाभ करेगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 18

(किए-कराए का दोष)

मंत्र–

ॐ रूनुं इ झुनुं।
अमृत मारातं देवी औरं पर तारा।
वीर मान्यो वीर तोन्यो।
हांक डांग महि मथन करण जोग।
भोग जोग घर छत्तीस नक्षत्र।
धर सर्प ब्रह्माण्डे पति ब्रह्मा के।

छाया धौ।
देवी धौ।
देवता धौ।
डायनी धौ।
गुरुराणी धौ।
भूत धौ।
प्रेत धौ।
धर धर मां चण्डी।
बीज करूवाल षंडी।
धौर्य वा गुटिनां य दाददली इमान को।
चलते केके जाते।
औ रे वीर भैरवी काम रूप काम चण्डी।
धर धर वाकी महा कारण्य करे।
गड़रूमारो कुकी धर वारण धरोवलीते।
ते कामरू कामचण्डी।
इह माया प्रसारणी।
कोटि कोटि आज्ञा देवी काम चण्डी।
बीजे चल षंडी।
चोदिगे ऐरलं देवी।
वसिला कि मांडि चण्डी।
चन्द्र चमकिले।
सूर्य टरिल।
ऐरल देवी हरा हरा परि।
सुखिला कीट रे जीवो।
परांद्रि वाहंते खप्पर।
दाहिने हाथ छुरि।
ऐरला देवी अवतारी।
डाइनि बांधौ।
चुरइलि बांधौ।
गुनी बांधूं।
मोरा बांधूं।

मसानी बांधूं।
गुनिया ना सुनि आवे गराठी।
आं बुलावे रांडे।
माला डांडे।
जीवता डांडे।
हंसै खेलै मारिवलन झारो वलिते ते।
ते कामरू काम चण्डी कोटिश आज्ञा।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी को सात बार झाड़ा करें तो किये-किराये के सभी दोषों से रोगी निदान पा जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 19

(टोना-टोटका आदि का दोष)

मंत्र-

सोम शनिश्चर भौम अगारी।
कहां चललि देई अंधारी।
चारि जटा वज्र के वार।
दीनहि बांधो सोम दुवार।
उत्तर बांधो कोइला दानव।
दक्षिण बांधो क्षेत्रपाल।
चारि विद्या बांधि के।
देउ विशेष भवर-भवर।
दिधिल भवर गए।
चलु उत्तरापथ योगिनी।
चलु पाताल से वासुकी।
चलु रामचन्द्र के पायक।
अञ्जनी के चीर लागे।
ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की दुहाई।
जो टोना रहे एदी पिंड।
मंत्र पढ़ि फूंकै, टोना कइल न रहे।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए यदि रोगी को सात फूंक मार दें तो टोना-टोटका आदि सभी दोष समाप्त हो जाते हैं और प्रभावित व्यक्ति सामान्य हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 20

(किए-कराए का दोष)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
अपर कोष।
बिगड़ कोष।
प्रह्लाद राख।
पाताल राख।
पांव दे बीज।
जंघा देवे कालिका।
मस्तक राखे महादेव।
जो कोई इस पिंड-प्राण को छेदे छेदे।
देव, देवता, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी।
कण्ठमाला, तिजारी।
एक पहर।
दोपहर।
सांझ सवेरे को।
किये-कराये को स्वाहा पड़े।
इसकी रक्षा नरसिंह जी करे।

इस मंत्र का जाप करते हुए रोगी को सात बार झाड़ा करें या फूंक मारें। सिर से पांव तक धागा नापकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए सात गांठ लगाकर और गूगल की धूनि देकर रोगी के कण्ठ में पहना दें। इस प्रकार उपाय करने से किये-किराये के सभी दोष समाप्त होकर उल्टे टोना करवाने वाले की हानि होती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 21

(किया-कराया)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
हरिवा में हरि दाहिने।

हरि हावो विस्तार।
आगे पीछे हरि खड़या।
राख्या सिरजन हार।
चमक बीजुरी।
गाजन्त नरसिंह।
फटत खंभ।
आवता काल राख।
चार चक्रलै नरसिंह जी के आगे मेल।
इतना सूं दूर जाये पड़े।
प्रातः काल कटक, छल छिद्र, खेचरा, भूचरा,
जलचरा, थलचरा, भूत दाना, नाटक,
चेटक मार मार, रंडी का तीन सौ साठ।
उलटंत नरसिंह।
पलटंत काया।
भगत हेतु श्रीनरसिंह आया।
कपिल के सउदर रूप श्रीनरसिंह बली।
सदा सहाय।
श्री गोबिन्द के चरणारविन्द नमस्ते।
मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र का जाप करते हुए रोगी को झाड़ा करने पर किये-कराये के सभी दोष समाप्त हो जाते हैं, रोगी रोग से निदान पाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 22

(चुड़ैल-दोष)

मंत्र-

ॐ नमो आदेश गुरु का।
कवलाछरी, बावन वीर।
कलू बैठनो जल के तीर।
तीन पान का बीड़ा खवाऊं।
जेठे बैठा जतलाऊं।

मालीमर तोर गत बहाऊं।
वाचा चूके तो कंकाली की दुहाई।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का जाप करते हुए झाड़ा करने से रोगी चुड़ैल सम्बन्धी समस्त दोषों से निदान पाता है और फिर से सामान्य जीवन जीने लगता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 23

(राक्षस–दोष)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
सुर गुरु बेची एक मण्डली आणि।
दोय मण्डली आणि।
तीन मण्डली आणि।
चार मण्डली आणि।
पांच मण्डली आणि।
छः मण्डली आणि।
सात मण्डली आणि।
हलती आणि।
चलती आणि।
नसंती आणि।
माजंती आणि।
सिहारी आणि।
उहारी आणि।
उग्र होकर चढती धाल वाय।
सुग्रीव वीर तेरी शक्ति।
मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यदि इस मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रभावित व्यक्ति का 21 बार झाड़ा करें तो वह राक्षस सम्बन्धी सभी दोषों से मुक्ति पा जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 24

(रोगादि–दोष)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु को।
गिरह बाज नटनी का जाया।
चलती बेर कबूतर खाया।
पीवै दारू, खायजु मांस।
रोग दोष को लावै फांस।
कहां कहां से लावेगा।
गुदा में सुं लावेगा।
नौ नाड़ी बहत्तर कोडा सुं लावेगा।
मार-मार, बन्दी कर-कर लावेगा।
न लावेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पांव धरेगा।
मेरा भाई, मेरा देखा-दिखलाया तो।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र का जाप करते हुए रोगी को झाड़ा करें तो रोगी के सभी रोग समाप्त हो जाते हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 25

(ओपरा हटे)

मंत्र–

उलटंतं देह।
पलटंतं काया।
उतर आव गुरु ने बुलाया।
शेष सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र का जाप करते हुए प्रभावित व्यक्ति 21 बार झाड़ा करें तो रोगी रोग से निदान पाकर स्वस्थ हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 26

(रक्षा हेतु)

मंत्र–

ॐ काली काली महाकाली।
इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली।
उड़ बैठी पीपल की डाली।
दोनों हाथ बजावै ताली।
जहां जाये वज्र की ताली।
वहां न आवे दुश्मन हाली।
दुहाई कामरू कामाक्षा नैना योगिनी की।
ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की।
दुहाई वीर मसान की।

इस मंत्र का सात बार जाप करके तीन बार ताली बजाने से सब प्रकार से रक्षा होती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 27

(क्रोध शांति)

मंत्र–

भूल भूल की तोला मूकी।
उठ मेल की पातास।
कूंडे लाग।
भेल की सभा जुडे।
भेल की चले आगे।
आगि जारि सलाम करि।
भेल की लागे।
तारे बेड़े।
आजरे पांजरे लाग।
चुके मुके लाग।
होक सिद्धि गुरुरपा दुहाई।
काटर कामिक्षा रमा।

हाडिर सिर आज्ञा।
चण्डिरपा।
अत्यधिक क्रोध करते हुए व्यक्ति पर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए तीन बार फूंक मार देने से उसका क्रोध शांत हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 28

(रक्षा मंत्र)

मंत्र–

ॐ नमो धरती माता, धरती पिता।
धरती धरै न धीर।
बाजै सिंगी।
बाजै तरतरी।
आया गोरखनाथ।
मीन का पूत।
मूंज का छड़ा।
लोहे का कड़ा।
हमारी पीठ पीछे यती हनुमान खड़ा।
शब्द सांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

यह रक्षा मंत्र भी है और झाड़े का मंत्र भी है। रक्षा करने के लिए इस मंत्र का उच्चारण करके अपनी देह को स्पर्श कर लें।

झाड़े के लिए इस मंत्र का जाप करते हुए, यदि रोगी को झाड़ा करें तो रोगी रोग से मुक्ति पा जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 29

(रक्षा–मंत्र)

मंत्र–

ॐ कालिका खड़ग खप्पर लिये ठाढी।
जोत तेरी है निराली।
पीती भर भर रक्त पियाली।
कर भक्तों की रखवाली।
न कर रक्षा तो महाबली भैरव की दुहाई।

यह रक्षा मंत्र अपने आप में अनेक रहस्य समेटे हुए है। यहां पर केवल रक्षा विधान ही बता रहे हैं।

इस मंत्र का जप करते हुए झाड़ा करने से सभी समस्याओं का हल हो जाता है।

इसका स्तोत्र निवेदन की भांति भी पाठ करते हैं।

इसका उच्चारण करके अपनी छाती पर फूंक मारने से सभी ओर से रक्षा होती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 30

(झाड़ा)

मंत्र–

ॐ नमः वीर।
वज्र हनुमन्त।
रामदूत चल बैग।
लोहे की गदा।
वज्र का सोटा।
पान का बीड़ा।
तेल सिन्दूर की पूजा।
हं हं हुंकार।
पवन कुमार काल।
चं चं चं चक्र भैरव।
कील चामुण्डा।
कील मसान।
कील राक्षस।
कील डाकिनी।
कील शाकिनी।
कील वारै जात बाघ।
कील नव कोट नाग।
कील छल छिद्र भेद।
कील भोंदरा भोधरा।
कील बावन वीर।

कील वारै जगत बाध।
कील डांड अचल चला पृथ्वी।
कील कल सिंह।
कील अपघात करे।
उलट ताके ऊपर परे।
खंक खंक खाय खाय स्वाहा।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी को झाड़ा करने से सभी दोषों का शमन हो जाता है। इस मंत्र का जाप करते हुए धागे को फूंककर बांधने से रोगी के दोष बन्ध भी कट जाते हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 31

(तांत्रिक माया भंग हेतु)

मंत्र–

ॐ श्री अस्थापन।
तामें करहु जामें राम भलाई।
गुणियां के जो गुण काटो।
तो इसमें नहीं मनाही।
दुहाई कामरू कामाक्षा नैना योगिनी की।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

यदि किसी के द्वारा फैलाए गए मायाजाल से दुःख पहुंच रहा हो तो इस मंत्र का जाप करते हुए रोगी को झाड़ा करने से रोगी रोग से निदान पा जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 32

(सभी ऊपरी दोष निवारण)

मंत्र–

ॐ नमो दीप मोहे।
दीप जागे।

पवन चाले।
पानी चाले।
शाकिनी चाले।
डाकिनी चाले।
भूत चाले।
प्रेत चाले।
नौ सौ निन्यानवे नदी चाले।
हनुमान वीर की दुहाई।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

सरसों के तेल का एक दीपक जला लें और रोगी से उसकी लौ पर देखने को कहें। इसके बाद उसके पीछे बैठकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए उस रोगी को सात बार फूंक मारें तो सभी ऊपरी उस दीपक की लौ में भस्म हो जाएंगे।

सिद्ध शाबर मंत्र : 33

(तांत्रिक बन्धन)

मंत्र–

अब पारिस संभ्रम कायवेध।
छेद का ज्ञान विज्ञान फूटै।
अमुकार गाय हंका चण्डी तो।
हमारे माशिल पाथर परे।
अमुकार गासे मारैस समारै मुमारै।
रोड़ांब उल्टा वेधे।
विरूपाक्ष विराली।
उल्टा वेधे पिण्डो मानायै।
मोरे पिण्डे करे।
घा उल्टा वेधे।
डांक्तुलखाः फोड़ फोड़।
दण्डी विरूपाक्षरे आज्ञा।

प्रातःकाल के समय प्रतिदिन इस मंत्र का जाप करते हुए तीन घूंट जल पीने से शरीर पर लगाया गया तांत्रिक बंधन टूट जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 34

(किया-कराया का ज्ञात होना)

मंत्र–

ॐ औंकार सतगुरु प्रसादि।
दुहाई खुदा दी।
दुहाई रसूल दी।
दुहाई पीर पैगम्बर की।
दुहाई हजरत अली की।
दुहाई अम्बर की।
दुहाई मुहम्मद हनी फकीर की।
दुहाई इक लख अस्सी हजार पैगम्बर दी।
दुहाई बावन वीर की।
दुहाई चौंसठ योगिनी,
चौरासी सिध नव नाथ की।
साहापरी।
बुबपरी।
तखतपरी।
हूरपरी।
नूरपरी।
लालपरी।
सफेदपरी।
साहा की दुहाई।
कौन कौन पकड़ चले।
आगे कलुवा वीर चले।
पीछे मुहम्मद वीर चले।
हनुमन्त वीर चले।
लंकु ढीपा वीर चले।
अंगद चले।

बावण वीर, चौंसठ योगिनी।
सिध नौ नाथ हजरत साह भी।
मके बान नदी नाव का पुरा।
देव भूत जिन खवीसा।
देवणी भूतणी जिननी खवीसनी।
चुड़ैल के लागे तीर।
अट्ठाइस ठाम नौ सुता जाऊं।
मढी मसानी रक्खे विरख वेग से।
पकडिली आऊं।
सिद्ध भैरों श्री बाला जती।
भैरों जती।
लक्ष्मण जती।
कुमार जती।
डोडा जती।
शुक्रजती।
हणवंत जती।
अंगद जती।
भैरों भवाल क्षेत्रपाल।
कालका माई का पूत।
चढ़ी भट्टी का जैतवार रौसा चले।
जैसे नदी नाव का तीर।
जिन, भूत को, देव को, पलीत को।
खवीस को, डाकिणि को, साकिणी को।
सिहारी को।
चार खूंट सैहं कारिलि आऊं।
बंद करे।
सिर चढ़ खेले।
मुख चढ़ बोले।
गुरु की शक्ति।
हमारी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वर महादेव तेरी वाचा फुरै।

इस मंत्र को उच्चारित करते हुए फूंक मारने पर रोगी पर सभी किया-कराया अपना सही-सही परिचय देता है।

यह मंत्र पंजाबी शब्दों से युक्त है और हमें हिन्दी भाषा में हस्तलिखित कागज से प्राप्त हुआ है। इस मंत्र का शुभारम्भ इसे पंजाबी में होना प्रमाणित करता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 35

(रक्षा-सूत्र)

मंत्र-

आय तुल कुरसी, विच फुरआन।
आगे पीछे तू रहमान।
लाइल्लाह का कोट, इल्ललाह की खाई।
मोहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।
नजर को बांधूं।
डाकन को बांधूं।
भूत को बांधूं।
योगिनी डेरा सब बला को बांधूं।
ब हक्क या बुद्दूह।
मदद मेरे पीर की।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

एक धागा लेकर उसके ऊपर सात गांठें लगाएं। प्रत्येक गांठ पर इस मंत्र का जाप करके फूंक मारें और उस धागे को रोगी को धारण करवाएं तो प्रत्येक बाधा का शमन हो जाएगा। इसे पहने रहने से सर्वत्र रक्षा होती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 36

(देह-रक्षा)

मंत्र-

ॐ नमो आदेश गुरु को।

वज्र वज्री वज्र किवाड़।
वज्री से बांधा दशोद्वारा।
जो घात घाले।
उलट वेद वाही को खात।
पहली चौकी गणपति की।
दूजी चौकी हनुमन्त की।
तीजी चौकी भैरव की।
चौथी चौकी, राम रक्षा करने को।
श्री नरसिंह देव जी आएं।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र को जपकर देह के ऊपर फूंक मारने से देह रक्षा होती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 37

(सर्प उत्कीलन)

मंत्र–

कीलन भाई कुकीलनी।
वाचा भया कुवाच।
जाहु सर्प घर आपने।
चुग फिर चारों मास।

थोड़ी-सी मिट्टी लेकर और उसे इस मंत्र से सात बार फूंककर कीले हुए सर्प पर मारने से सर्प पुनः चलने लगता है।

❑❑❑

द्वितीय अध्याय (2)

वशीकरण मंत्र प्रयोग

इस अध्याय में नर-नारी, राजा-प्रजा, शत्रु तथा देवताओं को खिलाने, पिलाने, लगाने, जलाने तथा गुनगुनाने के वशीकरण प्रयोग यथा विधि बताए गए हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 1

(वशीकरण लवण)

मंत्र–

ॐ भगवती भग भाग दायिनी।
दन्ती देव मम वश्यं कुरू कुरू स्वाहा।

इस मंत्र का प्रयोग स्त्री को वशीभूत करने हेतु किया जाता है। देवदन्ती के स्थान पर अभिलाषित स्त्री का नाम बोलें। इस मंत्र के द्वारा गुरुवार के दिन प्रसन्न मुद्रा से नमक लेकर और इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करें। फिर अभिमंत्रित स्त्री को खाने में या पीने में मिला करके ग्रहण करवा दें। ऐसा करने से वह स्त्री अवश्य ही आकर्षित हो मोहित हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 2

(वशीकरण एरण्ड)

मंत्र–

ॐ नमो काल भैरव काली रात।
काला आया आधी रात।
चलै कतार बांधूं।
तूं बावन वीर।
पर नारी सो राखै सीर।
छाती धरिके वाको लाओ।

सोती होय, जगा के लाओ।
बैठी होय, उठाके लाओ।
शब्द सांचा पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र को याद कर लें और जब-जब किसी रविवार के दिन होली या दीपावली पड़े तो लाल रंग के एरण्ड के वृक्ष को उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए एक झटके से उखाड़ लें। वृक्ष को केवल बाएं हाथ से ही उखाड़ें और फिर अपने निवास पर ले आएं। इसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। एक टुकड़े को उपरोक्त मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करके जिस स्त्री को छुवा देंगे, वही आपके पीछे लग जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 3

(मिट्टी वशीकरण)

मंत्र-

काला कलुवा चौंसठ वीर।
ताल भागी तोर।
जहां को भेजूं वहीं को जाये।
मांस-मज्जा को शब्द बन जाये।
अपना मारा, आप दिखावे।
चलत बाण मारूं।
उलट मूठ मारूं।
मार मार कलुवा।
तेरी आस चार।
चौमुखा दीया।
मार बादी की छाती।
इतना काम मेरा न करे तो तुझे माता का दूध पिया हराम।

जिस स्त्री को वशीभूत करना हो उसकी बाएं पांव के नीचे की मिट्टी लेकर और इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करके उस स्त्री के सिर पर डाल दें। वह स्त्री आकर्षित होकर आपके वशीभूत हो जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 4

(नारी वशीकरण)

मंत्र–

ऐं भग भुगे भगनि भागोदरि भगमाले
यौनि भगनिपतिनि सर्वभग संकरी-
भगरूपे नित्य क्लैं भगस्वरूपे सर्व
भगानि मे वशमानय वरदेरे ते सुरेते
भग लिंकने क्लीं न द्रवे-
क्लेदय द्रावय अमोधे भग विधे क्षुभ
क्षोभय सर्व सत्वामगेश्वरी ऐं ल्कं जं
ब्लूं ब्लूं भैं मौ ब्लूं, हे हे क्लिने सर्वाणि
भगानि तस्मै स्वाहा।

इस मंत्र का जाप करते हुए यदि किसी स्त्री से नजर मिलाई जाए तो वह वशीभूत हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 5

(वशीकरण लौंग)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
कामरू देश कामाख्या देवी।
जहां बसे इस्माईल जोगी।
इस्माईल जोगी ने दीन्हीं लौंग।
एक लौंग राती माती।
दूजी लौंग दिखावे राती।
तीजी लौंग रहे ठहराय।
चौथी लौंग मिलावे आय।
नहीं आवे तो कुआं बावड़ी घाट फिरे।
रंडी कुआं बावड़ी पे छिटक मरे।
ॐ नमो आदेश गुरु का।
मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र के द्वारा ग्रहण के समय ही लौंग शक्तिकृत होगी। अतः जब भी ग्रहण पड़े तो एक मिट्टी का चौमुखा दीया तथा चार लौंग लेकर शुद्ध तथा स्वच्छ स्थान पर बैठ जायें। दीपक में चमेली का तेल डालकर चार बत्ती डाल करके दीपक को इस भांति जलायें कि प्रत्येक दिशा की तरफ बत्ती रहे, अब आप लौंग लेकर प्रत्येक बत्ती की तरफ रखकर पूरे पर्वकाल में यह मंत्र पढ़ते रहें। पर्वकाल के पश्चात् उठ जायें और यह लौंग एक ताबीज में भर लें। अब आपने जब भी प्रयोग करना हो तब नये चार लौंग लेकर सात बार अभिमंत्रित करें और उस ताबीज को छुआ कर जिसे खिलायेंगे, वही वश में होगा। यह प्रयोग स्त्री वशीकरण में भी लाभ देगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 6

(वशीकरण पान)

मंत्र–

श्री राम नाम रबेली अकनकबीरी।
सुनिये नारी।
बात हमारी।
एक पान संग मंगाय।
एक पान सेज सौं लावै।
मक पान मुख बुलावै।
हमको छोड़ और को देखै तो तेरा।
कलेजा मुहम्मद वीर चक्खे।

इस मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करके तीन बार पान खिलाएं। पहला पान खाते ही वह स्त्री आपकी मित्र हो जाएगी। दूसरा पान खाने से वह आपके साथ यौन–सम्बन्ध स्थापित कर लेगी। तीसरा पान खाने से वह किसी और की कल्पना भी न करेगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 7

(वशीकरण पान)

मंत्र–

हरे पान हरियाले पान।

चिकनी सुपारी, श्वेत खैर।
दाहिने कर चूना, मोही लेय पान।
हाथ में दे हाथ रस ले।
ये पेट दे, पेट रस ले।
श्री नरसिंह वीर थारी शक्ति।
मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वर महादेव की वाचा।

इस मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करके पान का बीड़ा जिस भी स्त्री को खिला दिया जाएगा, वह स्त्री वशीभूत होकर प्राप्त हो जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 8

(सर्वजन वशीकरण हवन)

मंत्र–

ॐ गणपति वीर बसै मासान जो, मैं मंगी,
सो तुम आनुपांच, लड्डुवा सिर सिन्दूर,
त्रिभुवन मांगे चम्पे के फूल,
अष्ट कुलि नाग मोहु,
जो नारी बहुत्तरि कोठा मोहु,
इन्द्र की बेटी सभा मोहु,
आवती आवती स्त्री मोहु,
जाता जाता पुरुष मोहु,
डांवा अंग बसे नरसिंह जीवने क्षेत्रपालायें।
आवै मार मर करन्ता।
सो जाई हमारे पाउ परन्ता।
गुरु की शक्ति।
हमारी भक्ति।
चलो मंत्र आदेश गुरु को।

वन में जाकर हवन के लिए समिधा एकत्र करें और बाजार से घृत, खांड, गुग्गुल खरीदकर एकान्त स्थान में आकर हवन करें। एकत्र की गई वन की समिधा में खरीदी गई सामग्री से इस मंत्र के द्वारा 351 आहुतियां दें। इस हवन के प्रभाव से सभी जन वशीभूत होकर वैर भाव का त्याग कर देते हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 9

(वशीकरण तिलक)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु को।
राजा मोहुं,
प्रजा मोहुं,
मोहुं ब्राह्मण बनियां,
हनुमन्त रूप में जगत मोहुं,
तो रामचन्द्र परमाणियां,
गुरु की शक्ति,
मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

शनिवार के दिन सिन्दूरी हनुमान जी की प्रतिमा का पूजन करें और मूर्ति को सिन्दूर का चोला चढ़ाएं। इसके बाद एक माला का जाप करें। यह जाप 21 दिन तक करें। जब आवश्यकता हो, यह मंत्र जपते हुए किसी चौराहे से मिट्टी उठा लें और लगाकर अभिलाषित व्यक्ति के समक्ष जाएं तो वह अवश्य आज्ञा पालन करने लगेगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 10

(वशीकरण पुष्प)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु को,
कामरू देश कामाक्षा देवी,
तहां ठै ठै इस्माईल जोगी,
जोगी के आंगन फूल क्यारी,
फूल चुन-चुन लावे लोना चमारी,
फूल पर बीर नरसिंह बसे,
जो नहीं फूल का विष,
कबहुं न छोड़े मेरी आस।
मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र के द्वारा किसी पुष्प को अभिमंत्रित करके जिस कामनी की देह पर मारा जायेगा, वही मोहित हो जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 11

(स्त्री आकर्षण जप)

मंत्र–

ऐं सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं कर–
पिशाच अमुकीं काम ग्राह्य, स्वप्ने मम
रूपे नखै विदारय विदारय, द्रावय,
द्रावय रद महेन बन्धय बन्धन श्री फट्।

रात्रि के मध्य काल में निर्वस्त्र होकर उत्तर दिशा की तरफ मुख करके इस मंत्र का पाठ करें। पाठ करते समय अमुकी के स्थान पर अभिलाषित स्त्री का नाम लें। (इस जपकाल में पूर्ण कामुक होकर जप करें।) इस क्रिया के प्रभाव से शीघ्र ही चहेती स्त्री की प्राप्ति हो जाती है।

इस कार्य को आपने 15 दिन तक प्रातः सूर्योदय से पूर्व में करना है। एक बार में 108 बार जाप करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 12

(इलायची द्वारा मोहन)

मंत्र–

ॐ नमो काला कलुवा, काली रात।
निश की पुतली, माझी रात।
काला कलुवा, घाट बाट।
सोती को जगाय लाओ।
बैठी को उठाय लाओ।
खड़ी को चलाय लाओ।
मोहिनी योगिनी चल।
राज की ठाऊं अमुकी के तन में चटपटी लगाओ।
जीया ले तोड़।
जो कोई इलायची हमारी खावे।
कभी न छोड़े हमारा साथ।

घर को तजे बाहर को तजे।
हमें तज और कने जाई।
तो छाती फाट तुरन्त मर जाई।
सत्य नाम आदेश गुरु का।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र से इलायची को सात बार अभिमंत्रित करके जिस कामिनी को खिलायेंगे, उसी को इच्छानुसार पायेंगे।

सिद्ध शाबर मंत्र : 13

(वशीकरण लौंग)

मंत्र–

ॐ जल की योगिनी, पातैरल का नाम।
जिसपे भेजूं, तिसपे लाग।
सोते सुख न बैठे सुख।
फिर-फिर देखे हमरा मुख।
मेरी बांधी जो छूटे।
तो बाबा नाहर सिंह की जटा छूटे।

चार लौंग लेकर किसी पत्ते में लपेटकर ऐसे मुख में रखें जैसे कि तम्बाकू खाने वाले तम्बाकू खाते हैं। इसके बाद जल में सिर समेत डुबकी लगाएं और एक ही डुबकी में इस मंत्र को सात बार पढ़ लें। फिर बाहर निकलकर लौंग सहेज कर रख लें। इसे धूप दिखाकर जिसे खिलाओ, उसी से मनचाहा काम पाओ।

सिद्ध शाबर मंत्र : 14

(मोहन पुतली)

मंत्र–

बांधूं इन्द्र को, बांधूं तारा।
बांधूं बांधूं लोहे का आरा।
उठे इन्द्र न बोले बाबा।
सूख साख धूनि हो जाए।

तन ऊपर फेंकी, कड़े होय सूत।
मैं तो बंधन बांध्यो, सास ससुर जाया पूत।
मन बांधूं, मंत्र बांधूं विद्या के साथ।
चार खूंट फिर आये फलानी फलाने के साथ।

यदि कामिनी को मोहित करना हो तो शनिवार के दिन उसके बाएं पांव के नीचे की मिट्टी और यदि पुरुष को आकर्षित करना हो तो शनिवार के दिन ही उसके दाहिने पांव के नीचे की मिट्टी लेकर एक प्रतिमा बनायें। जिस लिंग (स्त्री अथवा पुरुष) का आकर्षण करना हो उसी की प्रतिमा बना करके अर्द्धरात्रि को एकान्त में वस्त्रहीन होकर उस प्रतिमा की धूप-दीप से पूजा करें और हाथ में एक कच्चा सूत लेकर इस मंत्र का जाप करते रहें। लगभग घंटे भर बाद इस सूत से उस प्रतिमा को लपेटकर गुप्त कर लें और प्रभाव देखें।

(1. स्त्री मोहन में फलानी फलाने के साथ। पुरुष मोहन में फलाना फलानी के साथ कहें।)

सिद्ध शाबर मंत्र : 15

(मोहन तेल)

मंत्र–

ॐ नमो मोहिनी रानी।
सिंहासन बैठी मोह रही दरबार।
मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति।
दुहाई गौरा पार्वती की।
बजरंग बली की आन।
नहीं तो लोना चमारी की आन लगे।

चमेली के तेल पर अंगुली लगा करके इस मंत्र को सात बार जपें और फिर माथे पर इसी तेल की अंगुली लगा लें तो जो देखे सो मोहित हो।

सिद्ध शाबर मंत्र : 16

(मोहन तेल)

मंत्र–

ॐ नमो मन मोहिनी।

मोहिनी चला।
गैर के मस्तक धरा।
तेल का दीपक जला।
जल मोहुं।
थल मोहुं।
मोहां सारा जगत।
मोहिनी रानी जा शैया पै ला।
न लाये तो गौरा पार्वती की दुहाई।
लोना चमारिन की दुहाई।
नहीं तो वीर हनुमान की आन।

इस मंत्र से अभिमंत्रित कर चमेली का तेल जिस कामिनी पर छिड़क दिया जाएगा वही स्त्री वशीभूत हो जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 17

(वशीकरण काजल)

मंत्र–

नमः पद्मनी।
अञ्जनी मेरा नाम।
इस नगरी में बैठके मोहुं सगरा गाम।
राज करन्ता राजा मोहुं।
फर्श पे बैठा बनिया मोहुं।
मोहुं पनघट की पनिहार।
इस नगर की छत्तीस मोहूं पवन बयार।
जो कोई मार मार करन्ता आवे।
ताही नरसिंह वीर बायां पग के अंगूठा।
तले धर गेर आवे।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र का प्रयोग करते हुए (जपते हुए) अपामार्ग (इसे चिरचिटा, औंगा और लटजीरा भी कहते हैं) की टहनी तोड़ कर उस पर रूई लपेट कर दीये में जलाएं। इसका काजल एकत्र कर लें। जब तक काजल बनता रहे, मंत्र

का जाप करते रहें। जब भी आवश्यकता हो सात बार इस मंत्र का जाप करके इस काजल को नेत्रों में आंजें। इस प्रयोग से पूरा का पूरा समुदाय ही वशीभूत हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 18

(मोहन लौंग)

मंत्र–

ॐ नमो आकाश की योगिनी, पाताल नाग।
उठि हनुमन्त जी फलानी[1] को लाग।
परै न निद्रा।
बैठे न सुख।
जो वो देखे न मेरो मुख।
तब तक नहिं परै हिये में सुख।
लाउ जो वाकू पियो।
मोहि दीखै ठण्डी हो जाए।
आवत न काहू दिखाए।
आउ आउ।
मेरे आगे लाउ।
न लावै तो गुरु गोरखनाथ की आन।

एक लौंग मुख में रखकर आंधी के मध्य खड़े होकर इस मंत्र को एक ही सांस में कम-से-कम सात बार जपें और फिर हाथ फैलाकर आंधी की मिट्टी हथेली पर रोक लें। इसी मिट्टी में लौंग पीस करके इस मंत्र का पुनः 7 बार जाप करके चहेती स्त्री के ऊपर डाल दें तो वह आपसे अलग न होगी।

(1. फलानी के स्थान पर इच्छित स्त्री का नाम लें।)

सिद्ध शाबर मंत्र : 19

(वशीकरण घी)

मंत्र–

ओनो ओनो साओ।
ईमोर माम तोर पो मोर।

कोले ओ इरयम।
यदि कोणेर माया धरो।
ओ सिद्ध।
सिद्धश्वेरी माथा खावो।

गाय का शुद्ध घी लेकर इस मंत्र से सात बार शक्तिकृत करके जिसे खिलाओगे, उसे ही अपना पाओगे।

सिद्ध शाबर मंत्र : 20

(मोहन गुड़)

मंत्र–

ॐ नमो गुड़।
गुड़ रे तूं गुड़।
गुड़ तामड़ा मसान।
केलि करन्ता जा।
उसका देग उमा।
सब हर्षे हमारी आस।
खसम को देखे।
जलै बलै।
हमको देवे सकिरूचलै।
चालि चालि रे कालिका के पूत।
जोगी जंगम और अवधूत।
सोती होय, जगाय लाव।
न लावै तो माता कालिका की,
शय्या पर पांव धरै।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु का।

शनिवार के दिन भैरों की पूजा करके इस मंत्र से 21 बार गुड़ को अभिमंत्रित करके जिसे खिलाओ, उसे ही अपनी सेज पर पाओ। इस मंत्र का लाभ केवल विवाहिता स्त्री से ही प्राप्त होगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 21

(मोहन सुपाड़ी)

मंत्र–

ॐ नमो उर्वशी सुपारी।
काम निगारी।
राजा परजा खरी पियारी।
मंत्र पढ़ि लगाऊं तोहि।
हिय कलेजा लावै तोहि।
जीवता चाहे पगतली।
मूवा संग मसान।
सो वश्य न होय तो यती हनुमन्त की आन।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र से सुपाड़ी को शक्तिकृत करके जिसे चाहे खिलाओ और जीवन भर के लिए अपना दास बनाओ। यह प्रयोग सूर्य ग्रहण में अधिक लाभकारी होता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 22

(वशीकरण तिलक)

मंत्र–

हाथ बसे हनुमन्त, भैरों बसे लिलार।
जो हनुमन्त का टीका करे मोहे सब संसार।
जो आवै तार तार करन्ता।
सो दीखै पांव लगन्ता।
हनुमन्त वीर पुजता रहे।
मुहम्मदा वीर छाती तो दे।
जगनियां वीर सिर गोड़े।
उगनियां वीर मर समस्त करे।
नरसिंह वीर प्रकट गाजै।

भैरों वीर आन फिरती रहे।
जो हमारे ऊपर घाव घालै।
पलट हनुमन्त वीर उसी को मारै।
जल बांधूं।
थल बांधूं।
कुटुम्ब और काया चेत रहे प्राणी।
हनुमन्त वीर माया ताई तरफ सवाई।
तपे लोहा कच पड़े धाई।
लाल चक्र चर्का।
आसमान छाया हांक ललकार।
हनुमन्त वीर अक पानी हो जाये।
राजा महाराजाधिराज।
साहब के पूत।
धर्म के नाती तुम्हारा ही आसरा है।

प्रातःकाल दाहिनी कनिष्ठा के ऊपर इस मंत्र को फूंकें और फिर बांयी हथेली पर इसी कनिष्ठा से तीन कुण्डल बनायें। इसके बाद इन्हीं कुण्डलों के मध्य से अपने माथे पर तिलक लगाएं तो वशीकरण हो तथा सभी तरफ से रक्षा प्राप्त हो।

सिद्ध शाबर मंत्र : 23

(चिता की राख द्वारा मोहन)

मंत्र–

ॐ नमो धूलि धूलि।
विकट चांदनी पर मारूं धूलि।
धूलि लगे, बने दीवानी।
घर तजे।
बाहर तजे।
ठाड़ा तजे भर्तार दीवानी।
एक सठी बलवान।
तू नाहरसिंह वीर अमुक को उठाय लाव।
न लाए तो हनुमान वीर की दुहाई।

मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

शनिवार के दिन श्मशान में जाकर किसी स्त्री की चिता की राख ले आएं और इस मंत्र से उसे फूंक कर जिसके माथे से लगाएंगे या जिसके सर पर डालेंगे वही प्राप्त होगी।

❑❑❑

तृतीय अध्याय (3)

सिद्धि मंत्र प्रयोग

इस अध्याय में देवी, देवता, पीर, वीर, जिन्न, भूत, परी आदि को सिद्ध करने के मंत्र तथा विधि दे रहे हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 1

(मुट्ठी पीर)

मंत्र–

बिस्मिल्लाह अर्रहमान निर्ररहीम।
साह चक्र की बावड़ी।
गले मोतियन का हार।
लंका सौ कोट समुद्र सी खाई।
जहां फिरे मोहम्मदा वीर की दुहाई।
कौन वीर आगे चले।
सुलेमान वीर चले।
दुर्शनी वीर चले।
नादिरशाह वीर चले।
मुट्ठी पीर चले।
नहीं चले तो हजरत सुलेमान की दुहाई।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र को गुरुवार के दिन से रात्रि के समय बबूल के वृक्ष के नीचे पश्चिमाभिमुख बैठकर इस भांति जपें कि 30 दिन में 100000 जप पूर्ण हो जाएं। जप के काल में या जप की पूर्णता पर मुट्ठी पीर हाजिर होंगे, उन्हें प्रसन्न कर लें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 2

(हनुमान)

मंत्र–

ॐ हनुमान पहलवान।
वर्ष बारहा का जवान।
हाथ में लड्डू मुख में पान।
आओ आओ बाबा हनुमान।
न आओ तो दुहाई महादेव गौरा पार्वती की।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र का अनुष्ठान मंगलवार या शनिवार से प्रारम्भ करें। हनुमानजी को सिन्दूर का चोला, जनेऊ, खड़ाऊं, लंगोट, दो लड्डू और ध्वजा चढ़ावें। इसके बाद प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखें। लाल वस्त्र धारण करें तथा लाल चन्दन की माला से जपादि कर्म करें। शनिवार को चने तथा गुड़ का वितरण करें। इस मंत्र की दस मालायें प्रतिदिन जपें। यह कर्म तीन महीने तक करें। सदा पवित्र रहें। हनुमानजी दर्शन देंगे। उस समय जो चाहें मांग लें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 3

(वीरों की जंजीर)

मंत्र–

लाइलाहाइल्लिल्लाह।
हजरत वीर की सल्तनत को सलाम।
वी आजम जेर जाल मश्वल कर।
तेरी जंजीर से कौन-कौन चले।
बावन भैरों चलें।
देव चलें।
विशेष चलें।
हनुमन्त की हांक चले।
नरसिंह की धाक चले।

नहीं चले तो सुलेमान के बखत की दुहाई।
एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर की दुहाई।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इसकी साधना अकेले ना करें। शुक्रवार या गुरुवार के दिन से पश्चिम की ओर मुख करके सफेद वस्त्र धारण करके बैठें और दस माला प्रतिदिन जपें। बारह दिन में यह मंत्र सिद्ध हो जायेगा। प्रयोग काल में लोबान जलता रहे। वीर उपस्थित हों तो वचन में बांध लें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 4

(हनुमान)

मंत्र–

ॐ नमो देव लोक दिविख्या देवी।
जहां बसे इस्माईल जोगी।
छप्पन भैरों।
हनुमन्त वीर।
भूत-प्रेत दैत्य को मार भगावें।
पराई माया ल्यावे।
लाडू, पेड़ा, बरफी, सेब, सिंघाडा, पाक, बताशा।
मिश्री, घेवर, बालूसाई, लौंग, डोडा, इलायची दाना।
तेल देवी काली के ऊपर।
हनुमन्त गाजै।
एती वस्तु मैं चाहि लावै।
न लावे तो तैंतीस कोटि देवता लावें।
मिरची जावित्री जायफल हरड़े जंगी-हरड़े।
बादाम छुहारा मुफरें।
रामवीर तो बतावै बस्ती।
लक्ष्मण वीर पकड़ावैं हाथ।
भूत-प्रेत के चलावें हाथ।
हनुमन्त वीर को सब कोऊ गाव।
सौ कोसां का बस्ता लावे।

न लावे तो एक लाख अस्सी हजार वीर।
पैगम्बर लावें।
शब्द सांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

कहीं निर्जन (उजाड़) स्थान में कोई अंधा कुआं देखें। वहां पर शुद्ध मिट्टी में लाल रंग मिलाकर हनुमान जी की प्रतिमा बनावें। और उसे सिन्दूर का चोला चढ़ाकर इस मंत्र का जाप करें। एक माला का जप निशदिन करें और 21 दिन तक इस क्रिया को चलाते रहें। हो सकता है कि रामदूत स्वयं उपस्थित हो जाएं। यदि वे नहीं आएं तो सैकड़ों मेघों का गर्जन करते हुए आकाशवाणी होगी। इसे ध्यान से सुनें और यदि कर सकें तो उनसे तीन वचन ले लें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 5

(शौहा वीर)

मंत्र–

सोह चक्र की बावड़ी।
डाल मोतियन का हार।
पद्म नियानी नीकरी।
लंका करे निहार।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
चले चौकी हनुमन्त वीर की दुहाई।
कौन-कौन वीर चले।
मरदाना वीर चले।
सवा हाथ जमीन को सोखन्त करना।
जल का सोखन्त करना।
पय का सोखन्त करना।
पवन का सोखन्त करना।
लाग को सोखन्त करना।
चूड़ी को सोखन्त करना।
पलना को।
भूत को।

पलीत को।
अपने वैरी को सोखन्त करना।
मेवत उपात भाकी चन्द्र कले नहीं।
चलती पवन मदन सूतल करे।
माता का दूध हराम करे।
शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र का प्रयोग गुरुवार से आरम्भ करके एक माला निशदिन फेरें। लोबान जलाए रखें। 21 दिन में वीर दर्शन देगा, जो चाहे मांग लें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 6

(वीर)

मंत्र–

काली काली महाकाली।
इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली।
बालक की रखवाली।
काले की जय काली।
भैरों कपाली।
जटा रातों खेलें।
चन्द हाथ कैड़ी मठा।
मसनिया वीर। चौहटे लड़ाका।
समानिया वीर।
बज्रकाया।
जिह करन नरसिंह धाया।
नरसिंह फोड़ कपाल चलाया।
खोल लोहे का कुण्डा।
मेरा तेरा बान फटक।
भूगोल बैढान।
काल भैरों बाबा नाहर सिंह।
अपनी चौकी बठान।
शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

किसी एकान्त स्थान में शनिवार या रविवार को रात्रि में जपारम्भ करें। उस रात यह जप तब तक करें जब तक वीर दर्शन न दें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 7

(हनुमान)

मंत्र–

अजरंग पहनूं।
बजरंग पहनूं।
सब रंग रखूं पास।
दांये चले भीम सेन।
बांये हनुमन्त।
आगे चले काजी साहब।
पीछे कुल बलारद।
आतर चौकी कच्छ कुरान।
आगे पीछे तूं रहमान।
धड़ खुदा, सिर राखे सुलेमान।
लोहे का कोट।
तांबे का ताला।
करला हंसा बीरा।
करतल बसे समुद्र तीर।
हांक चले हनुमान की।
निर्मल रहे शरीर।

हनुमान जी विषयक सभी नियम मानते हुए इस मंत्र की दस माला प्रतिदिन जपें। 21 दिन पूरे होने पर किसी भी रूप में हनुमान जी आ सकते हैं। श्रद्धा तथा विश्वास से उन्हें जीतें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 8

(हनुमान)

मंत्र–

हनुमान जाग।
किलकारी मार।
तूं हुंकारे।
राम काज संवारे।

ओढ़ सिन्दूर सीता मइया का।
तूं प्रहरी राम द्वारे।
मैं बुलाऊं, तू अब आ।
राम गीत तू गाता आ।
नहीं आये हनुमाना तो राजा राम,
सीता मइया की दुहाई।
मंत्र सांचा फुरो खुदाई।

हनुमान जी विषयक पूर्ण नियमों के साथ मंगलवार के दिन से इस मंत्र का शुभारम्भ करें और पांच मंगलवार तक करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 9

(मसान)

मंत्र–

ॐ नमो आठ खाट की लाकड़ी।
मूंज बनी का कावा।
मुवा मुर्दा बोले।
न बोले तो महावीर की आन।
शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र के अनुष्ठान से मसान जगता है। इसके लिए एक बोतल सुरा, चमेली के पुष्प, लोबान, छारछरीला, लौंग, कपूर, कचरी, अतर, आटे से बना चौमुखा दीपक लेकर श्मशान में जाएं। लोबान का धूप करें। चौमुखा दीपक जलाकर रखें। इसके बाद एकाग्रचित्त होकर यह मंत्र पढ़ें। कुछ समय पश्चात् मसान जाग जाएगा और हा-हाकर मचायेगा। आप धीरज रखें और डरें नहीं। अतर के छींटें दें और सुरा का अर्ध्य दें। इसके बाद मसान प्रकट होगा। अब आप चमेली के पुष्पों की वर्षा करते हुए उसका स्वागत करें और शेष सामग्री उसे अर्पित करके प्रणाम करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 10

(मुहम्मदा पीर)

मंत्र–

ॐ नमो हांकत युगराज फाटत काया।

जिस कारण युगराज आया।
गाजंत आया।
घोरंत आया।
सिर के फूल बखेरंत आया।
और की चौकी उठावंत आया।
अपनी चौकी बैठावंत आया।
और का किवाड़ तोड़ता आया।
अपना किवाड़ भेड़ता आया।
बांधि बांधि किसको बांधी।
भूत को बांधि।
प्रेत को देव दानव को बांधी।
उड़न्त गड़न्त योगिनी बांधी।
चौर चिरणागार को बांधी।
तिरसठ कलुवा को बांधी।
चौंसठ योगिनी को बांधी।
बावन वीर को बांधी।
द्वार को बांधी।
हाट को बांधी।
गले को बांधी।
गिरारे को बांधी।
किया को बांधी।
कराय को बांधी।
अपनी को बांधी।
गैर को बांधी
मैली को बांधी।
कुचैली को बांधी।
पीली को बांधी।
स्याह को बांधी।
सफेद को बांधी।
काली को बांधी।
लाली को बांधी।

बांधी बांधी रे गढ गजनी के महमदा पीर।
चलैं तेरे संग सत्तर सौ वीर।
जो बिसरि जाएं तो सौ राजा।
हलाल जाएं।
उलटी मार।
पलटी मार।
पछाड़ मार।
धर मार।
कब्जा चढ़ाय।
सुड़िया हलाय।
शीश खिलाय।
शब्द सांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को सूर्यग्रहण के समय किसी नदी के किनारे निर्जन वन या उपवन में बैठकर जपें तो मुहम्मदा पीर दर्शन देंगे।

सिद्ध शाबर मंत्र : 11

(बिरहना पीर)

मंत्र–

पीर बिरहना।
फूल बिरहना।
धूं धूं कार सवा सेर का तोसा।
वाय अस्सी कोस का धावा करे।
सात सौ कुन्तक आगे चले।
सात सौ कुन्तक पीछे चले।
छप्पन सौ छुरी चले।
बावन सौ वीर चले।
जिसमें गढ़ गजनी का पीर चले।
और की भुजा उखाड़ता चले।
अपनी भुजा टेकता चले।
सूते को जगावता चले।

बैठे को उठावता चले।
हाथों में हथकड़ी गेरे।
पैरों में पैर कड़ा गेरे।
हलाल माहीं पीठ करे।
मुरदार माहीं पीठ करे।
बलवान नबी को याद करे।
ॐ नमः ठः ठः स्वाहा।

सवा सेर मोहन भोग का हलवा समक्ष रख करके लोबान जलायें। शुद्ध घी का दीप जलाकर सूर्यग्रहण के समय इसे जपें। बिरहना पीर आएंगे। इन्हें चमेली के सफेद पुष्पों की माला पहनावें और उनसे वार्ता करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 12

(कालिका)

मंत्र–

कीं कालिका षोडस वर्षीय जवान।
हाथ में खड़ग खप्पर तीर कमान।
गले नर मुण्ड माला रहे श्मशान।
आओ आओ मां कालिके मेरा कहना मान।
नहीं आये कालिका तो काल भैरव की दुहाई।
शब्द सांचा फुरो मंत्र खुदाई।

इस मंत्र का शुभारम्भ शनिवार की अर्द्ध रात्रि में निर्वस्त्र होकर करें। इस मंत्र का लाभ कालिका देवी के भक्तों को ही प्राप्त होगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 13

(डाकिनी)

मंत्र–

ॐ स्यार की खवासिनी।
समन्दर पार धाई।
आव, बैठी हो तो आव।
ठाडी हो तो ठाडी आव।
जलती आ।

उछलती आ।
न आये डाकिनी तो जालंधर पीर की आन।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

किसी निर्जन चौराहे पर या अपने निवास पर पूर्णतः निर्वस्त्र होकर आसन पर बैठें। मांस और मदिरा भोग के लिए रख लें। चर्बी का दीपक जलायें और इस मंत्र का पाठ करते रहें। जब दस मालायें हो जाएं तो अपने हाथों में पीली सरसों लेकर इस मंत्र से सिद्ध करके सभी दिशाओं में फेंक दें और पुनः मंत्र का जाप आरम्भ कर दें तो आसपास की सभी डाकिनियां दौड़ती हुई आ जाएंगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 14

(गौ जोगिन)

मंत्र–

आगारी जो गुरु यागे।
जोगिन गुरू डण्ड बतियां।
करिया बलईयां।
री जोगन मुख अनरिता।
गायति रही रतियां।
गो जोगिन चल इन अकेलियां।
गो मारो है तालियां।
गो जोगिन बांधऊं नजरियां।
गो जोगिन आ पहियां।
ना आये तो दोहाई मइया बनिता की।
दोहाई सलिमा पैगम्बर की।
दोहाई सलाई छू।

इस मंत्र को शुक्रवार की रात्रि में रात भर जपें और सावधान रहें। धूप-दीप जलता रहे। चमेली के पुष्पों माला भी रखें और जैसे ही गौ जोगिन दर्शन दे तो यह माला उसे पहना दें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 15

(भैरो जी)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु को।
काला भैरव, काला केश।
कानों मुन्दरा, भगवा वेष।
मार मार काली पुत्र बारह कोस की मार।
भूतां हाथ काले जी खूंहा।
गेड़िया जहां जाऊं भैरों साथ।
बारह कोस की ऋद्धि लाओ।
चौबीस कोस की सिद्धि लाओ।
सोती होय जगाय लाओ।
बैठी होय उठाय लाओ।
अनन्त केशर की भारी लाओ।
गौरा पार्वती की बिछिया लाओ।
गेल्यां की रस्सतान मोह।
कुएं बैठी पणिहारी मोह।
गद्दी बैठा बणिया मोह।
गृह बैठी बणियनी मोह।
राजा की रजवाड़िन मोह।
महलों बैठी रानी मोह।
डाकिनी को।
शाकिनी को।
भूतिनी को।
पलीतनी को।
औपरी को।
पराई को।
लाग को।
लपटाई को।
धूम को।

धक्का को।
पलीया को
चौड़ को।
चुगाठ को।
काचा को।
कलवा को।
भूत को।
पलीत को।
जिन को।
राक्षस को।
बैरिनों से बरी कर दे।
नजरों जड़ दे ताला।
इत्ता भैरव न करे तो पिता महादेव
की जटा तोड़ तागड़ी करे।
माता पार्वती का चीर फाड़ लंगोट करे।
चल डाकिनी शाकिनी।
चौडूं मैला बाकरा। देऊं मद की धार।
भरी सभा में द्यूं आने में कहां लगाई वार।
खप्पर में खाय मसान में लोटे।
ऐसे काला भैरों की कुण पूजा मेटे।
राजा मेटे राज से जाये।
प्रजा मेटे, दूध पूत से जाये।
जोगी मेटे ध्यान से जाये।
शब्द सांचा पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

एक काले रंग का त्रिभुजाकार पत्थर लेकर काले रंग और चमेली के तेल को मिलाकर उसे रंग दें और किसी धरातल पर सीधा खड़ा कर दें। शनिवार की रात्रि में इसके सामने सरसों के तेल का अखण्ड दीप जलायें। दो लौंग रखें, नारियल.तथा पान की पूजा रखें। मदिरा का भी प्रबन्ध रखें। अब इसके सामने धूप जलाकर इस मंत्र का जप प्रारम्भ करें। कम से कम एक माला तो अवश्य जपें और रात्रि में इसी भांति पाठ करते रहें। दिन में

काले कुत्ते को खीर, हलुवा खिलावें। मन्दिर में भैरों जी के दर्शन भी करें। यह कार्य नियमित चलना चाहिए। शीघ्र ही भैरों जी दर्शन देंगे। तब भैरों जी को मांस, मदिरा का भोग प्रस्तुत करें और आगे जैसा आप चाहें वैसा करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 16

(भैरव जी)

मंत्र–

ॐ काली कंकाली।
महाकाली के पुत्र।
कंकाल भैरव हुकूम हाजिर रहे।
मेरा भेजा रक्षा करे।
आन बांधूं।
बान बांधूं।
फूल में भेजूं फूल में जांय।
कोठे जी पड़े थर-थर कांपे।
हल हल हलें।
गिरि गिरि परे।
उठि उठि भगे।
बक बक बके।
मेरा भेजा सवा घड़ी।
पहर सवा।
दिन सवा।
मास सवा।
सवा बरस को बावला न करे।
तो माता काली की शय्या पे पग धरे।
वाचा चूके।
तो उमा सूखै।
वाचा छोड़ कुवाचा करै।
धोबी की नांद।
चमार के कूंढ़े में पड़ै।

मेरा भेजा बावला न करे।
तो रुद्र के नेत्र से आग की ज्वाला कढ़ै।
सिर की जटा टूट भूमि में गिरे।
माता पार्वती के चीर पे चोट पड़े।
बिना हुकुम नहीं मारना।
हे काली के पुत्र कंकाल भैरव।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र का प्रयोग भी पूर्व वर्णित मंत्र के प्रयोग की भांति ही है और इसके जप से भी श्री भैरव जी प्रकट होते हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 17

(सिद्धि में सहायक)

मंत्र–

ॐ काली घाटे काली मां।
पतित पावनी काली मां।
जवा फूले।
स्थुरी जले।
सेई जवा फूल में सीआ बेड़ाए।
देवीर अनुर्बले।
एहि होत करिवजा होइवे।
ताही काली धर्मेर।
वले काहार आज्ञे राठे।
काली का चंडीर आसे।

बंगला भाषा में इस भगवती कालिका के शाबरी मंत्र को तीन बार जप कर दायें हाथ पर फूंक मारें और चाहें सो करें, निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 18

(तांत्रिक मायाजाल वापिस लौटाना)

मंत्र–

ॐ एक ठो सरसों।

सौला राई।
मोरो पटवल को रोजाई।
खाय-खाय पड़े भार।
जे करै ते मरे।
उलट विद्या ताही पर परे।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
हनुमान का मंत्र सांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

यदि किसी के ऊपर किसी ने तांत्रिक अभिचार कर दिया हो और बार-बार करता हो तो थोड़ी-सी राई, सरसों तथा नमक मिलाकर रख लें। इसके बाद इस मंत्र का जप करते हुए सात बार रोगी का उतारा करें और फिर जलती हुई भट्टी में यह सामग्री झटके से झोंक दें तो सारा मायाजाल वापस चला जाएगा।

❑❑❑

चतुर्थ अध्याय (4)

रोग नाशक मंत्र प्रयोग

इस अध्याय में समस्त रोगों को ठीक करने के मंत्र यथाविधि प्रस्तुत किए गए हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 1

(बहती हुई नाक)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
चार आटी, चार घाटी।
नीख नीख है चौरासी।
घाटी बहै नीर।
भीजै चीर।
नाथ नाक थमि हो।
श्री नरसिंह वीर नाक न थमे तो।
माता अंजनि का पिया दूध हराम करे।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

थोड़ी-सी साफ रूई लेकर और इस मंत्र का जाप करते हुए सात बार फूंकें तथा ठण्ड से पीड़ित रोगी की नाक में लगावें तो उसकी बहती हुई नाक रुक जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 2

(दांत-दाढ़ का दर्द)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
बन में ब्याई अञ्जनी।

जिन जाया हनुमन्त।
कीड़ा मकुड़ा माकड़ा।
ये तीनों भस्मन्त।
गुरु की शक्ति।
मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

एक नीम की टहनी लेकर दर्द के स्थान पर छुआते हुए इस मंत्र को सात बार जपें। ऐसा करने से दांत या दाढ़ का दर्द समाप्त हो जाएगा और पीड़ित व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 3

(नेत्रों का दर्द)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
समुद्र।
समुद्र में खाई।
इस मरद[1] की आंख आई।
पाकै, फूटे न पीड़ा करे।
गुरु गोरख की आज्ञा करें।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

नमक की सात डली लेकर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए सात बार झाड़ा करें तो नेत्रों की पीड़ा दूर हो जाती है।

1. 'मरद' की जगह रोगी भी कह सकते हैं या चाहें तो 'मरद' की जगह रोगी का नाम ले लें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 4

(अदीठ[1])

मंत्र–

ॐ नमो सिर कटा।

नख कटा।
विष कटा।
अस्थि मेद।
मज्जा गत।
फोड़ा फुन्सी।
अदीठ दुम्बल दूखानो।
रेत्या "व" रोगनी धामवाय जाये।
चौंसठ योगिनी।
बावन वीर।
छप्पन भैरों।
रक्षा कीजो आय।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु का।

मोर पंख से धरा की धूल एकत्र करके इस मंत्र का उच्चारण करते हुए सात बार अदीठ पर लगाएं तो रोग ठीक हो जाता है और रोगी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है।

1. दिखाई न देने वाला फोड़ा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 5

(बगली दर्द)

मंत्र–

वात् वात्।
अकाल वात्।
अन्ध वात्।
कुनकुने वात्।
कुट कुटरे वात्।
आभार प्रति चक्रे शीघ्र फाट्।
तौमार डांके।
पवन पुत्र हनुमान कार आज्ञाय।

राजा श्री रामेर आज्ञाय।

यह बंगला भाषा का मंत्र है।

देह में वात् प्रकोप के कारण बगल में दर्द होने लगता है। ऐसे रोगी को इस मंत्र का जाप करते हुए सात बार फूंक मारें तथा हाथ में शुद्ध पीली सरसों का तेल लेकर दर्द वाले स्थान पर मर्दन करते रहें, रोगी शीघ्र दर्द से मुक्ति पाकर सुखी हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 6

(पीलिया[1])

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
श्री राम सर साधा।
लक्ष्मण साधा बाण।
काला पीता रीता।
नीला थं।था पीला।
पीला चारों झड़ै तो रामचन्द्र जी रहै नाम।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

कांसे के पात्र में जल भरके नीम के पत्तों को सरसों के तेल में भिगोकर रोगी का इस मंत्र से जाप करते हुए सात बार झाड़ा करें। शीघ्र ही रोगी स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करेगा।

(1. इस रोग में रोगी के नेत्र, नाखून, त्वचा आदि पीली हो जाती है।)

सिद्ध शाबर मंत्र : 7

(आधा सीसी[1] का दर्द)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
काली चिड़ी चिग-चिग करे।
धौली आवै वासे हरै।
जती हनुमन्त हांक मारे।

मथवाई और आधा सीसी नासै।
गुरु की शक्ति।
मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी व्यक्ति को 21 बार झाड़ा करें तो आधा सीसी तथा मथवाई नामक रोगों का नाश हो जाता है।

(1. सिर के आधे हिस्से में होने वाले दर्द को 'आधा सीसी' कहते हैं।)

सिद्ध शाबर मंत्र : 8

(कण्ठ बेल)

मंत्र–

ॐ नमो कण्ठ बेल।
तुं द्रम दुमाली।
सिर पर जकड़ी।
वज्र की ताली।
गोरखनाथ गरजता आया।
बढ़ती बेल को तुरत घटाया।
जो कुछ बची, ताही मुरझाया।
घट गयी बेल।
बढ़ै नहीं पावै।
बैठा तहां, उठ नहीं पावै।
फूटे और पीड़ा करे तो गोरखनाथ की दुहाई।
फिरै।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र का जाप करते हुए एक चाकू से झाड़ा करते हुए धरा पर लकीरें खींचते रहें और 21वीं बार झाड़ा करें तो सभी लकीरें काट दें, कण्ठ बेल ठीक हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 9

(कान का दर्द)

मंत्र–

ॐ कनक प्रहार।
धन्धर छार।
प्रवेश कर डार डार।
पात पात झार झार।
मार मार।
हुंकार हुंकार।
शब्द सांचा पिण्ड कांचा ॐ क्रीं क्रीं।

कान के दर्द से पीड़ित रोगी को स्वस्थ करने के लिए सांप के बिल की मिट्टी लाकर, उसे 21 बार इस मंत्र से शक्तिकृत करें और फिर इस मंत्र का सात बार जाप करके वह मिट्टी कान से लगाएं तो रोग ठीक हो जाएगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 10

(नेत्र–पीड़ा)

मंत्र–

**ॐ नमो झल झल।
जहर भरी तलाई।
अस्ताचल पर्वत ते आई।
तहां बैठा हनुमन्त जाई।
फूटे न पाकै।
करै न पीड़ा।
यती हनुमन्त राखै हीड़ा।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।**

जब नेत्रों में पीड़ा या कोई बाधा हो तो नींबू की टहनी लेकर इस मंत्र का जाप करते हुए सात बार झाड़ा करें तो नेत्र–पीड़ा से छुटकारा मिल जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 11

(मथवाय)

मंत्र-

ॐ नमो आदेश गुरु का।
बाल में।
कपाल में।
भेजा में कीड़ा।
कीड़ा करे न पीड़ा।
सोना का सलाबा।
रूपा का हथौड़ा।
ईश्वर गाड़ै गोर्या तोड़े।
इनको शाप।
श्री महादेव तोड़े।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र को जपते हुए गाय के उपलों की राख से सात बार झाड़ा करें तो मथवाय ठीक हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 12

(पशु का कीड़ा)

मंत्र-

ॐ नमो कीड़ा रे तू कुन्ड कुन्डाला।
लाल पूंछ तेरा मुंह काला।
मैं तोय बूझा, कहां ते आया।
तूं ही तूने सबका खाया।
अब तूं जाये।
भस्म होई जाये।
गुरु गोरखनाथ करैं सहाय।

प्रायः पशुओं के घाव में या कहीं अन्यत्र कीड़े पड़ जाया करते हैं जो

कि बहुत तंग करते हैं। ऐसे पशु को ठीक करने के लिए पत्तों से युक्त नीम की हरी टहनी लेकर, इस मंत्र को जपते हुए सात बार झाड़ा करें तो रोगी पशु रोग से शीघ्र मुक्ति पा जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 13

(डिब्बा पसली)

मंत्र–

ॐ सतनाम आदेश गुरु का।
डंक खारी, खंखरा कहां गया।
सवा लाख पर्वतो गया।
सवा लाख पर्वतो जाये।
क्या करेगा।
सवा भार को कोयला करेगा।
सवा भार कोयला कर क्या करेगा।
हनुमन्त वीर नव चन्द्रहास खड्ग घड़ेगा।
नव चंद्रहास खड्ग घड़ क्या करेगा।
जात व ढोंख पसली बाय।
काल कूट खारो समुद्र नखेगा।
जगदगुरु की शक्ति।
मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

डिब्बा या पसली आदि को झाड़ने के लिए तिल का तेल तथा असली सिन्दूर लेकर यह मंत्र जपते हुए झाड़ा करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 14

(बवासीर[1])

मंत्र–

ॐ काका कता क्रोरी कर्ता।
ॐ करता से होय।
यरसना दश हूंस प्रकटे।
खूनी बादी बवासीर न होय।

मंत्र जान के न बताए।
द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय।
लाख जप करे तो उसके वंश में न होय।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
हनुमान का मंत्र सांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रात्रि का धरा हुआ पानी लेकर, इस मंत्र से 21 बार शक्तिकृत करके गुदा प्रक्षालन करें तो दोनों भांति की बवासीर ठीक हो जाती है।

(1. यह गुदा पर होती है और इसके दो रूप होते हैं। एक रूप में तो इससे रक्त गिरता है और दूसरे रूप में अन्दर की ओर मस्से तो होते हैं किन्तु उनसे रक्त नहीं गिरता।)

सिद्ध शाबर मंत्र : 15

(गर्भाशय विकार[1])

मंत्र–

ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी।
जल बांधूं।
जलवाई बांधूं।
बांध दूं जल के तीर।
पांचों दूत कलुवा बांधूं।
बांधूं हनुमन्त वीर।
सहदेव की अनुवा।
अर्जुन का बाण।
रावण रण को थाम ले।
नहीं तो हनुमन्त की आन।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।

इस मंत्र का जाप करते हुए स्त्री का झाड़ा करें। लाल धागा लेकर सिर से पांव तक नापें और इस मंत्र को उच्चारित करते हुए उसके ऊपर 21

गांठ लगाएं और स्त्री को धारण करवा दें।

(1. जिन्हें गर्भ स्थिति न होती हो।)

सिद्ध शाबर मंत्र : 16

(दाढ़-पीड़ा)

मंत्र-

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी।
जहां बसे इस्मायल योगी।
इस्मायल योगी ने पाली गाय।
नित उठ चरवा वन में जाये।
वन में चरे सूखा घास खाय।
पियके गोबर किया जामें निपज्या कीड़ा।
सात सूत सुताला।
पूंछ पुछाला।
धड़ पीला।
मुंह काला।
डाढ़ दांत गालै।
मसूढ़ा गालै।
मसूढ़े करै तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

लोहे की तीन कीलें लेकर इस मंत्र का सात बार जाप करते हुए कीड़ा लगी और दर्द करती हुई दाढ़ पर कीलें छुआते हुए फिर तीनों कीलों को किसी लकड़ी या पेड़ के तने में ठोंक दें तो दाढ़ की पीड़ा ठीक हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 17

(आँव)

मंत्र-

झमकरि झमकरि झमकरि।

भूरिखंडा विखंडा तो धूमकरि।
घूस घूमाइया ताहे।
स्फटिकेर मुन्डि मूल करि गरल भाव हं।
ह्यानुकिक अति बड़ भिड़ि।
ऐ ऐ वीर सो भट सम्भवे।
भरमहा धर्मेर आज्ञा।
पेट समान।
बाप खान।
भूमि गमने न छाड़ि दे दान।
विमातृ खानि।
सहोदर साक्षी।
माथेर हाथ बाड़ाइलि।
कानाजूम करि रत्नाकर समुद्रे।
दिले भाषाइया।
बात-बात चात धूप खाओ।
अवतार कहे मोरे।
महि मण्डल भर कर।
एकान्धे घा किया।
पर कांधे पड़ मोर।
बोले आसिवि।
मोर बोले चालिवि।
मोर बोले जावि।
क्रीं कारे छांड़ियां जावि महाकालीर आज्ञा।
यह चुटकी मंत्र है।

इस मंत्र को जपते हुए रोगी के सिर से पांव तक चुटकी बजाते हुए झाड़ें तो आँव ठीक हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 18

(नाभि का उखड़ना[1])

मंत्र–

ॐ नमो नाड़ी नाड़ी।

नौ से नाड़ी।
बहत्तर कोठा।
चलै अगाड़ी।
डिगै न कोठा।
चले नाड़ी रक्षा करे यती हनुमन्त की आन।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

एक पीला बांस लें जिसमें कि नौ गांठें हों। रोगी को लिटा करके उसकी नाभि के ऊपर यह बांस खड़ा करके इस मंत्र का जाप करते हुए बांस के छेद में जोर-जोर से फूंक मारते रहें तो उखड़ी हुई नाभि ठीक हो जाती है।

(1. यह एक ऐसा रोग है जिसे आधुनिक चिकित्सक रोग मानता ही नहीं जबकि रोगी को असहनीय पीड़ा हो रही होती है।)

सिद्ध शाबर मंत्र : 19

(सभी रोग)

मंत्र–

वन में बैठी वानरी।
अञ्जनी जायो हनुमन्त।
बाल डमरू ब्याही बिलाई।
आंख की पीड़ा।
मस्तक की पीड़ा।
चौरासी बाई।
बलि बलि भस्म हो जाये।
पके न फूटे।
पीड़ा करे तो गोरखपती रक्षा करे।
गुरु की शक्ति।
मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को 108 बार जपते हुए रोगी को झाड़ा करें तो उसके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 20

(मृतवत्सा[1])

मंत्र–

छोटी मोटी खप्पर।
तूं धरती कितना गुण।
जिसके बल काट कू जान विज्ञान।
दाहिनी ओर हनुमान रहे।
बांयी ओर चील।
चहुं ओर रक्षा करे वीर वानर नील।
नील वानर की भक्ति लखि न जाये।
जेहि कृपा मृतवत्सा दोष न आय।
आदेश कामरू कामाख्या माई का।
आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

मृतवत्सा दोष से ग्रसित स्त्री का झाड़ा करने के लिए मछली पकड़ने वाला कांटा लाएं और उसे इस मंत्र से सात बार फूंकें। इसी मंत्र को जपते हुए रोगिणी को झाड़ा करें और इस कांटे को ताबीज में भरकर कमर में पहनवा दें तो वह निश्चित रूप से जीवित सन्तान उत्पन्न करे।

(1. जिसके मृत सन्तान उत्पन्न होती हो।)

सिद्ध शाबर मंत्र : 21

(रतौंधी)

मंत्र–

ॐ भाट भाटिनी निकली।
कहे चलि जाए उस पार।
जाईब जाईब हम जाईब उस पार।
भाटिनी बोली हम बिआईब।
उसकी छाली बिआईब।
हम उपस मादी पर मुण्डा मुण्डा।
अण्डा सोहिला तार।

अजय पाल राजा उतर रहे पार।
अजय पाल पानी भरत रहे मसकदार।
यह देख बाबा बोलाऊ।
गोड़िया मेला उजाड़।
तके हम अधोखी।
जाये रतौंधी।
ईश्वर महादेव की दुहाई।
रतौंधी उतर जाई।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र का जाप करते हुए रोगी व्यक्ति का नीम की टहनी से सात बार झाड़ा करें तो शीघ्र ही रोग से मुक्ति मिल जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 22

(कमर की पीड़ा)

मंत्र–

चलता जाये।
उछलता जाये।
भस्म करन्ता।
डह डह जाये।
सिद्ध गुरु की आन।
महादेव की शान।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

सर्वप्रथम इस मंत्र को जपते हुए झाड़ा करें। इसके बाद काला धागा लेकर रोगी के सिर से पांव तक नापकर अलग कर लें और इस मंत्र से 21 बार फूंकें। इसके बाद धारण करवा दें। शीघ्र ही दर्द से मुक्ति मिल जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 23

(अनियमित मासिक-धर्म)

मंत्र-

ॐ नमो आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु का।
तोडूं गांठ औंगा ठाली।
तोड़ दूं लाय।
तोड़ दूं सरित।
परित देकर पाय।
यह देख हनुमन्त दौड़कर आये।
अमुक की देह शांति पाए।
रोग कूं वीर भगाए।
रोग न नसै तो नरसिंह की दुहाई।
फुरे हुकुम खुदाई।

एक सादा पान बनवा कर इस मंत्र का उच्चारण करते हुए सात बार अभिमंत्रित करें और रोगिणी को खिला दें तो उसका अनियमित मासिक-धर्म ठीक और नियमित समय पर हो।

सिद्ध शाबर मंत्र : 24

(अनेक रोग निवारक)

मंत्र-

पर्वत ऊपर पर्वत।
पर्वत ऊपर स्फटिक शिला।
स्फटिक शिला पर अञ्जनी।
जिन जाया हनुमन्त।
नेहला टेहला कांख की कखराई।
पीछे की आदही कान की कनफेट राल की।
बद, कण्ठ की कण्ठमाला।
घुटने का डहरू।
डाढ़ का डढ़शूल।
पेट की ताप तिल्ली किया।

इतने को दूर करे।
भस्मंत न करे तो तुझे माता अञ्जनी
का दूध किया हराम।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र का प्रयोग ब्रह्मचारी ही करें। इस मंत्र का जाप करते हुए झाड़ा करने से मंत्र में कहे गए समस्त रोग ठीक हो जाते हैं।

❑❑❑

पंचम् अध्याय (5)

स्तम्भन मंत्र प्रयोग

इस अध्याय में स्तम्भन अर्थात् किसी गति के रोकने से सम्बन्धित अनेक मंत्र यथाविधि बताये गये हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 1

(तोप-बन्दूक स्तम्भन)

मंत्र-

ॐ नमो आदेश गुरु का।
जल बांधूं।
जलवाइ बांधूं।
बांधूं खाती ताई।
साव लाख अहेढ़ी बांधूं।
गोली चले तो हनुमन्त यती की दुहाई।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

आजकल कहीं पर भी, कभी भी, किसी को भी गोली मार देना एक आम बात बनकर रह गई है। इस समस्या से जूझने के लिए इस मंत्र का प्रयोग करें। एक रंग वाली गाय का दूध लेकर इस मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करें और बन्दूक, पिस्तौल या तोप के मुख पर मार दें तो उसमें से गोली नहीं चलेगी और आप सही सलामत रहेंगे।

सिद्ध शाबर मंत्र : 2

(कड़ाही स्तम्भन)

मंत्र-

ॐ नमो जल बांधूं।
जलवाई बांधूं।

बांधूं कुआं खाई।
नौ सौ गांव का वीर बुलाऊं।
बांधे तेल कड़ाही।
यती हनुमन्त की दुहाई।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

बीच राह से सात कंकड़ी लेकर प्रति कंकड़ी को सात बार इस मंत्र से फूंकें और फिर कड़ाही पर मार दें तो उसके नीचे कितनी भी आग जलाएं परन्तु कड़ाही गर्म नहीं होगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 3

(पागल कुत्ते का काटना)

मंत्र–

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षी देवी।
जहां बसे इस्मायल जोगी।
इस्मायल जोगी ने पाली कुत्ती।
दश काली दश काबरी।
दश पीली, दश लाल।
रंग बिरंगी दश खड़ी।
दश टीको दे भाल।
इनका विष हनुमन्त हरै।
रक्षा करै गुरु गोरख बाल।
सत्य नाम आदेश गुरु को।

आरने उपलों की राख लेकर पागल कुत्ते के द्वारा काटे गए रोगी को लेकर, यह मंत्र जपते हुए घाव के ऊपर लगा दें तो विष स्तम्भन होकर रोगी ठीक हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 4

(बिच्छू का विष)

मंत्र–

ॐ नमो समुद्र।

समुद्र में कमल।
कमल में विषहर।
बिच्छू कहूं तेरी जात।
गरुड़ कहे मेरी अठारह जात।
छह काला।
छह कांवरा
छह कूं कूं बान।
उतर रे उतर।
नहीं तो गरुड़ पंख हंकारे आन।
सर्वत्र बिसन मिलई।
उतर रे बिच्छू उतर।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को जपते हुए सात बार बिच्छू के काटे स्थान पर हाथ रखकर झाड़ा करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 5

(गर्भ स्तम्भन)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
जय जय जय जय जयकार।
गोरख बैठा घोरूवार।
जब लग गोरख जाप जपै।
जब लग राज विभीषण करै।
गौरा कात्या कातना।
ईश्वर बांध्या गंडा।
राखु राखु श्री हनुमन्त बजरंग।
जो छिटका परता।
अण्डा दूध पूत।
ईश्वर की माया।

पड़ता गर्भ श्री गोरखनाथ जी रखाया।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

एक काले रंग का धागा लेकर 21 बार मंत्र से शक्तिकृत करें, फिर गर्भवती की कमर में बंधवा दें तो गिरता हुआ गर्भ रुक जाएगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 6

(शस्त्र-धार स्तम्भन)

मंत्र-

ॐ नमो धार धार।
अधर धार।
बांधो सात बार।
आनि बांधौ तीन बार।
कहै रोम न भीजै चीर।
खांडा की धार को ले गया यती हनुमान वीर।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

चाकू के प्रहार से बचने के लिए यदि रास्ते से माटी उठाकर यह मंत्र जपते हुए हमलावर के धारदार शस्त्र पर मारेंगे तो उससे घाव नहीं लगेगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 7

(चुंगी-तुरही-बांसुरी स्तम्भन)

मंत्र-

ॐ नमो बादी आया।
बांद करता कूं बैठाया।
बड़ पीपल की छाया रहुरे।
बादी बादी न कीजै।
बांधूं तेरा कण्ठ और काया।
बांधूं पूंगी और नाद।

बांधूं योगी और साधु।
बांधूं कण्ठ की पूंगी और मसान की बानी।
अब तो रह रे पूंगी।
सुजान तलै बांधे नरसिंह।
ऊपर हनुमन्त गाजै।
मेरी बांधी पूंगी बाजै तो गुरु गोरखनाथ लाजै।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

उड़द के 21 दाने लेकर 108 बार इस मंत्र से शक्तिकृत करके पूंगी पर मारें तो पूंगी नहीं बजेगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 8

(सर्प कीलन)

मंत्र–

बजरी बजरी बजर की वाड़।
बजरा कीलूं आस पास।
मरै सांप होय खाक।
मेरा कीला पत्थर कीलै।
पत्थर फूटै न मेरा कीला छूटै।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

थोड़ी-सी मिट्टी या कुछ कंकड़ लेकर इस मंत्र के द्वारा सात बार शक्तिकृत करें और सर्प पर हल्के से मार दें तो सर्प हरकत करना बंद कर देगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 9

(दृष्टि स्तम्भन)

मंत्र–

ॐ नमो काल भैरों धंधरा वाला।

हाथ खड़ग फूलों की माला।
चौंसठ सौ योगिन संग में चोला।
देखो खोलि नजर का ताला।
राजा परजा ध्यावै तोहीं।
सबकी दृष्टि बांधी दे मोहीं।
मैं पूजौं तुमको नित ध्याय।
भरी अथाई सुमिरौं तोहि।
तेरा कीया सब कुछ होय।
देखूं भैरों तेरे मंत्र की शक्ति।
चले मंत्र ईश्वरोवाचा।

रविवार के दिन श्मशान में जाकर चुटकी भर राख लायें। भैरों जी का पूजन करें। आपके इष्ट ही यदि भैरों जी हों तो अधिक उत्तम रहेगा। यह मंत्र जपते हुए 21 बार राख को फूंक मारें और कहीं पर भी सभा में जाकर पुनः इस मंत्र को जपते हुए, राख को वातावरण में फूंककर उड़ा दें तो सभी की दृष्टि बंध जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 10

(जल स्तम्भन)

मंत्र–

ॐ नमो काला भैरों।
कालिका का पूत।
पगों खड़ाऊं हाथ।
गुरुजी चलौ मन प्रभात।
आकतू अगुरूं भरा तेरो न्यौती।
मैं जहां करूं पूजो दिन सात।
जो तू मन चीता कार्य कर दे मोहि।
कुंकुम कस्तूरी केसर से पूजा करूं तुम्हारी।
मोर मनचीत्यौ।
मेरा कार्य करहु।
गुरु गोरखनाथ की वाचा फुरै।
शब्द सांचा।

पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार से पहले शनिवार की शाम को सफेद आक को निमन्त्रण दे आवें और रविवार की प्रातः उसकी जड़ उखाड़ लायें। इस जड़ की खड़ाऊं बनाकर इस मंत्र से 108 बार फूंकें और फिर पहनकर पानी के ऊपर चलें तो डूबेंगे नहीं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 11

(बकरा-रक्षा मंत्र)

मंत्र-

काले तिल।
कवेला तिल।
गुजरी बैठी वीर।
पसारे सुई।
न देधे माधाई।
पीर न आवै।
काली करूइमती भारी।
दुष्य तिबुकिलार।
अवनी बांधो सुई।
अवषांधे की धार।
आवे न लोहू।
न फूटे घाउ।
रक्षा करे श्री गोरखराउ।

इस मंत्र से शक्तिकृत करके कुछ उड़द बकरे को मारे जाएं तो कसाई का हथियार वध नहीं कर पाएगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 12

(जलन स्तम्भन)

मंत्र-

ॐ नमो आदेश गुरु को।
कामरू देश कामाख्या देवी।

जले तेल रेल तेव माहा तीरे।
अमुक[1] लहर पील मल में कारे।
मंत्र पढ़े नरसिंह देव कुटिया में बैठ के।
श्री रामचंद्र रहि रहि फूंक के।
जाय अमुक की जलन।
एक एलन में जाय।
खाय सागर की नोर नान में।
आज्ञा हाड़ि दासी की।
फुरो मंत्र चण्डी वाचा।

यदि कोई जल गया हो तो सरसों का तेल लेकर इस मंत्र से शक्तिकृत करके जले हुए स्थान पर लगा दें तो जलन ठीक हो जाती है।

1. अमुक की जगह पीड़ित व्यक्ति का नाम लें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 13

(अखाड़ा स्तम्भन)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश कामरू कामाक्षा देवी को।
अंग पहनूं भुजंग पहनूं।
पहनूं लोह शरीर।
आनते के हाथ तोड़ूं।
चलते के पांव तोड़ूं।
सहाय हो हनुमन्त वीर।
उठ अब नरसिंह वीर।
तेरो सोलहा सौ श्रृंगार।
मेरी पीठ लागे नहीं वार।
हो मेरी हार तो हनुमन्त वीर लज्जाने।
तूं लेहु पूजा पान सुपारी नारियल सिन्दूर।
अपनी बेह।
सकल मोही कर देहु।
मेरी भक्ति।

गुरु की शक्ति।

फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

हनुमान जी की पूजा करके तेल का दीपक जलायें और सम्मुख लंगोट रखकर इस मंत्र का पाठ करें। आवश्यकता के समय सरसों का तेल 108 बार इस मंत्र से अभिमंत्रित कर मालिश करें और यही लंगोट पहनकर अखाड़े में उतरें तो सभी प्रतिद्वन्द्वियों का स्तम्भन होकर विजयश्री मिलेगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 14

(ततैया दंश स्तम्भन)

मंत्र–

चूण चूण चूण विषेरपाणी।
हाडेर मितर भासरे कूंडे।
मर विष तुई चूणे पूड़े।

जिस जगह पर ततैया काट ले वहां पर इस मंत्र को जपते हुए फूंक मारने से विष स्तम्भित होकर देह नीरोग हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 15

(मोच)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु को।
श्री राम को मचक उड़ाई।
इसके तन से तुरन्त पीर भागि जाई।
न रहे रोग पीड़ा फूंक से हुई सब पानी।
अमुक की व्यथा छोड़ भाग तूं मचकानी।
न भागे पीड़ा तो महादेव की दुहाई।
आदेश सिया राम लखन गुसांई।

प्रायः पांव आदि में मोच आ जाती है तथा चलना-फिरना कठिन हो जाता है। ऐसे रोगी के लिए सरसों का तेल लेकर इस मंत्र से अभिमंत्रित करके मोच के ऊपर मालिश करें तो पीड़ा स्तंभित होकर मोच ठीक हो जाती है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 16

(घाव)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश कामाख्या देवी का।
काली बैठी लिए कटारी।
जिसे देख दुष्ट भयकारी।
कटारी गुण तोरे बलिहारी जाई।
कटारी के बन्दन से घाव सुखाई।
अमुक की पीड़ा।
मां के वरदान से न रहे।
पिहड़वन बस लुकान।
आज्ञा हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई फिरै।

देह में लगे घाव को ठीक करने के लिए किसी कटोरी में जल लेकर उसे इस मंत्र से शक्तिकृत करके रोगी को छींटें मारें तथा पिलायें तो घाव का रक्तस्राव रुके और पीड़ित व्यक्ति सुख की अनुभूति करे।

सिद्ध शाबर मंत्र : 17

(बिच्छू दंश स्तम्भन)

मंत्र–

परवत ऊपर सुरही गाई।
ते करे गोबरे बीछी बिआई।
छः कारी।
छः गोरी।
छः को जोता उतारिकै।
बिधा बिछिठा वहिया।
आठि गाठि नव पोर।
बीछी करे अजोर।
बलि चलु चलाई।
करवाऊ ईश्वर महादेव के दुहाई।
जहां गुरु के पांव सरके।

तहदि गुरु के कुश कजुरी।

तहदि विष्णुपुरी निर्भा जाई के दुहाई।

महादेव गुरु के ठावहिं ठाव बीछी पार्वती।

इस मंत्र का जाप करते हुए झाड़ा करने से बिच्छू का काटा हुआ रोगी ठीक हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 18

(सर्प दंश का धागा)

मंत्र–

तागा तागा तागा।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर।

तिन देव लागा।

ऐ तागा नड़े चढ़े।

ईश्वरी करतार करे।

जब किसी व्यक्ति को सर्प काट लेता है तो दंश के स्थान के पास धागा बांधते हैं ताकि विष आगे न बढ़े। इस धागे को इस मंत्र से शक्तिकृत करके बांधने से विष का स्तम्भन हो जाता है।

❑❑❑

षष्ट्म अध्याय (6)

उच्चाटन मंत्र प्रयोग

इस अध्याय में विभिन्न समस्याओं के निदान हेतु विभिन्न उच्चाटन प्रयोग प्रस्तुत किए गए हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 1

(शत्रु उच्चाटन)

मंत्र–

ॐ हस्त अली हस्तों का सरदार।
लगी पुकार।
करो स्वीकार।
हस्त अली।
तेरी फौज चली।
भूत-प्रेतों में मची खलबली।
हस्त अली।
मेरे हाथों के साथ।
तेरे भूत प्रेत।
करें मेरी सत्ता स्वीकार।
पाक हस्त की सवारी।
तड़पता हुआ भागे।
जब मैंने चोट मारी।
आकाश की ऊंचाईयों में।
धरती की गहराईयों में।
लेना तूं खोज खबर।
सब पर जाये तेरी नजर।
इन हाथों पर कौन बसे।
नाहर सिंह वीर बसे।

जाग जाग रे नाहरा।
हस्त अली की आन चली।
मारूं जब भी मैं चोट।
भूत प्रेत किये कराये लगे लगाये।
अला बला की खोट।
जादू गुड़िया।
मंत्र की पुड़िया।
श्मशान की खाक।
मुर्दे की राख।
सभी दोष हो जाएं खाक।
मंत्र सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस प्रयोग के कारण हाथों की माया सिद्ध होती है। सूर्यग्रहण के पूरे पर्वकाल तथा उसकी ही रात्रि को अपने समक्ष लोबान सुलगाकर चमेली के पुष्प रखें, फिर इस मंत्र को निरन्तर जपें तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

इसके लाभार्थ अपने हाथ को इस मंत्र से शक्तिकृत करके किसी को भी मारने से उसके दोषों का उच्चाटन हो जाता है। इस हाथ से किये गये समस्त कार्य सफल हुआ करते हैं।

शत्रु को यह हाथ छुआने से सर्वप्रथम शत्रुता का नाश होता है। यदि किसी कारण शत्रुता की जड़ें गहरी हों तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 2

(सिद्धिप्रद उच्चाटन)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु को।
सिद्धि, सिद्ध करे सिद्धाई।
कभी न होवे जग हंसाई।
सिद्धि मेरी है रखवाली।
सिद्धि है आसन।
सिद्धि है बासन।

सिद्धि है ताला।
सिद्धि है चाबी।
सिद्धि से मैं काम चलाऊं।
भर कर प्याला खून पिलाऊं।
रक्त का टीका।
सिद्धि का वासी।
मुझसे भागे सारे पुरवासी।
जो मैं चाहूं बाण चलाऊं।
बिना तीर कमान के मैं काम चलाऊं।
मेरा मारा ऐसा भागे।
बिन कृपा मेरी।
वह कभी न छूटे।
सिद्धि का चक्र मैंने चलाया।
जिसको चाहा उसे मरवाया।
मेरा चक्र न चले तो।
नव नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।
माता वैष्णवी की दुहाई।
काशी कोतवाल भैरों की दुहाई।
शब्द सांचा।
पिण्ड काचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र को नवरात्रि को नवों रात में पूर्णतः नग्न होकर रात भर निरंतर जपने से यह मंत्र सिद्ध हो जाया करता है।

जब आवश्यकता हो इसका प्रयोग करें। प्रयोग के समय जिस काम का चिन्तन करते हैं वही काम सफल हुआ करता है।

उच्चाटन के लिए काले उड़द 21 बार शक्तिकृत करके मारने से उच्चाटन होता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 3

(शत्रु उच्चाटन)

मंत्र–

ॐ एक ही आदि है जग धारा।

सदा स्मरण करूं ओंकारा।
औमकार से मैं काम चलाऊं।
ठहरे पर्वत मैं हिलाऊं।
ओमकार से उपजी वायु।
वायु का बेटा है हनुमान।
तेरा हूं मैं एक ही दासा।
सदा रहो रघुवर के पासा।
पान बीड़ा तुझे चढ़ाऊं।
देववत्त को मैं भगाऊं।
मेरा भागा न भगे।
रामचन्द्र की दुहाई।
सीता सत्यवती की दुहाई।
लक्ष्मण यती की दुहाई।
गौरा पार्वती की दुहाई।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

सर्वप्रथम राम नवमी वाले दिन हनुमान जी को सिद्धि के लिए पूजा प्रदान करें। तदुपरांत इसे एक हजार बार नित्य पढ़ें। यह प्रयोग चालीस दिनों तक लगातार करें। संयम से रहें। भय न खायें।

जब यह मंत्र सिद्ध हो जाये तब काले उड़द इससे शक्तिकृत करके मारने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 4

(ग्राहक उच्चाटन)

मंत्र–

ॐ भंवर वीर तूं चेला मेरा।
बांध दुकान कहा कर मेरा।
उठे न डंडी।
बिके न माल।
न भंवर वीर सो खेकर जाये।

इस मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़कर काले उड़दों को शक्तिकृत करके जिस दुकान में या फड़ पर डाल देंगे तो उसकी बिक्री बन्द हो जाती है। दुकानदार उस दुकान से कुछ भी आमदनी नहीं कर पाता।

सिद्ध शाबर मंत्र : 5

(मसानी उच्चाटन)

मंत्र–

कालिन नागिन।
शिर जटा।
ब्रह्मा खोपड़ी हाथ।
मरी मसानी।
न फिरे।
गुरु हमारे साथ।
दुहाई ईश्वर महादेव।
गौरा पार्वती की।
दुहाई नैना योगिनी की।

इस मंत्र को सर्वप्रथम किसी ग्रहण काल के पूरे पर्व में लगातार जपते हुए अपने अनुकूल कर लें। तदुपरान्त प्रयोग करें।

श्मशान की राख लाकर उसे किसी मंत्र से या किसी क्रूर योग वाले दिन, बिना मंत्र के ही, किसी को खिला देने से खाने वाले को मसानी रोग हो जाता है। जो व्यक्ति इस रोग का शिकार होता है वह प्रायः गुमसुम रहता है तथा दिन-प्रतिदिन वह सूखता चला जाता है। यह भयानक प्रयोग प्रायः स्त्रियों के प्रति किया करते हैं। आपके पास जब इस रोग से पीड़ित व्यक्ति आये तब आप गाय के उपले की राख को कपड़े से छानकर रख लें तथा इस मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करके मसानी के रोगी को खिला दें तथा पेट पर लगा दें। ऐसा तीन बार करने से मसानी का उच्चाटन हो जाता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 6

(भूतादिक उच्चाटन)

मंत्र–

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय।

अतुल वीर पराक्रमाय।
घोर रौद्र महिषासुर रूपायै।
त्रैलोक्य डम्बराय।
रौद्र क्षेत्र पालाय।
ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं।
क्रमित ताड़य ताड़य।
मोहय मोहय द्रभि द्रभि।
क्षोभय क्षोभय आभि आभि।
साधय साधय ह्रीं हृदये।
आशक्तये प्रीति ललाटे बन्ध।
यही हृदये स्तम्भय स्तम्भय।
किलि किलि। ई ह्रीं डाकिनीं।
प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनीं।
प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं।
प्रच्छादय प्रच्छादय अभूति अदूति स्वाहा।
राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय।
ब्रह्मा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय।
आकाशं प्रच्छादय प्रच्छादय।
सिंहिनी पुत्रम् प्रच्छादय प्रच्छादय।
ऐते डाकिनी ग्रहं साधय साधय।
शाकिनी ग्रहं साधय साधय।
अनेन मंत्रेण।
डाकिनी शाकिनी।
भूत प्रेत पिशाचादि।
एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक।
चातुर्थिक पंचमिक।
वातिक पैत्तिक श्लेष्मिक।
सन्निपात केसरी।
डाकिनी ग्रहादि।
मुञ्च मुञ्च स्वाहा।

गुरु की भक्ति।
मेरी शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यह एक अत्यधिक तीव्र गति का समस्त दोषादि को उच्चाटित करने वाला संस्कृत, बंगला तथा हिन्दी के शब्दों से युक्त शक्तिशाली मंत्र है। इससे लाभ उठाने के लिए किसी छप्पर का पानी लेना होगा। इस पानी को इस मंत्र से इक्कीस बार पढ़कर रोगी को मारने से समस्त रहस्यमय बीमारी के कारणों का उच्चाटन हो जाता है।

किसी रोगी की दयनीय अवस्था देखकर उपरोक्त जल के अभाव में मोर के पंख या लोहे के चाकू से उसका इस मंत्र को इक्कीस बार पढ़ते हुए झाड़ा कर दें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 7

(मूठ उच्चाटन)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु को।
आगे दो झिलमिली।
पीछे दो नन्द।
रक्षा सीता राम की।
रखवारे हनुमन्त।
हनुमान हनुमन्ता।
आवत मूठ करो नव खंडा।
सांकर होरो।
लोहे की फारो वज्र कीवाड़।
अज्जर कीले।
वज्जर कीले।
ऐसे रोग हाथ से ठीले।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

इस मंत्र से आती हुई मूठ तथा मारणादि प्रयोगों का उच्चाटन किया

जाता है। यदि हो सके तो किसी पर्वकाल में इसे 108 बार जप लें, तत्पश्चात् जब भी मूठ या हंडिया देखें तब इसे शीघ्रता से सात बार पढ़कर उसकी तरफ फूंक मार दें तो वह वापस हो जायेगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 8

(विषैले जंतु का उच्चाटन)

मंत्र–

ॐ कारी कमरी मौनी रात।
ढूंढो सरप अपनी बाट।
जो सरप बिच्छा पर परे लात।
वह सरप बिच्छा करे न घात्।
दुहाई ईश्वर महादेव।
गौरां पार्वती की।

इस मंत्र के प्रयोग से विषैले जीव-जन्तुओं का उच्चाटन होता है। किसी कारण यदि जीव मिल भी जाता है तो घाव नहीं किया करता।

प्रायः इसे पढ़ते हुए या पढ़कर गमन करने से उपरोक्त लाभ मिलता है।

सिद्ध शाबर मंत्र : 9

(छलछिद्र उच्चाटन)

मंत्र–

ॐ महावीर।
हनुमन्त वीर।
तेरे तरकश में सौ-सौ तीर।
खिण बायें खिण दाहिने।
खिण खिण आगे होय।
अचल गुसांई सेवता।
काया भंग न होय।
इन्द्रासन दी बांध के।
करे घूमे मसान।

इस काया को छलछिद्र कांपे।

तो हनुमन्त तेरी आन।

राम भक्त हनुमान जी के साधकों तथा प्रयोग कर्ताओं के हेतु यह एक सशक्त प्रयोग है। इसे सर्वप्रथम सिद्ध करना होगा। इसके लिए सर्वप्रथम हनुमान जी को पूजा दे आयें तथा किसी एकान्त में इसके प्रति रात्रि में कम से कम 108 मन्त्र पढ़ें। इसे लगातार 21 दिन तक करते रहें तथा सावधान रहें। यदि कोई विशेषता प्रत्यक्ष हो तो उससे भय न खायें अपितु अपने कार्य के प्रति दृढ़ रहें।

इस मंत्र की साधना के बाद जब आवश्यकता हो तब लाल रंग का धागा लेकर पांच तार में लपेटकर इस मंत्र को पढ़ते हुए क्रम से सात गांठें लगायें और पहना दें तो समस्त छलछिद्रों का उच्चाटन हो जाता है।

❑❑❑

सप्तम अध्याय (7)

विद्वेषण मंत्र प्रयोग

इस अध्याय में,दो व्यक्तियों की मित्रता समाप्त कराने के प्रयोग यथाविधि दिये गए हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 1

(मित्र-विद्वेषण)

मंत्र-

ॐ नमो आदेश गुरु सत्य नाम को।
बारहा सरसों।
तेरहा राई।
बाट की मीठी।
मसान की छाई।
पटक मारूकर जलवार।
अमुक[1] फुटे देखन अमुक[2] द्वार।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

1-एक मित्र का नाम, 2-दूसरे मित्र का नाम।

थोड़ी पीली सरसों, थोड़ी राई, थोड़ी मेथी, आम तथा ढाक वृक्ष की सूखी लकड़ी ले आयें और फिर श्मशान में जाकर किसी चिता की राख ले आएं। अब आप हवन करने के लिए लकड़ियों की वेदी बनाएं और शेष सामग्री को एकसार करके इस मंत्र को पढ़ते हुए 108 आहुतियां देवें तो दोनों मित्रों में परस्पर विद्वेष हो जाएगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 2

(स्त्री-पुरुष विद्वेषण)

मंत्र-

आक ढाक दोनों बगराई।

अमुका अमुकी[1] ऐसे लरे जस कुकुर बिलाई।

आदेश गुरु सत्य नाम को।

सूखी हुई ढाक की टहनियां ले आएं और आक का ताजा पत्ता ले आएं। इस पत्ते के ऊपर काली स्याही से यह मंत्र लिखें और आधी रात के समय एकान्त में ढाक की टहनियां जला करके यह मंत्र पढ़ते हुए आक का पत्ता उसमें डाल दें। यदि 108 पत्र डाल सकें तो प्रयोग शीघ्र प्रभावी होगा और इच्छित स्त्री-पुरुष में परस्पर मनमुटाव हो जाएगा।

1. स्त्री-पुरुष, प्रेमी-प्रेमिका या दो विपरीत लिंगी मित्रों को परस्पर लड़वाने के लिए उन दोनों का ही नाम लें।

❑❑❑

अष्टम अध्याय (8)

मारण मंत्र प्रयोग

इस अध्याय में मूठ चलाना, शैतान चढ़ाना, श्मशान तथा हवन के द्वारा मारण प्रयोग यथाविधि दिए गए हैं।

सिद्ध शाबर मंत्र : 1

(शैतान चढ़ाना)

मंत्र–

अल्प गुरु अल्प रहमान।
अमुक की छाती ना चढ़े तो मां बहिन की
सेज पे पग धरै।
अली की दुहाई।
अली की दुहाई।
अली की दुहाई।

शुक्रवार की रात्रि को किसी निर्जन स्थान पर पीली मिट्टी का गोल चौका लगाकर एक दीपक रखें, जिसमें तिल का तेल हो। बाती उत्तर की तरफ करके जला दें और स्वयं दक्षिण की तरफ मुख करके इस मंत्र का जप करें। 17,000 मंत्र पूरे होने पर शत्रु के ऊपर शैतान चढ़ जाएगा। शत्रु ने उचित समय पर उसका प्रबन्ध न किया तो कुछ ही दिनों में शत्रु की जीवन लीला समाप्त हो जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 2

(मूठ)

मंत्र–

ॐ नमो वीर तो हनुमन्त वीर।
सूर्य का तेज, शत्रु की काया।
अदीठ चक्र देवी कालिका चलाया।
चल रे बादी न कर।

बाद मैं करिहों तेरे जीव का घात।
मैं न डरूं तेरे गुरु पीर सूं।
मारूं ताने एक तीर सूं।
मेरा मारा ऐसा घूमै।
जैसा भुजंग की लहर परै।
तोहि गिरता मारूं बाण।
फेरि चलो तो यती हनुमान की आन।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शनिवार को दाहिने हाथ में उड़द लेकर इस मंत्र को अभिमंत्रित करके शत्रु को मार दें तो शत्रु पछाड़ खाकर गिर पड़ेगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 3

(शत्रु को तड़पाना)

मंत्र–

बार बांधो, बार निकले।
जा काट धारनी सूजाये।
लय बहरना चौं हाथ से।
तो काट दांत से।
दुहाई भामहवा की।

इस प्रयोग के लिए एकान्त स्थान का चुनाव करें और वहां पर चिकनी मिट्टी का चौका लगावें। जब चौका सूख जाए तो उसके ऊपर सफेद चादर बिछा दें और इसके ऊपर पश्चिम दिशा की तरफ मुख करके बैठें। सामने एक घी का दीपक जला लें। भोग के लिए हलुवा तथा पूड़ी भी रखें। गांजे की चिलम, इत्र, मेवा, दो लौंग तथा नींबू भी सामने रख लें। अब आप इस मंत्र का जाप करें और जाप के पश्चात् दीपक तथा नींबू के अलावा सारी सामग्री जल में प्रवाहित कर दें। यह प्रयोग 40 दिन तक करना होगा। 40 दिन पूर्ण होने पर नींबू को 108 बार इसी मंत्र से फूंकें और किसी कील से उसे छेद दें तो आपका शत्रु तड़पने लगेगा। यदि आपने कील आर-पार कर दी तो उसकी मृत्यु हो जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 4

(शत्रु को मारना)

मंत्र–

खंग मारै कालिका।
भुजंग मारै भैरव।
झपट के मारै दुर्गा।
कहे अलमस्त।
वो ही पस्त।
जो मुझको सतायेगा।

श्मशान में जाकर किसी शनिवार की रात्रि को कोई जलती हुई चिता देखकर समस्त वस्त्र उतार कर उसके समक्ष बैठ जाएं और इस मंत्र का जाप करें। सूर्योदय से पहले ही उस चिता को प्रणाम करें और उसका कोयला तथा राख लेकर आ जाएं।

अपने शत्रु के पांव तले की धूल लेकर उसमें राख मिलाकर पीली मिट्टी की शत्रु की प्रतिमा बनाएं। इसको कोयले के ढेर पर रखकर श्मशान वाला कोयला इसके हृदय पर रख दें और पुनः कोयला से ढककर उसे सुलगा दें और साथ ही साथ ऊपर बताए मंत्र का जाप करते रहें।

जैसे-जैसे प्रतिमा ताप पायेगी वैसे-वैसे शत्रु ताप से पीड़ित होकर तड़पेगा। जैसे ही पूर्ण ताप पाकर चटकेगी, शत्रु भी मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 5

(शत्रु को प्रंताड़ित करना)

मंत्र–

ॐ नमः काल भैरों।
कालिका तीर मार।
तोड़ वैरी की छाती।
तोड़ हाथ।
काल जो काढ़े बत्तीसी।
यदि यह काज न करे।

नौखनी योगिनी का तीर छूटे।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

काली कनेर के 108 पुष्प, गुग्गुल के छोटे-छोटे 102 टुकड़े लेकर किसी श्मशान में जाकर जलती हुई चिता के ऊपर की तरफ दक्षिण मुखी होकर खड़े हो जाएं और यह मंत्र जपते हुए उपरोक्त सामग्री से 108 आहुति दें। इच्छा अवश्य ही पूर्ण होगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 6

(शत्रु को पछाड़ना)

मंत्र–

ॐ नमो वीर तो हनुमन्त वीर।
भूरि मूठि चलावै तीर।
मैं की रुख नाखी तोड़ि।
लोहु सोखि।
मेरा वैरी तेरा भक्षिह।
तोड़ि कलेजा चाख।
सब धर्म की हाथई बजे धर्म की लाल में।
बलि तुम्हारे कहां गए।
भूरे बाल।
उलटि पछाड़।
पछाड़े तो माता अज्जनी की आन।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

होली खेलने से पहले वाली रात अर्थात् पूर्णिमा की रात को नग्न होकर किसी निर्जन स्थान में इस मंत्र की दस माला जपें। इसके बाद थोड़े से उड़द लेकर इस मंत्र से अभिमंत्रित करके जिसे मारेंगे, वही पछाड़ खाकर गिर पड़ेगा।

सिद्ध शाबर मंत्र : 7

(शत्रु मारण मंत्र)

मंत्र–

ॐ नमो काला भैरों मसान वाला।
चौंसठ योगिनी करै तमाशा।
रक्त बाण।
चल रे भैरों कालिया मसान।
मैं कहूं तोसों समुझाय।
सवा पहल में धुनि दिखाय।
मूवा मुर्दा, मरघट बास।
माता छोड़े पुत्र की आस।
जलती लकड़ी धुकै मसान।
भैरों मेरा बैरी तेरा।
खान से ली सिंगी रूद्रबाण।
मेरे बैरी को नहीं मारो तो राजा रामचन्द्र
लक्ष्मण यती की आन।
शब्द सांचा।
पिण्ड कांचा।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

श्मशान ले जाते हुए मुर्दे की हांडी प्राप्त कर लें और ध्यान रखें कि मुर्दा कहां फेंका जा रहा है, रात्रि में वहां जाकर उसकी चिता की आग पर वह हांडी गर्म करें। जब हांडी गर्म हो जाए तो उसमें कुछ उड़द डाल दें। यह उड़द भुन जाएंगे। हांडी किसी साफ जगह पर उलट कर जले हुए उड़द अलग कर लें और फूले हुए उड़द अलग कर लें। जले हुए उड़द लेकर इक्कीस बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करें और फिर शत्रु को मारें।

यह सारी क्रिया प्रातः बासी मुख ही करें।

सिद्ध शाबर मंत्र : 8

(शत्रु का सिर फोड़ना)

मंत्र–

इम्नामीन।

सलास मातीन।

इस मंत्र के एक हजार जाप प्रतिदिन करें और 40 दिन तक निरन्तर करें। इसके बाद कुम्हार के चाक की मिट्टी या शत्रु के पांव तले की मिट्टी ले आएं। इस मिट्टी में थोड़ा-सा रंग मिलाकर शत्रु की त्वचा वाला रंग बना लें और फिर मिट्टी की एक प्रतिमा बना लें। श्मशान से हड्डियां प्राप्त करके छोटी-सी एक माला बना लें। इस माला पर एक बार मंत्र का जप करें और फिर प्रतिमा के सिर पर एक जूता मारें। यह क्रिया करते रहें। जप करें और फिर एक जूता मारें। यह क्रिया करने से शत्रु के सिर पर चोट लगेगी। यदि यह प्रयोग 40 दिन तक निरन्तर किया गया तो शत्रु का सिर फूटकर उसकी बोलो राम हो जाएगी।

सिद्ध शाबर मंत्र : 9

(शत्रु को जलाना)

मंत्र–

ॐ नमो आदेश गुरु का।
हनुमन्त बलवन्ता।
माता अञ्जनी का पूत।
हल हलन्ता।
आओ चढ़ चढ़न्ता।
आओ गढ़ किला तोड़न्ता।
आओ लंका जलन्ता बालन्ता भस्म करन्ता।
आओ ले लागूं लंगूर।
ते लिपटाये सुमिरते पटका।
औ चन्दी चंद्रावली भवानी।
मिल गावें मंगलाचार।
जीते राम लक्ष्मण।
हनुमान जी आओ।
आओ जी तुम आओ।
सात पान का बीड़ा चाबत।
मस्तक सिंदूर चढ़ाये आओ।
मंदोदरी सिंहासन डुलाते आओ।

यहां आओ हनुमान।
आया जागते नरसिंह।
आया आगे भैरों किल किलाय।
ऊपर हनुमन्त गाजे।
दुर्जन को फाड़।
अमुक को मार संहार।
हमारे सत्यगुरु।
हम सत्यगुरु के बालक।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

श्मशान से कोयला ले आयें। फिर किसी दीवार पर अपने शत्रु का चित्र बनायें और वहीं पर इस मंत्र का जाप करते रहें। मंत्र का एक-हजार-एक जप जिस समय पूरा हो, श्मशान के कोयले को आग लगाकर वह जलता हुआ कोयला शत्रु के शरीर से जहां-जहां छुवाएंगे-शत्रु भी अग्नि के ताप से वहीं-वहीं जलेगा।

❑❑❑

नवम् अध्याय (९)

अथ महासिद्ध शाबर तंत्र : यंत्र वर्ग

1. गर्भधारण यंत्र

जिस स्त्री के गर्भ न ठहरता हो वह ऋतुकाल के पश्चात् शुद्ध होकर रविवार पुष्य नक्षत्र में सेवती की लेखनी और अर्कपुष्पी के रस से भोजपत्र पर निम्न यंत्र लिखकर (कमर) कटि में बांधे, तो अवश्य गर्भ धारण करे।

ह्रां	≡	ह्रीं
|||	ओं	|||
ह्रः	≡	ह्रं

2. गर्भ न गिरने का यंत्र

इस यंत्र को सोमवती अमावस के दिन अनार की लेखनी और कुंकुम से पीपल के पत्ते पर लिखकर कटि में बांधने से गर्भ नहीं गिरेगा।

क्षः	ठः	क्षः
ठः	ॐ	ठः
क्षः	ठः	क्षः

3. गर्भरक्षा यंत्र

गर्भवती स्त्री इस यंत्र को इतवार या मंगल के दिन चमेली की लेखनी और गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर कटि में बांधे तो गर्भ की संपूर्ण रक्षा हो।

१	९	५	१
६	२	८	४
२	७	३	१

4. सूतिका गृह रक्षा यंत्र

इस यंत्र को चन्द्र पर्व के दिन तांबे के पत्र पर खुदाकर सूतिका गृह में रखने से किसी प्रकार की बाधा नहीं आती।

ॐ	ॐ
ॐ	ॐ

5. जमोगा निवारण यंत्र

चमेली की लेखनी और केशर से भोजपत्र पर निम्न यन्त्र लिखकर बांधने से बालक को जमोगादि की बाधा नहीं होती।

थों
देवतत्तायहुं
ठः ठः ठः

6. शिशु रोदन निवारण यंत्र

अनार की लेखनी और श्वेत पुष्पी के रस से भोजपत्र पर लिखकर बालक के कंठ में बांध देवें तो बालक बहुत रोता नहीं है।

ॐ		ॐ
	क्लीं	
ॐ		ॐ

7. बयारी निवारण यंत्र

गुड़हल की लेखनी और केशर से अश्वत्थ पत्र पर लिखकर बालक के कंठ में बांध देने से बयारी (बाई) का भय नहीं होता।

	२	
१		४
	५	
९		७
	८	

8. भूतबाधा निवारण यंत्र

चमेली की लेखनी और केशर से कमल की पंखुड़ी पर लिखकर बालक के कंठ में बांधें तो भूत बाधा न हो।

क्लीं	ऐं
ह्रीं	ॐ

9. चौंक निवारण यंत्र

चमेली की लेखनी और चमेली के रस से गुरुपुष्य योग में अश्वत्थपत्र पर निम्न यंत्र लिखकर बालक के कंठ में बांध देवें, तो रात्रि को सोते समय बालक चौंके नहीं।

नरसिंहाय हुं
ओं सिद्ध साबराय हां

10. दीठि निवारण यंत्र

अनार की लेखनी और शंखाहुली के रस से कमल पत्र पर लिखकर बालक के कंठ में बांध देने से दीठि का भय नहीं रहता।

९	९	९	९
९	९	९	९

11. टोना निवारण यंत्र

इतवार, मंगल के दिन अनार की कलम और कस्तूरी से भोज पत्र पर लिखकर बालक के कंठ में बांध देने से टोने का भय नहीं रहता।

ठः	ठः
ठः	ठः

12. नजर निवारण यंत्र

सूर्य पर्व के दिन श्वेत अर्क पत्र पर अर्क के रस से अर्क की लेखनी से लिखकर बालक को दिखा कर आग में जलाने से नजर बाधा दूर हो।

सूर्य पूर्व (सूर्यग्रहण)
श्वेत अर्क (मदार, आखा, अकौवा)

ॐ	ॐ
ॐ	ॐ

13. टोना नाशक यंत्र

इस यंत्र को इतवार के दिन सायंकाल अर्क की लेखनी से अर्कपत्र पर लिखकर बालक के ऊपर उतारकर चौराहे पर गाड़ देने से लगा हुआ टोना दूर हो जाता है।

भ्रां	भ्रीं
भ्रौं	भ्रः

14. प्रेतबाधा निवारण यंत्र

कमलिनी पत्र पर चमेली की लेखनी और उसी के रस से लिखकर मंगल के दिन बालक के कंठ में बांध देवें तो प्रेतबाधा न हो।

		१		
	२	९	८	
३	१२	१०	१३	७
	४	११	६	
		५		

15. पूतना निवारण यंत्र

शनि प्रदोष में रुद्रवंती के रस से श्वेत कमल पत्र पर केतकी की लेखनी से लिखकर बालक के कंठ में बांध देने से पूतना की बाधा नहीं होती।

प्रे	त	ग	णा
न्वि	द्रा	व	य
भी	म	मू	र्त्ते

16. चुड़ैल निवारण यंत्र

मंगल के दिन लाल कमल पत्र पर लाल चंदन और लाल अनार की लेखनी से लिखकर बालक के कंठ में बांध देने से चुड़ैल की बाधा नहीं होती।

भै	र	वा
य	न	मः

17. नेत्रबाधा निवारण यंत्र

मंगल के दिन लालचंदन और गुड़हल की लेखनी से ताम्रपत्र पर लिखकर बालक को पहिना दें तो नेत्र बाधा नहीं होती है।

ॐ भास्कर

राय हां

18. कंठ बाधा निवारण यंत्र

रविवार पुष्य नक्षत्र में लज्जावंती के रस से लाल कमल पत्र पर गुड़हल की लेखनी से लिखकर बालक के कंठ में बांध देने से कंठ बाधा नहीं होती।

क्लां	क्लीं
क्लं	क्लः

19. कर्ण शोथ नाशन यंत्र

श्याम कनक के रस से उसी के पत्र पर कामिनी की लेखनी से लिखकर शनि प्रदोष में बालक के कान के समीप बांध देवें तो कर्ण शोथ दूर हो।

ॐ

हनुमते

नमः

20. कर्णबाधा निवारण यंत्र

अभिजीत नक्षत्र और चद्रंपर्व में कस्तूरी और चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के दाहिने हाथ में बांध देवे तो कर्णबाधा न हो।

१७	२७
५७	७७

21. मुखबाधा निवारण यंत्र

सूर्यपर्व अभिजीत नक्षत्र में श्वेत दुर्वा के रस से श्वेत कमल पत्र पर स्वर्ण लेखनी से लिखकर बालक के कंठ में पहिना देने से मुख बाधा न हो।

ॐ

22. मुखबाधा नाशन यंत्र

सोमवती अमावस्या में ब्राह्मी के रस से देशी पान पर उदुम्बरी की लेखनी से लिखकर फिर यंत्र को पीसकर वह रस पिला देने से बालक की मुखबाधा दूर हो।

३	६	६	१
९	१२	१३	८
२	७	७	५

23. सूखा रोग निवारण यंत्र

दीप मालिका स्वाती नक्षत्र में श्वेत शंख पुष्पी के रस और सेवती की लेखनी से श्वेत कमल पत्र पर लिखकर बालक के कण्ठ में बांध देवें तो झुरहा अर्थात् सूखा का रोग न हो।

ऐं	ह्रीं	क्लीं
चा	मु	ण्डा
यै	वि	च्चे

24. सूखा रोग नाशक यंत्र

सूर्य पर्व में रवि के दिन सांप की बांबी की मिट्टी से पृथ्वी पर अनार की लेखनी से निम्न यंत्र लिखकर उसी पर बालक को लिटावें तो बालक सूखे के रोग से मुक्त हो।

१ कालिकायै नमः	२ कालिकायै नमः
३ कालिकायै नमः	४ कालिकायै नमः

25. पेट बाधा निवारण यंत्र

चन्द्रपर्व अभिजीत नक्षत्र में कमलपत्र पर कस्तूरी, गोरोचन और कामिनी की लेखनी से लिखकर बालक के कण्ठ में बांध देवें तो बालक को पेट बाधा न होगी।

ध्रां	ध्रीं	ध्रूं
ध्रैं	ध्रौं	ध्रः

26. गुदारोग निवारण यंत्र

रविवार के दिन मेष की संक्रांति में गोरोचन कुंकुम, रक्तचंदन, केशर, कस्तूरी और चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर बालक की कटि में बांध देवें तो गुदा रोग न होवे।

१०	५०	३०
७०	२५	१००
४०	८०	२०

27. ज्वर निवारण यंत्र

श्याम कमल दल पर स्वर्ण छीरी के रस व स्वर्णपुष्पी की लेखनी से लिखकर इतवार के दिन बालक की भुजा पर बांधने से ज्वर बाधा न हो।

श्री	ऐं	श्री
ध्रीं	श्री	क्लीं
श्री	ह्रीं	श्री

28. शीतज्वर निवारण यंत्र

सुवर्ण के पत्र पर केशर और सुवर्ण की लेखनी से लिखकर दिवामणि योग में बालक को पहिना देने से शीतज्वर की बाधा न हो।

१०	११
११	१०

29. अंतज्वर निवारण यंत्र

पीपल के पत्र पर गंधबहा के रस व कांचनी की लेखनी से लिखकर मंगल के दिन बांध लेने से अंतरा की बाधा नहीं सताती।

८०	११	२०
७७	९९	७७
५३	४०	५०
६६	१०	२७
१२	१७	३०

30. तिजारी निवारण यंत्र

तुलसी पत्र पर नागपुष्पी के रस और हंस के पर की लेखनी से लिखकर भुजा पर बांध लेवें तो तिजारी का भय न हो।

१	भूतेश्वराय ह्रां	५
२	साबराय ह्रूं	४
४	प्रथमाय ह्रीं	२
५	भैरवाय ह्रें	१

31. चौथैया निवारण यंत्र

दीपमालिका की अमावस और मंगल जब पड़े तब अर्द्धरात्रि को अवंरा का बांदा लाकर उसके रस व चंपा की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर बांध लेवे तो चातुर्थिक ज्वर दूर हो।

१७	२७
३१	३१

32. भूतज्वर निवारण यंत्र

चमेली के बांदा के रस से चमेली की लेखनी से पीतशंख पुष्पी के पत्र पर लिखकर इतवार या मंगल को दाहिने भुजा पर बांध लेवें तो भूतज्वर दूर होवे।

९९	७७	२२	११
६६	५५	४४	३३

33. मूठि निवारण यंत्र

पीत कमलपत्र पर सहदेई की जड़ के रस और पीत चमेली की लेखनी से लिखकर दाहिने भुजा पर बांधें तो मूठि का भय न हो।

१	७	६	२	८	९	७
२	१	७	६	२	७	४
३	६		७	६	७	१
४	७	९	१	७	१	१४
५	८	१०	११	१	१२	१३

34. विषमज्वर नाशक यंत्र

शाल वृक्ष के बांदा के रस व अर्जुन की लेखनी से कनक सुन्दरी के पत्र पर लिखकर इतवार या मंगल को बांधें तो विषम ज्वर दूर हो।

यक्षिणणै नमः	नभचारिण्णै नमः
त्रिपुरेश्वर्य्यै नमः	दुगार्ये नमः

35. भूतोन्माद निवारण यंत्र

अगस्त्यक रस व बासंती की लेखनी से चंद्रपर्व में लिखकर बांधें तो भूतोन्माद दूर हो।

१ १ १ १ १

	क:	क:	क:	क:	१
१		ठ:	ठ:	ठ:	१
१	य:	य:	य:	य:	

१ १ १ १ १

36. पिशाचिनी उन्माद निवारण यंत्र

इस यंत्र को शीतलाष्टमी के दिन श्वेत अर्क की जड़ के रस व कर्पूर वृक्ष की लेखनी से अर्द्धरात्रि में लिखकर बांधें तो चुड़ैल आदि से हुआ उन्माद दूर हो।

२	४	९
७	३	५
६	८	१

37. दृष्टि-ज्वर निवारण यंत्र

चन्द्रावती के रस व बकुल की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर इतवार को बांधें तो दृष्टि-ज्वर दूर हो।

क्रूं	क्रीं
क्रां	क्रः

38. चलावा निवारण यंत्र

दीपावली की रात्रि में अंवरा के बांदा और कामिनी की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर बांधें तो चलावे की बाधा दूर हो।

लं	कं	खं	गं	धं
ङः	चं	छं	जं	झं
अं	टं	ठं	डं	ढं

39. सर्वग्रह बाधा निवारण यंत्र

जब कभी रविवार और अनुराधा नक्षत्र में सूर्यग्रहण पड़े तो उस समय इस मंत्र को रुद्रवती के रस व श्वेत दाड़िम की लेखनी से श्वेत कमलपत्र पर लिखकर बांधें तो सर्वग्रह बाधा दूर हो।

रुद्र	त्रिपुरमर्दन	चंडिक पति
भैरव	त्रिशूलधर	ॐ त्रिपुरांत कोफल
शर्व	अमुकशत्रु हनुर	ईशान

40. ब्रह्मराक्षस निवारण यंत्र

इस यंत्र को दीवाली अमावस के दिन अर्द्धरात्रि में अष्टगंध और अरुणकुन्द की लेखनी से ताम्रपात्र पर लिखकर श्मशान में अकेले जाकर धूप-दीप, नैवेद्यादि से अच्छे प्रकार पूजन करें। मार्ग में आते-जाते किसी से बोलें नहीं। फिर लाकर जिस स्थान में बहुत दिन की भी ब्रह्मराक्षस की बाधा हो वहां रक्खें और नित्य अति पूजन करें तो ब्रह्मराक्षस आदि की सब बाधा दूर हो।

६	७	६
७	४	७
५	३	५
१	१	१

41. अरिष्ट ग्रह निवारण यंत्र

शुक्लपक्ष प्रदोष में गऊ के दही और सुवर्ण की लेखनी से ग्यारह सौ विल्वपत्रों पर लिखकर अग्नि में हवन करें तो अरिष्ट स्थान स्थित सर्वग्रह बाधा दूर हो।

ऐं	ह्रीं	क्लीं
चा	मु	ण्डा
यै	वि	च्चे

42. सर्व बाधा शमन यंत्र

इस यंत्र को मृगशिरा नक्षत्र में और मृगशिरा नक्षत्र के सूर्यों में मृगमद और सुवर्ण की लेखनी से मृगछाल पर लिखकर अष्टगंध और गूगल की धूनी देकर और धूप आदि कर नैवेद्य से विधि सहित पूजन कर गृह के मध्य भाग आंगन में गाड़ देवें तो किसी प्रकार की बाधा उसके घर में न आवे।

११	१३	१५
१७	१९	२१
२३	२५	२९

43. देवबाधा निवारण यंत्र

कस्तूरी व सुवर्ण की लेखनी से चांदी के पत्र पर लिखकर प्रतिदिन नियम से पूजन करें तो सब प्रकार की देवबाधा दूर हो।

रा०	ॐ०	म०
दू०	न०	फ०

44. उन्माद निवारण यंत्र

दीपावली की अर्द्धरात्रि में नग्न होकर अकेला श्मशान में जावे और श्मशान भूमि में चिता के कोयले से 108 बार इस यंत्र को लिखे, मुख से बोले नहीं, अन्त में धूप-दीपादि से पूजन कर यंत्र के ऊपर त्रिकोण लोहे का दीपक तिल के तेल से जलाकर रख दे और घर में आकर फिर शुद्ध हो वस्त्र पहिन कर अनार की कलम व अष्टगंध से भोजपत्र पर यह यन्त्र लिखकर बांध दे तो बहुत दिन की भी मृगी रोग की बाधा दूर हो और इसी यंत्र को फिर श्वेत दुर्वा के रस और उसी की कलम से श्वेत कमलपत्र पर लिखकर तांबे के यंत्र में मढ़ाकर धारण करे तो सब प्रकार का उन्माद दूर हो।

ॐ	मथ	ठः	ऐं
ह्रीं	हन	धः	क्लीं

45. उपद्रव निवारण यंत्र

पहले एक वर्ष तक प्रदोष व्रत कर नित्य प्रति 108 बिल्व पत्र पर श्वेत दुर्वा के रस व श्वेत दुर्वा की लेखनी से लिखकर शिव पर चढ़ावें, पीछे एक यंत्र अधिक लिखकर विधान सहित पूजन कर सुवर्ण के यंत्र में रखकर दाहिनी भुजा पर बांध लेवें तो शत्रु का किया हुआ किसी प्रकार का उपद्रव उस पुरुष पर न हो।

१३	२०	२	८
७	३	१७	१६
११	२४	१८	१
४	६	१५	१८

46. शत्रुनाशन यंत्र

लोहे की लेखनी और चिताक्षार की स्याही से 1100 यंत्र नित्य प्रति अर्क पत्र पर लिखकर अग्नि में जलावें तो शत्रु का नाश हो। (अमुक की जगह शत्रु का नाम होगा)

अमुकं
मारय-मारय

47. पशुबाधा निवारण यंत्र

इस यंत्र को श्वेत दुर्वा के रस और गंगापुत्र की लेखनी से पीपल पत्र पर लिखकर पशुओं के स्थान में रखने से पशुओं को किसी प्रकार की बीमारी न हो।

१०	१०
१०	१०

48. सिर दर्द निवारण यंत्र

सहदेई के रस और चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर कंठ में धारण करें तो कंठमाला दूर हो और अर्जुन की लेखनी और अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर बांधें तो आधा शीशी व संपूर्ण माथे का दुखना बन्द हो।

४	७	८
६	५	९

49. कामना पूर्ण करण यंत्र

मोर पंख की लेखनी और रुद्रवंती के रस से भोजपत्र पर निम्न यंत्र लिखकर विधि सहित पूजन कर सुवर्ण में मढ़ाकर पास रक्खें। जिस काम को जायें, यंत्र भुजा पर बांधकर जायें तो काम जरूर सिद्ध हो।

श्री	क्री
ह्रां	ह्रीं

50. अकाल गर्भपतन निवारण यंत्र

इस यंत्र को सुवर्ण के पत्र पर हंस पंख की लेखनी और रुद्रवंती के रस से लिखकर एक वर्ष तक विधान सहित धूप-दीप-नैवेद्यादि से पूजन करें और मार्गशीर्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ कर कार्तिक की पूर्णिमा को विसर्जन

करें, उस दिन किसी सुपात्र विद्वान् ब्राह्मण को निमंत्रण कर इच्छानुसार भोजन करवायें, पीछे एक गऊ सफेद सर्व अलंकारों से युक्त कर इस यंत्र के साथ ब्राह्मण को दे देवें तो अवश्य बंध्या स्त्री बड़ा उत्तम पुत्र पावे और मृतवत्सा स्त्री भी इसी युक्ति से सर्व कार्य करे तो निश्चय ही पुत्र चिरायु हो और जिस स्त्री का गर्भ अकाल में किसी उपद्रव से पतित हो जाता हो तो उसका गर्भ स्थिर हो।

		९		
	१	४	१	
१	४	श्री	४	९
	१	४	१	
		९		

51. शत्रु उच्चाटन यंत्र

इस यंत्र को यदि काली अष्टमी को श्यामा वृक्ष की लेखनी और अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर दाहिने भुजा पर बांधें तो किसी जंगली जीव व भूत-प्रेतादि से भय न हो और यदि सुन्दरी की लेखनी और लाजवंती के रस से कमल पत्र पर लिख कर सुवर्ण से मढ़ाकर पास रक्खें तो विषहरी सर्प आदि जीवों से भय न हो और यदि लाल चंदन और अनार की लेखनी से ताम्रपत्र पर लिखकर प्रतिदिन पूजन करें तो महामारी आदि बीमारियों का उसके घर में कभी भय न हो और यदि लोहे की लेखनी और चिताक्षार से कूर्म पृष्ठ पर लिखकर दीपमालिका की रात्रि में शत्रु के द्वार पर गाड़ देवें तो शत्रु का उच्चाटन हो जाये, घर में परस्पर विग्रह हो जाये।

कः	कः	कः	कः
ठः	ठः	ठः	ठः
यः	यः	यः	यः

52. राज सम्मान प्रदाता यंत्र

इस यंत्र को अष्टगंध और तुलसी की लेखनी से श्वेत पीपल पत्र पर लिखकर सुवर्ण से मढ़ाकर भुजा पर बांध कर राजदरबार में जावें तो राजा सम्मान करे।

१०	६०	६०	१०
९०	१२	१३	८०
२०	७०	७०	४०

53. कामिनी कुचबाधा निवारण यंत्र

इस यंत्र को कामिनी के रस और उसी की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर सुवर्ण या चांदी में मढ़ाकर स्त्री हृदय पर धारण करे तो कभी कुच पके नहीं और जिसके दुग्ध न होता हो तो उसके दूध उतरे।

९	९	९	९
९	९	९	९

54. प्रीती वर्द्धन यंत्र

इस यंत्र को दाड़िम की लेखनी और अष्टगंध से श्वेत अश्वत्थ पत्र पर लिखकर स्त्री अपने पास रक्खे तो पति अधिक स्नेह करे और पुरुष अपने पास रक्खे तो स्त्री अधिक स्नेह करे।

ॐ	ऐं
ह्रीं	ॐ

55. बवासीर निवारण यंत्र

श्वेत दूर्वा रस और अनार की लेखनी से निम्न यंत्र भोजपत्र पर लिखकर तांबे के तावीज में मढ़ा कर कटि में धारण करे तो बवासीर रोग से मुक्त हो।

ॐ	भ्रां
भ्रीं	भ्रः

56. कटि पीड़ा निवारण यंत्र

इस यंत्र को लाक्षा रस और लवंग की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर कटि में धारण करें तो कटि पीड़ा न हो।

ॐ	क्रां
क्रीं	क्रः

57. मूकता निवारण यंत्र

इस यंत्र को श्वेत दाड़िम की लेखनी और ब्राह्मी के रस से भोजपत्र पर नाभिपर्यंत नदी में खड़ा होकर लिखें, फिर तट पर रखकर विधि सहित धूप-दीप-नैवेद्यादि से पूजन कर कंठ में धारण करें तो सर्वविधान निधान हो और शास्त्रवाद में जीते और जिसकी जबान से स्पष्ट अक्षर न निकलता हो वह कंठ में धारण करे तो शुद्ध अक्षर निकलने लगें।

श्री शारदायै हुं फट्

58. नकसीर रोग निवारण यंत्र

इस यंत्र को श्यामा तुलसी की लेखनी और उसी के रस से उसी के पत्र पर लिखकर इतवार के दिन कंठ पर धारण करें तो नकसीर रोग से मुक्ति मिले। जिसके न हो वह धारण करे तो उसके कभी नकसीर रोग न हो।

८	२	६	४
१	७	३	५

59. प्रसव रक्षा यंत्र

इस यंत्र को अष्टगंध और अनार की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर तांबे या स्वर्ण के तावीज में मढ़ाकर गर्भिणी स्त्री कटि में धारण करें तो अकाल में बालक न हो अर्थात् पूर्ण नौ मास में ही बालक पैदा हो॥

८ कालिकायै नमः ४	८ कालिकायै नमः ४
४ ८ कालिकायै नमः	४ ८ कालिकायै नमः

60. परदेशी को बुलाने का यंत्र

जो पुरुष परदेश चला गया हो और उसका कुछ भी पता न हो उसके किसी कपड़े पर लाल चंदन और मराल पंख की लेखनी से निम्न यंत्र लिखकर 21 दिन तक बराबर नित्य पूजन करें तो निश्चय ही वह पुरुष शीघ्र घर को लौट आएगा।

यक्षिण्यै नमः	नभचारिण्यै नमः
त्रिपुरेश्वर्य्यै नमः	दुर्गायै नमः

61. शीघ्र शत्रु मारण यंत्र

इस यंत्र को काक पंख की लेखनी और काक के रक्त से लौह पत्र पर बराबर 21 दिन तक प्रतिदिन ग्यारह सौ यंत्र लिखें, मिटावें तो शत्रु का नाश हो। अमुक पुरुष के स्थान पर शत्रु का नाम लिखना चाहिए।

हन अमुक पुरुषं

62. सोते में बड़बड़ाना निवारण यंत्र

इस यंत्र को मोर पंख की लेखनी और कस्तूरी से भोजपत्र पर लिखकर इतवार या मंगल को तांबे में मंढ़वाकर शिखा में धारण करें तो रात्रि को सोते में बर्रावे नहीं॥

१०	५०	३०
७०	२५	१००
४०	८०	२०

63. सर्प विष निवारण यंत्र

इस यंत्र को शिवकांता के रस व चमेली की लेखनी से काले सांप की केंचुली पर लिखकर सर्प को दिखावें तो सर्प निर्विष हो और जो पुरुष सदैव भुजा पर बांधे रहे तो उसे सर्प न काटे और जिसको सर्प ने काटा हो उसे तत्काल इस यंत्र को बांध देवें तो अच्छा हो।

क्षः	श्री	क्षः
श्री	ॐ	ठः
क्षः	श्री	क्षः

64. दांत किसकिसाना निवारण यंत्र

इस यंत्र को माल कांगनी के रस व मोर पंख की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर दीपमालिका स्वाती नक्षत्र और हर्षल योग में स्वर्ण से मढ़वाकर कंठ में धारण करें तो सोते समय दांतों का किसकिसना बंद हो।

१०	९०	५०	१०
६०	२०	८०	४०
२०	७०	३०	१०

65. पागल कुत्ते का विष निवारण यंत्र

रविवार या मंगलवार को मन्मथी के रस और अनार की लेखनी से पलाश पत्र पर लिखकर भुजा पर बांधें तो उसे पागल कुत्ता कभी न काटे और जिसे काटा हो उसके बांध देवें तो विष न चढ़े।

ॐ	ॐ
ॐ	ॐ

66. गंज निवारण यंत्र

कचनार की लेखनी और कुंकुम के रस से भोजपत्र पर लिखकर शिखा में बांधने से बहुत काल का गंज अर्थात् सिर के बाल उड़ना अच्छा हो।

क्लीं	ऐं
ऐं	ओं

67. दन्त पीड़ा निवारण यंत्र

इस यंत्र को लाल अनार की लेखनी और लाल चंदन से लाल रेशमी वस्त्र पर लिखकर कंठ में बांधें तो दांतों की पीड़ा न हो और कृमि सब आप से आप गिर पड़ें और दन्त पुष्ट हों।

ॐ
देवदत्ताय हुं
ठः ठः ठः

68. कर्ण पीड़ा निवारण यंत्र

इस यंत्र को हल्दी और दतूना की लेखनी से बहेर पत्र पर लिख कर और फिर उसे जलाकर कान के समीप धुआं दें तो कान का दर्द तथा बहना बंद हो जाएगा।

ऐं		क्लीं
	ह्रीं	
श्री		ॐ

69. शत्रुंजय यंत्र

सूर्य उदय होने से पहले नित्य नदी में जाकर स्नान करें और किनारे बैठकर अष्टगंध और अनार की लेखनी से एक सौ एक यंत्र भोजपत्र पर लिखकर आटे की गोलियों में भरकर उन गोलियों को जलजीवों को खिलाएं, एक सौ एक दिन नित्य यही साधना करें, पश्चात् पूजन कर स्वर्ण में

मंढ़वाकर दाहिनी भुजा पर धारण करें तो युद्ध में जीते, शत्रु सम्मुख से भाग जावे।

ऐं	ऐं
ऐं	ऐं

70. नेत्र पीड़ा निवारण यंत्र

इस यंत्र को कचनार की लेखनी से और हरिद्रा से कचनार के पत्र पर लिखकर कंठ में धारण करें तो नेत्र कभी दुखें नहीं और जिसके नेत्र उठ आये हों अथवा लाल रहते हों उसे यह यंत्र ताम्र पत्र पर लिखकर दिखलावें तो बहुत शीघ्र अच्छा हो।

५१	५५	३३
७७	२२	१११
४७	८८	२५

71. शास्त्राभ्यास वर्द्धन यंत्र

अष्टगंध और वज्रदंता की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर सूर्यपर्व या सोमवती अमावस्या में कंठ में धारण करें तो पढ़ा हुआ विस्मरण न हो, यदि बालक के कंठ में बांधें तो शीघ्र शास्त्राभ्यास हो।

ओं सरस्वती हुं फट

72. भ्रमी निवारण यंत्र

कर्पूर, अगर, मृगमद और श्वेत चंदन से चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर अष्टधातु के यंत्र में मढ़ाकर कंठ में धारण करें तो भ्रमी अर्थात् घुमनी रोग शीघ्र शांत हो और जो साधारणः सदैव धारण करे तो उसे कभी भी यह रोग न हो।

६६	७७	६६
८७	९४	७८
९	९	९

73. पीनस रोग निवारण

हल्दी और कचनार की लेखनी से काले धतूरे के पत्र पर लिखकर जिस पुरुष को पीनस का रोग हो उसे जला कर सुंघावें तो बहुत शीघ्र अच्छा हो, कृमि तत्काल गिर जावें।

११	९१	५१	४८
६१	२१	८१	४१
२७	७१	३१	१८

74. उदर रोग निवारण यंत्र

इस यंत्र को प्रातःकाल स्नान कर प्रतिदिन लोह पत्र पर घीकुवार के रस और मधूक की लेखनी से लिखकर सविधि पूजन करें तत्पश्चात् यंत्र को धोकर पी लेवें तो ग्यारह दिन में गुल्म, यकृत, प्लीहा, वायु गोला आदि उदर रोग दूर हों।

अ	ग	स्त्य	ऋ
ष	ये	न	मः
प	च	प	च

75. संग्रहणी निवारण यंत्र

इस यंत्र को कचनार की लेखनी और मृगमद से भोजपत्र पर लिखकर कटि में धारण करें तो पुराना अतिसार व संग्रहणी रोग शांत हो और यदि बालक के कटिबंध में बांध देवें तो उदर विकार कभी न हो।

२	५	८
९	७	६
४	३	१

76. शूल निवारण यंत्र

संजीवनी के रस और हरदुआ की लेखनी से कनक पत्र पर लिखकर बांध देने से जलोदर रोग से मुक्त हो और जो सदैव कटि में धारण करे तो जलोदर की बाधा तथा शूल की बाधा न हो।

शूलपाणिने नमः

77. विस्फोटक निवारण यंत्र

चन्द्रपर्व में नाभि पर्यंत जल में खड़ा होकर अष्टगंध व चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के कंठ में बांध देवें तो विस्फोट रोग से भय न हो।

शीतलायै नमः

78. हेरूहा निवारण यंत्र

इस यंत्र को करवीर की लेखनी और अष्टगंध से नागबेलि पर लिखकर जिसके पेट से कृमि या हेरूहा गिरते हों वह मंगल के दिन विधान सहित पूजन कर कंठ में बांध देवें तो अवश्य उस रोग से मुक्त हो।

१०		मी	१०
९०	त्र	श	
२०	य	हुं	४०

79. शत्रु उदर छेदन यंत्र

इस यंत्र को सहदेई की जड़ के रस से और श्वेत कनेर की लेखनी से कूष्मांड के फल पर दीपमालिका मंगल के दिन लिखें, प्रथम धूप-दीप नैवेद्यादि से पूजन कर तत्पश्चात् उस फल को जिसका नाम लेकर चिकवा

की छुरी से काट देवें तो उस पुरुष को गुदा से खून गिरने लगेगा।

१	९	९	१
१	९	९	१

80. जादू निवारण यंत्र

इस यंत्र को प्रथम एक सौ एक दिन तक सांप की बांबी की मिट्टी और अनार की लेखनी से 1100 प्रतिदिन पृथ्वी पर लिखा करें, तत्पश्चात् सिद्ध हुआ जान रुद्रवंती के रस और अनार की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर भुजा पर बांध लें, फिर चाहे जिस जगह चला जावे, दूसरे का जादू या यंत्र-मंत्र उस पर असर न करेगा।

काल भैरवाय
बटुकाय
ऐं

81. अखाड़ा बंधन यंत्र

इस यंत्र को करंजुआ की लेखनी और मृगमद से भोजपत्र पर लिखकर दाहिने भुजा पर बांधें तो कुश्ती में अवश्य जीते और जिस अखाड़े में गाड़ देवें वह अखाड़ा बंध जावे।

हनुमतये
हां

82. श्वास रोग निवारण यंत्र

इस यंत्र को नागार्जुन की लेखनी और हरिद्रा से पद्मपत्र पर लिखकर प्रति मंगल को पूजन कर फिर उस यंत्र को जल में धोकर उसी से कुल्ला करे तो बहुत दिन का हुआ भी श्वास रोग मुक्त हो।

११	११
११	११

83. आसेब जानने का यंत्र

शुद्ध मिट्टी का चौका लगाकर रक्त चंदन और अनार की लेखनी से कोरे कागज पर लिखकर रुई में लपेटकर बत्ती बनावें और कोरे दीपक में कड़वा तेल भरकर उस बत्ती को डालकर जलावें और चौका में धरें। फिर जिस पर आसेब हो उसको सम्मुख बैठा लें और कह दें कि दीपक की ओर देखे। थोड़ी देर के बाद वह दीपक को बुझाने दौड़ेगा या अकस्मात् चिल्ला उठेगा, तब निश्चय कर लेवें कि इसे आसेब का दोष है।

बटुक भैरव
भूताम्विद्रावय

84. गर्भ मोचन यंत्र

इस यंत्र को मिट्टी के कोरे खपरा पर लाक्षारस तथा अनार की लेखनी से लिखकर उस स्त्री को दिखलावें जिसके बच्चा होने वाला हो और न होता हो तो बालक तुरंत पैदा हो।

११	११	११	११
११	११	११	११

85. भूत दिखाई पड़ने का यंत्र

इस यंत्र को कच्छप की पीठ पर स्याही के कांटे और गेरू से लिखकर अर्द्धरात्रि में विधान से पूजन करें, फिर जिसके घर में गाड़ देवें वहां सब भूत दिखलाई पड़ें और जिस पुरुष को दिखला देवें उसे चारों ओर भूत ही दिखाई पड़ें।

१५	१५
१५	१५

86. दृष्टि बन्द करण यंत्र

इस यंत्र को दीपमालिका की अर्द्धरात्रि में अश्वत्थ वृक्ष के नीचे बैठकर कुंकुम और कचनार की लेखनी से ताम्रपत्र पर लिखकर धूप-दीप-नैवेद्यादि

से पूजन कर, फिर सिद्ध हुआ जान जब चाहें जिसे लिखकर दिखा दें तो दृष्टि बंद हो जावे।

कः	भः	जः	खः
प्रः	ऐं ह्रीं	क्लीं	रः
गः	यः	नः	घः

87. राजा वशीकरण यंत्र

इस यंत्र को श्वेत गऊ के दुग्ध और लाजवंती के रस से सारस पंख की लेखनी से श्याम कमलपत्र पर लिखकर प्रदोष व्रत कर बारह-महीने तक एक सौ ग्यारह यंत्र शिव पर चढ़ावें, फिर सिद्ध हुआ जान तांबे के तावीज में मढ़ाकर भुजा पर बांधें तो राजा वश में हो।

वश	भू	मनाय
श्री	प	शारदे
ह्रीं	सिं	क्लीं

88. स्वर बंधन यंत्र

इस यंत्र को मंगल के दिन सरस्वती वृक्ष की लेखनी तथा उसी के रस से श्वेत कमलपत्र पर लिखकर एक सौ इक्कीस दिन तक नित्य 108 यंत्र लिखकर सिद्ध करें, पश्चात् विधान से पूजन कर कंठ में धारण करें तो गायन विद्या में निपुण हो, उसके सम्मुख और कोई गायन न कर सके।

गन्धर्वेभ्यो
नमः हुं फट

89. सर्प निवारण यंत्र

इस यंत्र को मिट्टी के कोरे खपरे पर प्राचीन अर्थात् पांच सौ वर्ष की इमारत के कोयला की स्याही और लाल कनेर की लेखनी से लिखकर जिस घर में सर्प का वास हो वहां रख देवें तो सर्प उस स्थान में फिर कदापि न आवे और यदि यही यंत्र सर्प को दिखला देवें तो सर्प अंधा हो जावे।

४४	७७	८८
६६	५५	९९

90. गृह उपद्रव निवारण यंत्र

इस यंत्र को लाल वस्त्र पर उद्दालक की लेखनी और केशर से लिखकर बांस में बांधकर सोमवती अमावस्या या सूर्य पर्व में जिस स्थान के ऊपर लगा देवें तो उस स्थान पर शत्रु का किया हुआ किसी प्रकार का उपद्रव न हो सके।

११ कालिकायै नमः श्री	११ कालिकायै नमः श्री
११ श्री कालिकायै नमः	श्री ११ कालिकायै नमः

91. स्वामी वशीकरण यंत्र

इस यंत्र को श्वेत कचनार की लेखनी और हरिद्रा से मंगल के दिन भोजपत्र पर लिखकर दाहिनी भुजा पर बांधें तो स्वामी सदैव वश में रहे और उसी का कहा माने।

१ १

यं	रं
मं	यं

१ १

92. जुआ जीतने का यंत्र

इस यंत्र को परेवा के पंख की लेखनी और हरिद्रा से भोजपत्र पर लिखकर दाहिनी भुजा पर बांधकर जुआ खेलें तो अवश्य जीतें।

ऐ यक्षिरायै नमः	मं नभचारिण्यै नमः
रं त्रिपुरेश्वर्य्यै नमः	यं दुर्गायै नमः

93. वाद्यस्फोटन यंत्र

इस यंत्र को मंगल के दिन श्मशान के कोयले और लोहे की लेखनी से भेड़िया के चर्म पर लिखकर उसकी ढोल मढ़ाकर बजावें तो जहां तक उसका शब्द जावे वहां तक सब ढोल फट जावें।

१५	२५	१५
२५	१	२५
१५	२५	१५

94. मूषक निवारण यंत्र

इस यंत्र को मिट्टी के कोरे खपरा पर लाख की स्याही और अनार की लेखनी से इतवार या मंगल को लिखकर जिस घर में या जिस खेत में चूहे हों गाड़ देवे तो चूहे भाग जावें॥

रा०	क्लीं	म०
ह्रीं	न०	फ०

95. चोरी गया धन मिलने का यंत्र

इस यंत्र को अर्कपत्र पर चिनचिना की लेखनी और नीम के रस से इतवार के दिन लिखकर एक सौ ग्यारह बार अग्नि में जलावे तो चोरी का गया हुआ धन मिले और चोर स्वयं ही आकर हाजिर हो।

१	श्री	श्री	१
१	श्री	श्री	१

96. धन प्राप्ति करण यंत्र

इस यंत्र को जैतून की लेखनी और श्वेत गूंजा के मूल के रस से भोजपत्र पर प्रति मंगल को अन्त की संख्या तक लिखें, लिखते समय किसी से बोले नहीं। इक्कीसवें मंगल को सिद्ध हुआ जान अष्टगंधादि से धूप-दीप करके फिर उस यंत्र को दाहिनी भुजा पर बांधे तो अकस्मात् अपने आप ही धन की प्राप्ति हो।

१	७	६	२	८	९	९
५	१	७	६	२	७	४
७	६	१	७	६	७	१
४	७	६	१	७	१	१४
१	२	४	५	७	६	१

97. मुकदमा जीतने का यंत्र

इस यंत्र को हंस के पंख की लेखनी और शिवकान्ता के रस से पीत कमल पत्र पर लिखकर रविवार के दिन विधान से पूजन कर दाहिने भुजा पर बांधकर जिस हाकिम के सम्मुख जावे वह वश में हो और मुकदमा जीते।

श्री राम	श्री लक्ष्मण
श्री हनुमान	श्री सीता

98. महामोहन यंत्र

प्रथमतः इस यंत्र को चांदी के पत्र पर श्वेतमाधवी की लेखनी और अष्टगंध से लिखकर छः मास तक प्रतिदिन विधान से पूजन करें (अमुक के स्थान पर नाम होगा) अनंतर केशर और अनार की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर कंठ में धारण करें तो वह पुरुष या स्त्री वश में होगी जिसका नाम लिखा है।

मोहनी
अमुकं मोहय

99. सर्वकष्ट निवारण यंत्र

गोरोचन और सुंगधा की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर रविवार को विधि सहित पूजन कर दाहिनी भुजा पर बांध लेवें तो सब कष्ट दूर हों।

२

१	अजितां जपाम:	७
५		९

८

100. आकर्षण यंत्र

अमुकमाकर्षयाकर्षय॥

इस यंत्र को सुवर्ण पत्र पर हरिद्रा और जैतून की लेखनी से लिखकर प्रतिदिन पूजन कर अमुक के स्थान पर जिसका नाम लिखे वह शीघ्र ही प्राप्त हो।

क्रीं	क	क्रीं
आ	२२	र्ष
क्रीं	य	क्रीं

101. बन्दी मोचन यंत्र

इस यंत्र को चमेली के बांदा के रस और चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर इक्कीस मंगलवार के व्रत करके प्रति मंगलवार को सवासेर गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर इक्कीस पुए घी में बनाकर पांच पुए बंदरों को और पांच पुए लाल गऊ को और पांच पुए कुमारियों को खिलावें। यंत्र को धूप-दीप कर छ: पुओं का भोग लगावे, सायंकाल को खाएं, पृथ्वी में ऊर्ण बिछाकर शयन करें, फिर सिद्ध हुआ जान स्वर्ण में मढ़ाकर भुजा में धारण करे तो उसे कभी राजदण्ड नहीं मिलेगा। जो पुरुष कैद में हो उस

के पास यह यंत्र पहुंच जावे तो वह तत्काल छूट जावे॥

आकर्षय	आकर्षय
आकर्षय	आकर्षय

102. स्तंभन यंत्र

इस यंत्र को ढाल पर लोहे की लेखनी और लाख के रस से दीवाली की अर्द्धरात्रि में लिख कर विधान सहित पूजन करें, फिर उस ढाल को देखते ही शत्रु का सर्वांग स्तंभन हो जाये और जिस के सम्मुख वह यंत्र पड़ेगा उसी के अंग स्तंभित हो जावेंगे।

देवदत्तं स्तंभय
ओं ह्रीं ऐं क्लीं

103. व्यापारवर्द्धक यंत्र

इस यंत्र को ताम्रपत्र पर गोरोचन और हंस पंख की लेखनी से प्रतिदिन प्रातःकाल लिखकर धूप-दीपादि से पूजा करें तो अवश्य ही व्यापार में वृद्धि हो।

वर्द्धय	ऐं	वर्द्धय
ऐं	अन्नपूर्णे	ऐं
वर्द्धय	ऐं	वर्द्धय

104. यात्रा निवारण यंत्र

इस यंत्र को अर्क पत्र पर क्षीरी की लेखनी और हरिद्रा से लिखकर (अमुक स्थान में यात्रा करने वाले का नाम होगा) किसी पत्थर के नीचे दबा दें तो यात्रा रुक जावे।

क्लीं	क्लीं	क्लीं	क्लीं
क्लीं	अमुकं	निवारयतु	क्लीं
क्लीं	क्लीं	क्लीं	क्लीं

105. शत्रु दल विचलन यंत्र

इस यंत्र को इन्द्रायणी की लेखनी और लाजवंती के रस में मृगमद मिश्रित कर नगाड़े के ऊपर लिखकर विधान सहित पूजन कर शत्रुदल के सम्मुख बजावें तो शब्द सुनकर शत्रु दल भाग जाये।

मोहय	श्री	श्री	मोहय
१	शत्रुदलंचालय		१
मोहय	श्री	श्री	मोहय

106. अग्नि निवारण यंत्र

इस यंत्र को ताम्रपत्र पर अष्टगंध और पीतक्षीरी की लेखनी से लिखकर पानी में डुबो देवें और यह मंत्र पढ़ते जावें **ॐ हुताशने ज्वालोनले शान्त शान्त शान्त** अग्नि तत्काल शान्त हो जाएगी।

८	९	७
११	अग्निशमय	१६
११	४	१०

107. जिह्वा कीलन यंत्र

इस यंत्र को लोहे की लेखनी और शमी के कोयले की स्याही से सफेद पत्थर पर लिखकर रख लेवें, फिर इस मंत्र से जिसका नाम लेकर पीत सरसों यंत्र पर छोड़ें उसकी जिह्वा कीलन हो जाये **ह्रीं उच्छिष्ठ गणपतये हां अमुकं रसनां कीलयेति।**

जिह्वा मरेः कीलय कीलय कालिके

108. जल स्तंभन यंत्र

इस यंत्र को शीशे पर हीरे की लेखनी और अष्टगंध से लिखकर विधान

सहित पूजन करें और जल के सहस्र घट चढ़ावें, अनन्तर जहां से जल लौटाना हो वहां पृथ्वी पर रख दें तो फिर जल आगे नहीं बढ़ेगा।

स्तंभयस्तं भय वनं

109. जल पर चलने का यंत्र

नरक चतुर्दशी के संध्या समय शीशम के वृक्ष के नीचे जाकर गूगल की धूप दें और दही-भात की नैवेद्य धरकर चले आवें, फिर दीपमालिका की अर्द्धरात्रि में नग्न होकर वृक्ष की शाखा या वृक्ष आवश्यकतानुसार काटें, घर से कोरे सेरवा में सरसों के तेल का दीपक जलाये लेता आवे, वह वृक्ष के नीचे रख दे, वृक्ष को काटकर ले आवे। प्रतिपदा में उसकी पादुका बनवाकर उनमें यह यंत्र लोहे की कील से खोदे, फिर पहिनकर अथाह जल में चला जावे, पादुका नहीं डूबेगी।

६५	५	२५	४५
७५	१५	३५	५५

110. बनहाइनि बुलाने का यंत्र

इस यंत्र को पुराने जूते पर चिताक्षार और काक के पंख से लिखकर इतवार मंगल को पृथ्वी पर पटकें तो बनहाइनि तत्काल आवै और नग्न हो जाये।

१	१	१	१
१	आकर्षय:		१
१	१	१	१

111. शत्रुतापन यंत्र

अपने बांयें पैर की धूल पानी में डालकर लोह शलाका से इस यंत्र को अर्कपत्र पर लिखकर (हीं छिन्नम अस्ति के अमुकं, तापनं कुरू-कुरू) इस मंत्र को पढ़कर आग में जलावें तो शत्रु को ताप चढ़ आवे। अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारण करना होगा।

ॐ हनुमते महामर्कटाय। ह्रां

112. नौका स्तंभन यंत्र

इस यंत्र को लौह पत्र पर शमी की लेखनी और नील की स्याही में घुघुआ का रक्त मिलाकर मंगल के दिन ठीक अर्द्धरात्रि में लिखकर धूप-दीप से पूजन कर यंत्र के सम्मुख श्वेत छाग का बलि प्रदान कर देवें, फिर जिस नौका पर वह यंत्र रख दें अथवा नदी के किनारे नौका से कुछ आगे यंत्र लेकर खड़ा हो, नौका आगे न चलेगी।

ध्रीं	ध्रीं
ध्रीं	ध्रीं

113. परस्पर विरोध कराने का यंत्र

इस यंत्र को मंगल या रविवार को काक रक्त और लोहे की लेखनी से काक पंख पर लिखकर अर्द्धरात्रि के समय द्वार की देहली के नीचे गाड़ देवें, परस्पर विरोध हो जायेगा।

विद्वेषकारिणी विद्वेष्टारं विद्वेषय विद्वेषय

114. पति वशीकरण यंत्र

इस यंत्र को रजक की कन्या प्रथम रजस्वला के रजोरक्त मार्जित वस्त्र पर छछूंदर के रक्त और काक पंख की लेखनी से लिखकर प्रति मंगल संध्या समय पति का नाम लेकर स्त्री अग्नि में जलावे। पांच मंगल तक यह कार्य करने से पति अवश्य वश में हो जाएगा और फिर कभी स्त्री के विपरीत न होवे।

ॐ यक्षिणि
पति
वशमानय

115. स्त्री वशीकरण यंत्र

इस यंत्र को किसी ऊनी वस्त्र पर कमलाक्ष की लेखनी और अष्टगंध से मंगल या रविवार को विधि सहित पूजन कर एकादश आहुति खीर की अग्नि में देवें, मंत्र यह है **अमुकीं वश मानय** (अमुक स्थान पर वर्ण व गोत्र सहित स्त्री का नाम उच्चारण होगा) एकादश मंगलों तक यही नियम करता जावे, बीच में बन्द न करे, अवश्यमेव स्त्री वश में हो जाएगी।

ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	अमुकीं	ॐ
ॐ	वश	ॐ
ॐ	मानय	ॐ

116. कड़ाही बांधने का यंत्र

नकुल की लेखनी और नकुल के रक्त से लोहपत्र पर लिखकर कड़ाही के नीचे गाड़ देवें, कड़ाही न तपेगी।

८८	९९	९९	८८
ऐं	ऐं	ऐं	ऐं
८८	९९	९९	८८

117. ओले रोकने का यंत्र

इस यंत्र को कदम्ब की लेखनी और मृगमद से भोजपत्र पर लिखकर जिस जगह रख दें उस जगह ओले फिर न गिरेंगे।

१५	१५	१५
१५	१५	१५
१५	१५	१५

118. दामिनी निवारण यंत्र

इस यंत्र को करबीर की लेखनी और गेरू से मृगछाला पर लिखकर सदैव विधान सहित पूजन करें, जिस स्थान पर यह यंत्र होगा एक योजन पर्यन्त तक बिजली न गिरेगी।

बज्रभीतिं शमय

119. चलता कोल्हू बंद करने का यंत्र

इस यंत्र को मंगल या रविवार को चमगादड़ के रक्त और साही की लेखनी से भैंसा के चर्म पर लिखे और अर्द्धरात्रि के समय पूजन कर कंरज की धुनी देकर कोल्हू के नीचे गाड़ देवें तो कोल्हू बन्द हो जावेगा।

का	क्लीं	हा
म	दा	यै

120. पशु का दूध रोक देने का यंत्र

साही के रक्त व कांटे से ऊंट के चर्म पर लिखकर इतवार को अर्द्धरात्रि में नींबू पत्र की धूनी देकर फिर पशु के स्थान में गाड़ देवें, पशु का दुग्ध न उतरेगा।

१		६		८	९	
५		७		२	७	
७	६	१		६	७	
४	७	९		७	१	
	२	४		७	९	१

121. कुम्हार का आवा न पकने का यंत्र

इस यंत्र को मंगल के दिन कच्छप की पीठ पर बकरे के कान के रक्त व लोहे से लिखकर आवा में डाल देवे तो आवा न पकेगा।

७७७	९९९
८८८	६६६

122. चुड़ैल या भूत-प्रेत बकरवाने का यंत्र

गिद्ध पंख की लेखनी और ढांक के कोयले की स्याही से काले वस्त्र पर लिखकर उसका पलीता बनाकर नीम की मींगनी के तेल से डुबोकर उस पलीता को जलावें और नीचे पानी का बर्तन रख लेवें उसमें टपकता जावे और जिसके भूत-प्रेत लगा हो उसे सम्मुख बैठा लेवें, पलीता की ओर देखते ही वह आप से आप बकरने लगेगा।

ओं काल भैरवाय बटुकाय ऐं

123. बरहा बांधने का यंत्र

यह यंत्र कर्णिकार की लेखनी और चिन्तामणि के रस से अर्कपत्र पर लिखकर जिस जगह बरहा में गाड़ देवें वहां से आगे पानी न बढ़ेगा।

ह्रीं ह्रूं ह्रां	ह्रीं ह्रूं ह्रां
ह्रीं ह्रूं ह्रां	ह्रीं ह्रूं ह्रां

124. कुम्हार का चाक बंद करने का यंत्र

खरगोश का रक्त और लोहे की लेखनी से गोह के चर्म पर इतवार को अर्द्धरात्रि में लिखें, कुम्हार के चाक के नीचे की मिट्टी योजित कर सरसों के तेल व सरसों की धूनी देकर कुम्हार के चाक के नीचे गाड़ देवें, चाक न चलेगा।

रा	क्लीं	म
ह्रीं	न	फ

125. अन्तर्ध्यान हो जाने का यंत्र

इस यंत्र को दालभ्य की लेखनी और अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर मंगल या रविवार को सिद्ध कर लें, यंत्र नदी के मध्य भाग में रात्रि के समय नौका पर बैठकर लिखे, फिर जो पुरुष इस यंत्र को पास रखे जहां से चाहे वहां से अन्तर्ध्यान हो जावे।

ह्रीं यक्षिण्यै	ह्रां नभचारिण्यै
ह्रीं त्रिपुरेश्वर्य्यै	ह्रीं दुर्गायै

126. सिद्ध होने का यंत्र

इस यंत्र को ब्रह्मचारी होकर पृथ्वी पर मृग चर्मासन पर बैठकर प्रतिदिन 1100 यंत्र अनार की लेखनी और अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखें और धूप-दीप नैवेद्यादि से पूजन कर नदी के प्रवाह में छोड़ आवें, एक वर्ष पर्यन्त यही क्रिया करने से निश्चय वह पुरुष सिद्ध हो सकता है।

हं	श्रीं	श्रीं	हं
हं	श्रीं	श्रीं	हं

❑❑❑

दशम् अध्याय (10)

॥अथ महासिद्ध शाबर तंत्र॥

॥तन्त्र वर्ग॥

॥ गर्भ धारण हेतु फल, घृत ॥

त्रिफला, महुरेठी, कूट, दोनों हल्दी, कुटकी, बायविडंग, पीपरि मेथा, कायफल, मेदा, महामेदा, काकोली, असगंध, सरिवन, पिथवन, मकरा, सौंफ, हींग, रासन, दोनों चंदन, चमेली के फूल, वंशलोचन, कमल, शक्कर, अजमोद, दतून ये दवा सब तोला-तोला भर लें और एक रंग के बछड़ा वाली गाय का घी दवाओं का चौगुना और उसका चौगुना दूध बिनुवांकंडा की आंच में मंद-मंद काढ़ा कर पकावें, फिर मिट्टी या तांबे के पात्र में रख छोड़ें, सुन्दर तिथि-मुहूर्त देखकर जो स्त्री इसका सेवन करे, इसके प्रभाव से बन्धया के पुत्र हो और मृतवत्सा का पुत्र चिरायु हो।

॥ सूतिका गृहरक्षा ॥

इतवार या मंगल को मरे हुए वानर की खोपड़ी सूतिका घर में रखने से कोई बाधा नहीं आती।

॥अन्य॥

शाम-सवेरे अष्टगंध गूगल का धुआं करने से किसी प्रकार की बाधा नहीं आती।

॥ बालक रोवे नहीं ॥

इतवार या मंगल को नीलकंठ पक्षी का पंख लाकर जिस चारपाई में बालक सोता हो उसमें खोंस देवे तो बालक रोवे नहीं।

॥ जमोगा ॥

सफेद कबूतर का जोड़ा घर में रखने से जमोगा की बाधा नहीं आती।

॥अन्य॥

देशी साबुन मटरा भर बंगला पान के रस में घोटकर पिला दें।

॥अन्य॥

जायफल और कस्तूरी एक रत्ती प्रमाण बंगला पान में घोटकर पिलावें।

॥ बालक की सर्दी दूर हो ॥

सेहुंड़ का पत्ता गुनगुना कर उसका अर्क पिलावें।

॥अन्य॥

व्याघ्र का मांस रत्ती-रत्ती खिलावें अथवा माता के दुग्ध में पीसकर दो रत्ती प्रमाण जायफल पिलावें अथवा समुद्रफेन घिसकर पिलावें।

॥ बालक की नजर बाधा दूर हो ॥

इतवार या मंगल को भिलावे के फल सात या पांच बालक के ऊपर उतार कर चूल्हे में फूंक दें।

॥अन्य॥

अर्द्धरात्रि में चौराहे पर बालक को ले जाकर गर्म पानी से नहलावें अथवा सात अन्न या सात प्रकार की मिठाई सवा सेर बालक के ऊपर उतारा कर चौराहे में धर दें।

॥ गंजापन ॥

शरीफा और कैथा की पत्ती बराबर बांटकर सिर में लेप करें अथवा चमेली के तेल में हाथी दांत की भस्म मिलाकर मलें अथवा कपास के बीज का तेल खाली लगाने से सिर की झाई व गंजापन आदि सब दूर हो।

॥ सिर दुखना बन्द हो ॥

मुचकुन्द के फूल पीसकर मस्तक पर लगावें अथवा हींग और अफीम घिसकर लगाना सर्दी की सिर पीड़ा को गुणकारक है या ईसबगोल का लुआब खतमी के फूलों में मिलाकर लगावें।

॥ आधासीसी ॥

शीतल चीनी और कपूर छः-छः माशे बारीक पीस एक छटांक गऊ

के ताजे घी में भून कर घी मलें अथवा तिल की पत्ती, सिरका या पानी में पीसकर लगाने से गुणकारक है।

॥ नेत्र-रोग ॥

मुण्डी का अर्क मुनक्का पीस छान एक गिलास प्रातः काल पीवे तो नेत्र दुखें नहीं।

मेहंदी की पत्ती पीसकर पैर के नीचे तलुओं में लगावें तो नेत्र दुखना बंद हो अथवा घीगुवार के फट्टा के बीच फाड़ कर आंबा हल्दी पीस कर ऊपर छोड़कर तलुओं में बांध लें।

तम्बाकू के अर्क में फिटकरी, गेरू, अफीम और हर्र बड़ी रगड़कर नेत्र के ऊपर लगावें तो दर्द दूर हो और लाली जाती रहे अथवा गेहूं के आटे का हलुआ अथवा ताजा खोवा गरम कर नेत्र के ऊपर बांधें अथवा कुश की जड़, आंबा हल्दी, अफीम, गेहूं का आटा एक साथ पीस घी में तलकर उसकी टिकिया नेत्र के ऊपर बांधें।

बड़ा लौंग, फिटकरी, बतासा बकरी के दूध में पीसकर लगावें तो पलकों का मोटा होना और नेत्र से पानी बहना आदि बंद हो।

॥ रतौंधी ॥

केला का पानी लगावें अथवा गदहा की लेंडी का रस आंख में लगावें अथवा इलायची का तेल लगाने से रतौंधी दूर हो, प्याज का जल या अदरक का रस लगाना भी रतौंधी को गुणकारक है।

॥ पीनस ॥

नींबू की पत्ती, प्योंदी बेर की पत्ती दोनों बराबर पीस कपड़े पर लपेटकर नाक पर रखना चाहिए, अथवा पथरचटा मय जड़पत्ती के पीसकर नाक में लगाएं तो कीड़ा गिर पड़ें अथवा कुत्ते की जीभ जलाकर थूक में मिलाकर जख्म पर लगाना श्रेष्ठ है। गुर्च और हल्दी कूटकर मीठे तेल में पका कर नाक में टपकाना चाहिये अथवा छिलीं हुई मसूर और अनार का छिलका कूट-छान कर लगाना उत्तम है।

॥ कर्णशूल ॥

मदार के पीले पत्तों का रस गर्म करके कान में टपकाना चाहिए अथवा भांग के पत्तों का रस निचोड़ कर छान लें, फिर गर्म कर कान में टपकावें अथवा नीम की अढ़ाई पत्ती, अजवायन, हल्दी चने बराबर, लड़के के मूत्र में पीसकर गर्म करके दो-तीन बूंद कान में टपकावें अथवा लहसुन में बकरी का पित्ता मिलाकर थोड़े तेल में औटा कर कुछ गर्म कान में टपकाना उत्तम है...सांप की बांबी की मिट्टी, गेरू, अफीम, धतूरे के रस में या मकोय के रस में पीसकर गुनगुना कर कान की जड़ पर लेपकर ऊपर से मदार के पीले पत्ते गरम करके बांधें तो कर्ण शूल व शोथ दूर हो।

॥ मुख-रोग ॥

फिटकरी, शीतल चीनी, छः-छः माशी लेकर खूब महीन पीसकर गर्म पानी में डालकर सुहाता-सुहाता कुल्ला करें अथवा गूलर के दूध में पापरी कत्था और सुपारी घिसकर जीभ पर लगावें...अथवा शीतल चीनी, बंशलोचन, रूमीमस्तगी, गुजराती इलायची, गुर्च का सत, पीपरी छोटी, मिश्री, ये सब दवायें छः-छः माशे ले कूट कर कपड़े से छान कर एक तोला मक्खन के साथ खावें तो जीभ के छालों के लिए फायदेमंद होगा।

॥ दांत की पीड़ा हेतु ॥

फिटकरी, बड़ी हर्र, खट्टे अमार का छिकला, सेंधा नमक बराबर सब एक साथ मिलाकर कूट कर कपड़े से छान कर दांतों में मले, अथवा भुनी लाल फिटकरी व भुनी अफीम, नमक हुलास, काली मिर्च, भुनी सोंठ, चूल्हे का पूता, बकरा की हड्डी की भस्म बराबर ले कूट-छानकर दांतों पर मले अथवा मौलसिरी की छाल की राख दांतों पर मलें अथवा बबूल के पंचांग के काढ़ा की कुल्ली करना दांत की पीड़ा को श्रेष्ठ है। थोड़ा-सा कपूर और हींग दाढ़ के अन्दर भर दें तो कीड़े मर जावें...तम्बाकू और काली मिर्च पीसकर दाढ़ पर मलें ऊपर से कड़वे तेल की कुल्ली करें अथवा भुनी फिटकरी एक तोला, भुना तूतिया 3 माशे, पापरी कत्था 2 तोला कूट छानकर मञ्जन दांतों पर मलना पीड़ा नाशक है और दन्त पुष्टकारक है।

॥ कंखरवारी का यत्न ॥

घी गुवार के पंठा पर आंबा हल्दी सूखी पीसकर डालकर कुछ गुनगुना करके बांधें अथवा पीपल के मुलायम पत्ते घी चुपड़कर गुनगुने करके बांधे अथवा प्याज को पीस-पीस कर उसमें मुर्गी के अंडे के लुआब और आंबा हल्दी, मेथी, अजवाइन पीस मिलाकर घी में तलकर बांधे अथवा पुरानी ईंट बारू पीस छानकर सिरके में मिलाकर गर्म कर बांधें अथवा कुंदुरा पीसकर नमक मिलाकर कुछ गर्म सोहाता हुआ बांधें।

॥ कण्ठ के रोग ॥

सूखा करेला सिरके में पीस गुनगुना लेप करें अथवा तांबे के बीज, गेरू, लाल चंदन, काला जीरा, सिरस की छाल, मसूर, काली मिर्च, काली जीरा, सूखा करेला, सोये के बीज ये सब दवायें बराबर सिरके में पीसकर गुन-गुनाकर कण्ठ में लेप करना शोथ तथा पीड़ा के लिये लाभदायक है। सेमर की छाल जलाकर तिलों के तेल में मिलाकर लेप करें...मेथी और जव का आटा बराबर सिरके में पीसकर कुछ गर्म लेप करें।

वह औषधि जोकि कण्ठ के नासूर और कण्ठमाला को फायदा करे- छिपकली मारकर कड़वे तेल में जलाकर उसका मरहम तेल में जलाकर उसका मरहम जख्म पर लगावें...नीम की गूदी, कंजा की छाल और पिस्ते का दाना अलसी के तेल में मिलाकर जख्म पर लगाना चाहिये।

॥ खांसी का यत्न ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, लोहरस, कुटकी, हर, अफीम, शोधा हुआ धतूरे का बीज, गुजराती इलायची, चिरायता, कपूर, लौंग, जायफल इन सबकी बराबर मात्रा ले कूट कर कपड़े में छानकर सहिंजन के रस में चार पहर घोटकर चना प्रमाण गोली बनाकर मुख में रखें तो खांसी जाये।

बांसा के पंचांग का काढ़ा प्रातः काल पियें तो खांसी श्वास दूर हो अथवा बहेरे का छिलका, मुलेठी, मिश्री बराबर कूट छान कर शहद में सुबह-शाम चाटें, शंख की राख छः माशे पान के बीड़े में खायें तो खांसी दूर हो अथवा कंटकारी के फूल खावें तो खांसी को लाभ करे।

॥ श्वास ॥

बारहसिंगे का सींग जलाकर तीन बार प्याज के रस में बुझावें, फिर उसकी भस्म एक रत्ती प्रमाण बंगला पान में खाये तो श्वास दूर हो अथवा सोंठ, मिर्च, पीपरी अतीस, लौंग, जायफल, जावित्री, अकरकरा, अजवायन ये सब दवायें धेला-धेला भर लें, कूटकर खट्टे अनार को कोलकर उसमें भर मुंह बंद कर ऊपर से कपड़ मिट्टी कर कंडा के अहरा में पकावें, पक जाने पर निकाल कर अनार के सहित कूटकर उसकी गोली चना से दुगनी बनावें, एक गोली सुबह और एक शाम को खाये तो श्वास दूर हो अथवा प्रातः काल कुछ गुनगुना पानी एक लोटा पीकर कै करें, पीछे से मुंह साफ करके अदरक का रस शहद मिलाकर चाटें तो लाभ हो।

॥ उदर-रोग ॥

पीपरी छोटी, सेंधा नमक 3 माशे पीसकर गऊ के माठा में फांके अथवा कूट-जयपाल, जवाखार, सोंठ, मिर्च, पीपरी छोटी, सेंधा नमक, खारी नमक, काला नमक, बच, जीरा, अजवाइन, हींग, सज्जी खार, चीता, चाव इनका चूर्ण गर्म पानी के संग खाने से लाभ होगा, अथवा आदमी बराबर चौड़ा गड्ढा खोदकर उसमें जंगली कंडा भरकर फूंक देवे, फिर उसकी आग निकालकर कुछ गर्म रहे तब रोगी को उसी में बैठावे और कपड़े से सब अंग ढक दे। पसीना आवे तो उसे पोंछे, पीछे सोवा बारू सिरका में पीसकर पेट पर गुनगुना लेप करे तो लाभ हो।

॥ पित्तोदर ॥

निसोत का काढ़ा अंडी का तेल दूध में मिलाकर पीवे अथवा निसोत त्रिफला के काढ़ा में घी डालकर पीने अथवा प्रातः काल त्रिफला की फंकी फांक कर ऊपर से गोमूत्र एक छटांक पीवे।

॥ कफोदर ॥

सोंठ, मिर्च, पीपर छोटी, नागर मोथा इनका काढ़ा गोमूत्र और अंडी का तेल मिलाकर पीवे अथवा लोह चून अंडी के तेल और दूध में पीवे।

॥ अतिसार ॥

धव के फूल एक तोला पीस कर उसे कपड़े में छान कर गो दही का तोड़ उसमें मिलाकर खिलावे अथवा चीनिया गोंद, पापरी, कत्था, चाक्र, मिट्टी और अफीम बराबर पीसकर चना प्रमाण गोली दो घंटे पर देवे तो अतिसार दूर हो अथवा हाऊबेर, धवफूल, लोध, लजालू, कुरैया, धनिया, अतीस, मोथा, गुर्चबेल, सोंठ इनका काढ़ा बनाकर पीवे तो अतिसार दूर हो।

॥ संग्रहणी ॥

छोहारे की गुठली निकाल कर उसमें दो चने के बराबर अफीम धर कपरोटी कर मंद आंच से अग्नि में पका लेवे, फिर पीसकर उसकी गोली जंगली बेर के समान बांध लेवे, तीन घंटा पर एक गोली खिलावे तो दस्त बंद हों और वायु शुद्ध हो अथवा पका कैथ आठ भाग, शक्कर छः भाग, अनार, आमिली बेल, धव के फूल, अजमोद, पीपरी ये सब तीन-तीन भाग मिर्च, सफेद जीरा, धनिया, पिपरामूल, सुगंधबाला, अजवायन, तज, पत्रज, इलायची, नाग केशर, चीत, सोंठ ये सब एक-एक भाग, इन सबका महीन चूर्ण करें, छः माशे गऊ के मट्ठे में खाये तो दस्त बंद होवें अथवा हींग, जहर मोहरा, खटाई, मिरची, अफीम ये सब दवा बराबर ले खरलकर चना बराबर गोली नींबू के रस के साथ ख़ाये तो संग्रहणी दूर हो अथवा अफीम साढ़े तीन माशे, अकाकिया सात माशे झाऊ के फूल चौदह माशे, सामक चौदह माशे, हुबुलास चौदह माशे, बबूल के गोंद के रस में गोली दो माशे की बनाएं एक गोली खाये तो दस्त एक घंटे में बंद हो।

॥ पेट की पीड़ा और अरूचि ॥

यदि पेट में अफारा और भारीपन हो तो नमक मिलाकर गर्म पानी पीकर कै करना चाहिये अथवा पानी गर्म करके साफ बोतल में भरकर डाट बंद कर पेट पर फेरे तो पीड़ा बंद हो अथवा घी में खड़ा लाल मिर्चा जलाकर एक छटांक के अंदाज घी पिलावे अथवा लाल मिर्च गुड़ में लपेटकर खिलावे।

चूर्ण जो कि वायु को शुद्ध करके अग्नि को शुद्ध करके अग्नि को दीप्त करे–सनाय की पत्ती, हर्र, बहेरा, आंवला, काला नमक सब बराबर लेकर कूट लें फिर कपड़े से छानकर नींबू के रस में गोली बांधकर एक

गोली शाम और एक सवेरे खाये तो भूख लगे अथवा गंधक सुधा, आरासुधा, अजमोद, त्रिफला, जवाखार, चीत, सेंधा नोन, जीरा, सोंचर नोन, बायबिंडग, सांभर नोन, सोंठ, मिर्च, पीपरी सब बराबर ले सबके तुल्य बकायन का बकंला ले, प्रथम पारा गंधक कजली करे तब सब एक में मिलाकर जंभीरी के रस में सात दिन घोटे, फिर एक रत्ती की गोली बनाकर खाये तो अजीर्ण जाये और भूख लगे और यदि सोंठ, हर्र और गुड़ के काढ़ा से लेवे तो सब प्रकार की उदर व्याधि दूर हो अथवा सोंठ 1 भाग, मिर्च 2 भाग, पीपरी 3 भाग, सेंधा नोन 4 भाग, सुधा गंधक, आंवरासार 5 भाग नींबू के रस में ख़रल कर 1 रत्ती प्रमाण गोली सुबह, शाम खाये तो अग्नि दीप्त हो, भूख लगे।

सिंगिया 2 टंक, सुहागा 2 टंक, सेंधा नमक 2 टंक, सबको पीसकर पाव भर अदरक के रस में सुखावे, फिर पाव भर दही के तोड़ में सुखावे, फिर पाव भर नींबू के रस में सुखाकर दो रत्ती प्रमाण की गोली बांधें, दो गोली रोज खाये तो अजीर्ण, विशूचिका, पेट का फूलना, बायगोला, प्लीहा, गुल्म, शूल आदि सब शांत होये और भूख लगे।

॥ प्लीहा और बायगोला ॥

प्रातः काल गोमूत्र का सेवन करे अथवा घी गुवार का गाभा एक तोला हल्दी के चूर्ण के साथ खाये तो प्लीहा और बायगोला का नाश हो।

॥ कृमि-रोग ॥

शोधापारा 1 टंक, गंधक 2 टंक, अजवायन 3 टंक, बकायन का बकला 4 टंक, पलास पापड़ा 5 टंक, बकायन के बीज 2 टंक ये सब दवा पीसकर अढ़ाई टंक रोज़ पांच टंक शहद में चाटें अथवा बायबिडङ्ग, सेंधा नमक, ज़वाखार, कसीला, हर्र सब बराबर ले कपड़े से छानकर गाय के छाछ में दो टंक खाये अथवा बायबिडङ्ग का चूर्ण शहद में चाटे।

॥ पेचिस ॥

गऊ के दही में रार, आम की गुठली, बेल का गूदा पीसकर मिलाकर पिये अथवा गन्ने को भूनकर उसको चूसे तो सब प्रकार की पेचिस दूर हो।

॥ पाण्डुरोग ॥

लोहासार सात दिन तक गोमूत्र में पकावे, फिर पीसकर 1 टंक रोज गुड़ के साथ खाये अथवा पुनर्नवा, कचूर, त्रिफला व त्रिकुटा, चाव, पीपरामूल, चीत, देवदारू, सोनामाखी, दारूहल्दी, नागर मोथा, मजीठ, कचूर, निसोत, कुठदंती, इन्द्रयव, कुटकी, काकरासिंगी, कायफल, अजवायन, सब टंक-टंक भर ले, सबसे दूना मंडूर लेकर अठगुने गोमूत्र में पकावे, गोली एक टंक प्रमाण माठा में खाये तो असाध्य पाण्डुरोग भी अच्छा हो अथवा त्रिकुटा, तज, कीटी बेर की गुठली, मिर्च, सोनामाखी, ये सब दवा बराबर लेकर कूट लें, फिर कपड़े से छानकर शहद में गोली बांधें, 4 टंक की एक गोली प्रातः काल माठा के साथ खायें तो पाण्डुरोग का नाश हो।

॥ हिचकी ॥

पिपरी, बंशलोचन, गुजराती इलायची, तज, मिश्री यह सीतोपलादि नामक चूर्ण शहद में चाटे तो सब प्रकार की हिचकी दूर हो अथवा भटकटैया का पंचांग चार सेर चौगुने जल में औटावे, जब चौथाई रहे तब उसमें ये दवायें डाले, गुर्च, चाव, चीता, मोथा, काकरासिंगी, त्रिकुटा, जवासा, भारंगी, कचूर, प्रत्येक पल-पल और शक्कर बीस पल, घृत आठ पल, शहद चार पल, बंशलोचन, पिपरी चार पल मिलाकर उत्तम पात्र में रख छोड़े, फिर एक तोला सुबह-शाम खाये तो हिचकी, श्वास, कास का नाश करे।

॥ स्वर-भेद ॥

काली मिर्च डालकर घृत एक छटांक पीवे अथवा जायफल, जावित्री, कस्तूरी, लौंग, अकरकरा, मिर्च, केशर ये सब बराबर ले बंग्लापान के रस में घोटकर मटरा बराबर गोली सुबह-शाम खाये तो स्वर भेद जाये अथवा गेहूं के आटे का हलुआ में सरी गरी और आंबा हल्दी पीसकर मिला देवे, फिर थोड़ा गर्म कण्ठ के ऊपर बंग्लापान पर धरकर बांध लेवे तो स्वर-भंग ठीक हो जाये अथवा कासनी मुलहठी, काली मिर्च, बड़ी इलायची, मुनक्का, गुर्च, मिश्री प्रत्येक छः-छः माशे ले कूटकर एक पाव पानी में जोश देकर कुछ गुनगुना पिये।

॥ तन्द्रा ॥

सेंधा नोन, कपूर, सरसों, मैनसिल, पीपरी महुआ, कायफल ये सब घोड़े की लार में घोटकर अंजन करे तो तन्द्रा दूर हो।

॥ प्यास ॥

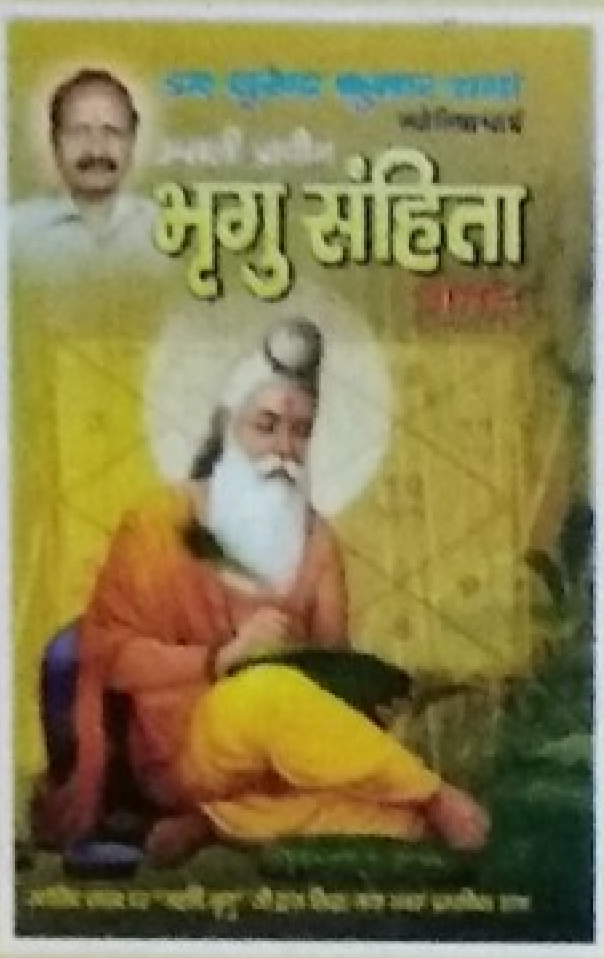
गर्म पानी के पीने से सब प्रकार की तृष्णा दूर होती है अथवा खस, श्वेत चन्दन, धनिया, धान की खील; मुलहठी, छः-छः माशे ले पीस-छानकर पैसा भर शहद डाल कुछ गुनगुना पीवे अथवा नारियल की जटा, मुनक्का, गुजराती इलायची इनको भूनकर पीसकर दो अंगुली शहद में चाटे।

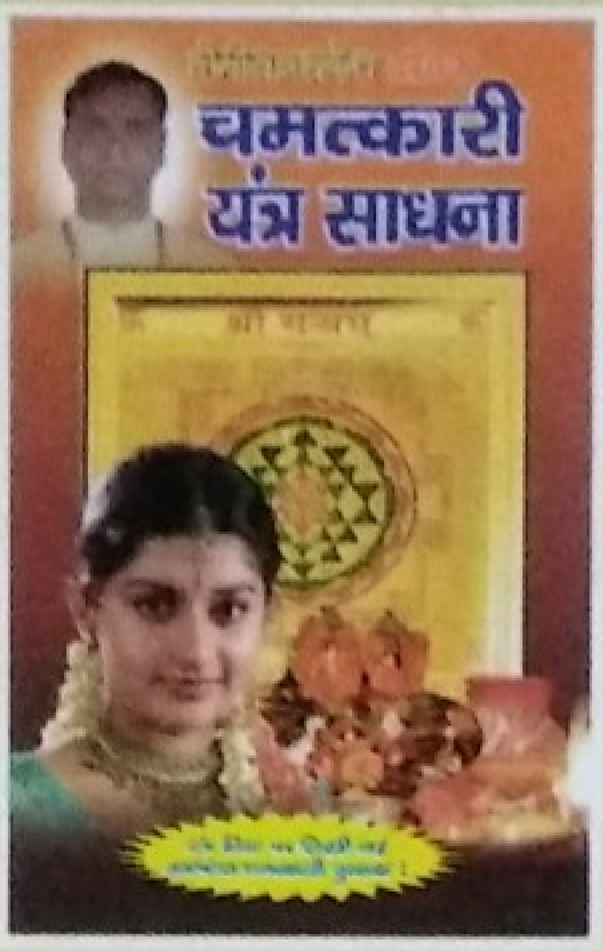
॥ मूर्च्छारोग ॥

शोधा मैनसिल, बच, लहसुन इन्हें गोमूत्र में पीस कर अंजन कर अथवा मैनसिल, महुआ, सेंधा नोन, बच, मिर्च सब बराबर ले जल में पीस अंजन करे अथवा नीलाथोथा, मैनफल, फिटकरी बराबर ले मैनफल के क्वाथ में घोटकर गर्म जल से लेवे तो विष की मूर्च्छा दूर होये अथवा श्वेत मिर्च, श्वेत बेर की मींगी, खस, नागकेशर ये सब बराबर ले रात में भिगो दे, सवेरे शर्बत कर शहद-मिश्री मिलाकर पिये तो मूर्च्छा दूर हो।

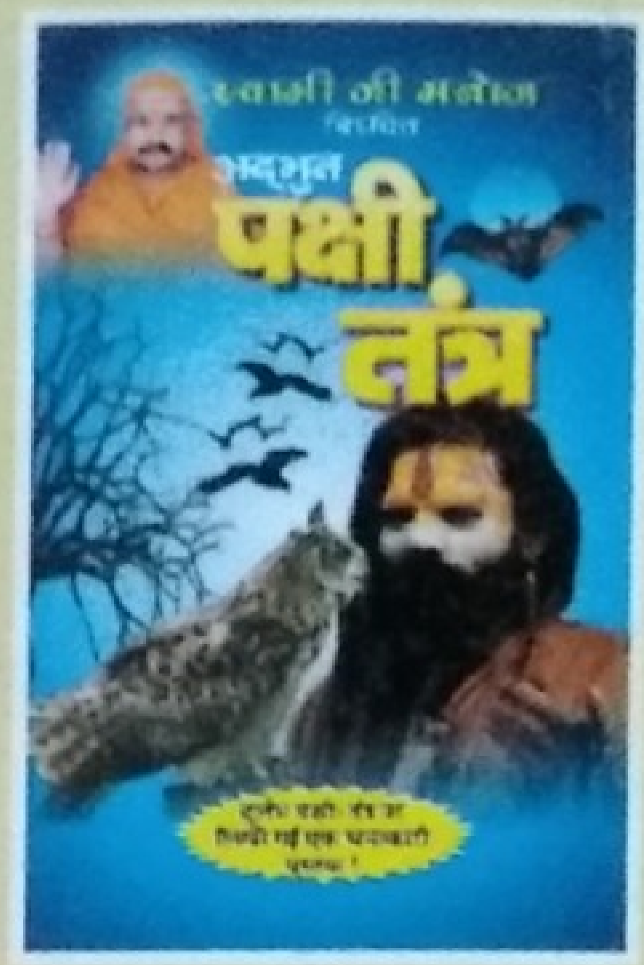
:: समाप्त ::

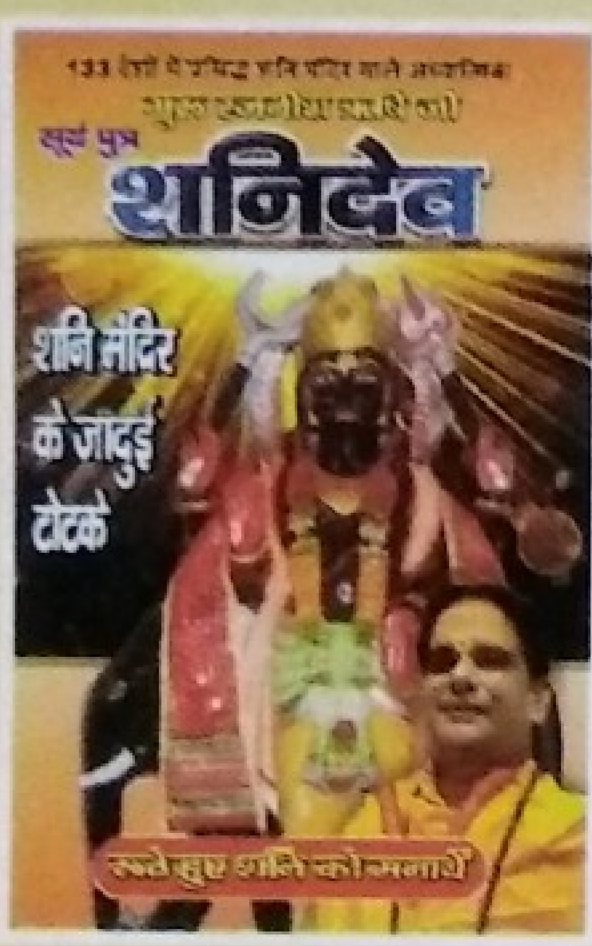
दुर्गा पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित ज्योतिष एंव तंत्र-मंत्र-यंत्र की दुर्लभ पुस्तके।



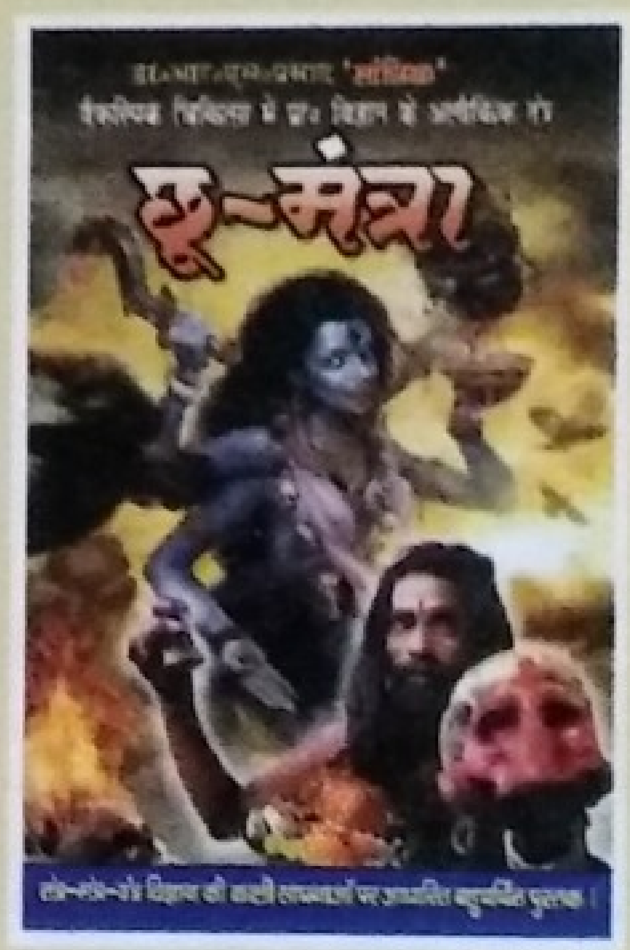




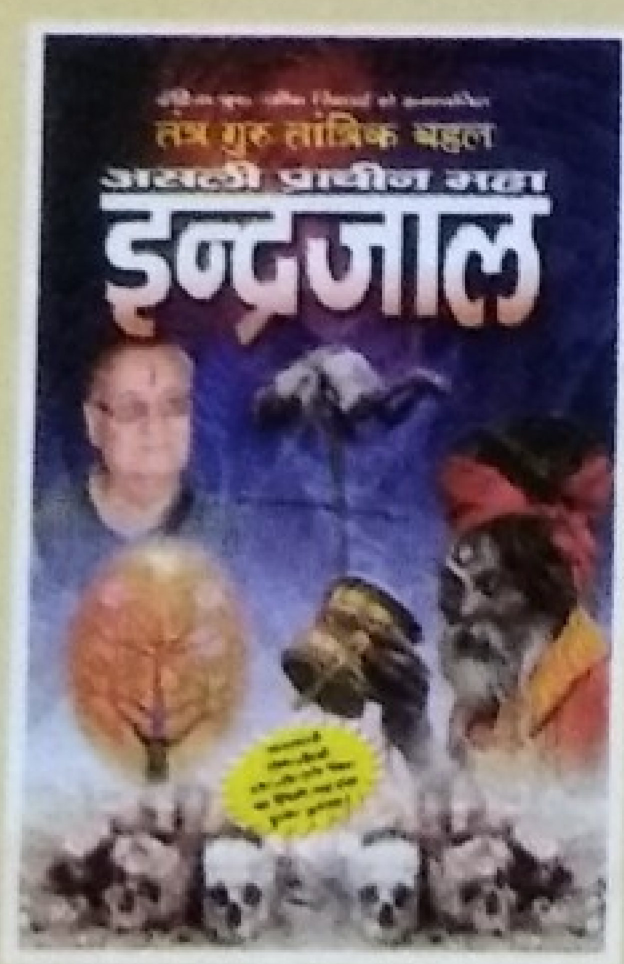




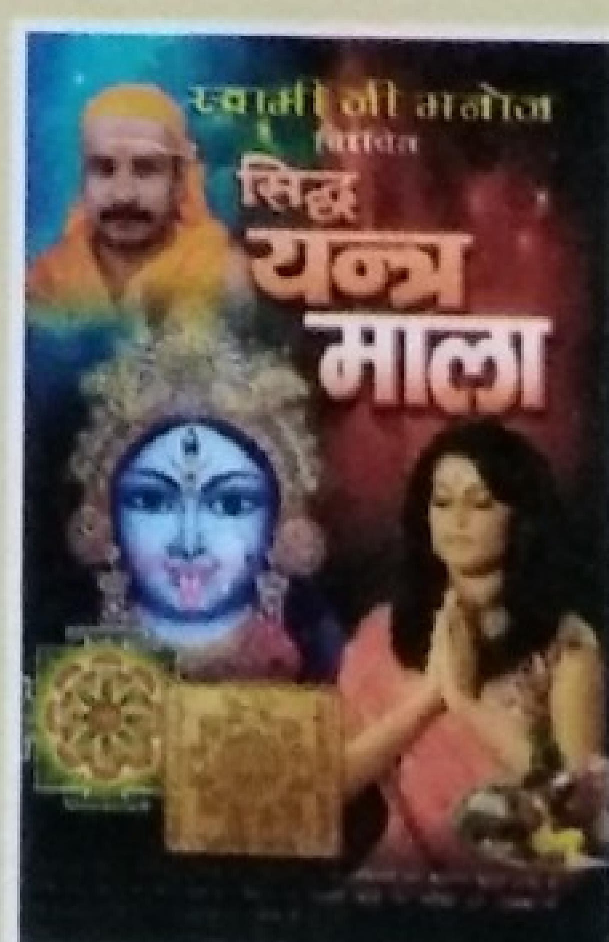














A.H.W. DURGA SERIES
ISBN 818428004-1
9788184280043
₹ 110.00

दुर्गा पॉकेट बुक्स

की शानदार प्रस्तुति

Mob. 09412205160